

ISSN : 2583-9411
(Online)

शुभोदय



अन्तरराष्ट्रीय साहित्यिक ई-पत्रिका

शरद अंक - 2025

VOLUME : 04 | ISSUE : 02

प्रकृति



शुभम् साहित्य, कला एवं संस्कृति संस्थान (रजि.) गुलावठी (बुलन्दशहर) उ.प्र. भारत





साहित्यिक ई-पत्रिका
ईमेल: shubhodayashubham@gmail.com

शरद अंक - 2025

ISSN: 2583-9411(Online)
Volume:04 * Issue: 02

संरक्षक

प्रोफेसर महावीर सरन जैन
पूर्व निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,
भारत सरकार

प्रधान संपादक
डॉ. देवकीनन्दन शर्मा
मोबाइल - 9837573250

संपादक
डॉ. ईश्वर सिंह
मोबाइल - 9899137354

सह संपादक
मुकेश निर्विकार
डॉ. नीलम गर्ग
डॉ. ब्रजराज यादव
डॉ. राजकुमार वर्मा (तकनीकी)

प्रस्तुति
'शुभम्'
साहित्य, कला एवं संस्कृति संस्थान (पंजीकृत)
गुलावठी (बुलन्दशहर), उत्तर प्रदेश, भारत

डिज़ाइन
त्रिगुण कुमार झा
मो. : 9810679648

‘शुभोदय’ अनुक्रमणिका

1. सरस्वती वंदना	5	13. डॉ. अंजु दुआ जैमिनी	45
2. प्रधान संपादक की कलम से	6	14. डॉ. पुष्पा रानी गर्ग	46
3. संपादक की कलम से	7	15. ऋषभ शुक्ला	47
4. साक्षात्कार	8	16. डॉ. शिखा कौशिक	48
लेख /हास्य-व्यंग्य/संस्मरण		17. निशांत शर्मा	49
1. प्रो. महावीर सरन जैन	14	18. डॉ. देवकी नंदन शर्मा	50
2. अरविंद ‘विदेह	17	19. डॉ. ईश्वर सिंह तेवतिया	51
3. डॉ. भावना तिवारी	21	कहानी / लघु कथा	
4. डॉ. मधु मिश्रा	24	1. विपिन जैन	52
5. बी एल आच्छा	25	2. डॉ. दप्रभाकर जोशी	55
6. डॉ. वेद 'व्यथित'	26	3. पूनम सुभाष	57
7. सुरेश चंद शर्मा	28	4. गीता रस्तोगी 'गीतांजलि'	59
8. राकेश वामन्या	29	5. मनीषा जोशी मणि	61
कविता/ गीत / गङ्गल		पुस्तक समीक्षा	
1. डॉ केशव कल्पांत	33	1. विदर्भ कुमार	63
2. डॉ. गंगा प्रसाद यादव 'आत्रेय'	34	2. सविता स्याल	64
3. नेहा वैद	35	3. डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय	67
4. योगेंद्र कुमार	36	साहित्यिक हलचल / विरासत / अन्य	
5. डॉ. उपासना दीक्षित	37	1. साहित्यिक हलचल	69
6. डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'राज'	38	2. शुभम् सम्मान 2025	71
7. डॉ. भावना कुंअर	39	3. विरासत	72
8. अलका शर्मा	40	4. श्रद्धांजलि—स्मृतिशेष कमल किशोर गोयनका	73
9. शिवानंद सिंह 'सहयोगी'	41	5. नियम	74
10. पूर्णिमा संघी बंसल 'इमा'	42		
11. डॉ. शारदा प्रसाद	43		
12. वंदना कुँअर रायजादा	44		



वर दे...



वर दे, वीणावादिनि वर दे,
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे !

काट अंध-उर के बंधन-स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे,
वर दे, वीणावादिनि वर दे,
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे !

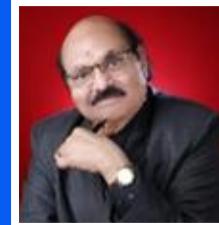
नव गति, नव लय, ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृद्ध को,
नव पर, नव स्वर दे,
वर दे, वीणावादिनि वर दे,
वर दे, वीणावादिनि वर दे,
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे !

- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'नियाला'



संचेतना का अभिनव फलक

प्रधान संपादक
की कलम से



साहित्य सार्वभौमिक सत्ता है। यह कथन जितना सत्य है उतना ही यह भी सत्य है कि साहित्य पर संबंद्ध देश एवं समाज की सांस्कृतिक परंपराओं तथा जीवन मूल्यों की गहरी छाप होती है। इस दृष्टि से भारतीय साहित्य की अपनी विशिष्ट विशिष्टता है। यह अपनी सामाजिक संस्कृति, गंगा-जमुनी तहजीब, अहिंसा परमो धर्मः, आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम् जैसी अद्भुत अभिवृत्तियों के लिए विश्व में पहचाना जाता है। मनुष्य मनुष्येतर का सह-अस्तित्व, प्रकृति से मैत्री, स्त्री-गौरव, पुरुषार्थ चतुष्पद्य युक्त जीवन-बोध तथा समन्वयात्मकता आदि से संबलित होकर, यह अपनी भारतीय परंपरा के लिए विरस्मरणीय है। इसलिए मोहम्मद इकबाल को गुनगुनाना पड़ा-

‘सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा’

यह कहना भी प्रासंगिक है कि आए दिन पश्चिम से आयातित आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, लिंगवाद, अस्तित्ववाद, विखंडनबाद जैसे विमर्शों के कारण हमारे देश और समाज में तनाव, आपसी विद्रेष, संघर्ष और हिंसा की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ती जा रही है। ऐसी स्थिति में सबको एक रागात्मक सूत्र में बांधने वाली समन्वयात्मक समावेशी अंतःग्रथित भारतीय परंपरा का महत्व साहित्य और जीवन में अत्यधिक बढ़ जाता है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय लेखक व बुद्धिजीवी भारतीय परंपरा के वैशिष्ट्य को समझें तथा सदियों से भारतीय चित्त, मन और प्रज्ञा को संचालित करने वाली वाले संस्कारों, आस्थाओं से निर्मित जीवन बोध को आत्मसात करते हुए साहित्य सृजन करें।

‘शुभोदय’ इसी भावना और कामना का प्रबल पोषक है। अपनी 4 वर्षीय लघु यात्रा में इसके विद्वान लेखकों और जिज्ञासु पाठकों ने हमारा मनोबल बढ़ाया है, सुपरिणाम हमारे समक्ष है, प्रत्येक अंक का बढ़ता लेखक और पाठकीय आधार। विश्वास है शुभोदय का यह नवाक शरद 2025 भी आपको, आपकी संचेतना को अभिनव फलक देगा।

कोटि: अभिनंदन!

कोटि: वंदन!!

‘श्रीमत्कुंज विहारिणे नमः’

श्रीविजयदशमी

2 अक्टूबर 2025

डॉ. देवकी नंदन शर्मा

प्रधान संपादक



संपादक की कलम से

कलम की बढ़ती जिम्मेदारी

कलम के सिपाही, मुंशी प्रेमचंद ने कहा है कि 'साहित्य हृदय को संस्कारित करने, जीवन की सच्चाइयों को उजागर करने और समाज में सुधार लाने का माध्यम है'। ऐसा साहित्य जो अपने समय में व्याप्त बुराइयों को उजागर करने और समाज को सही दिशा देने में विफल रहता है, साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

आज जब प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन हो रहा है तब उससे कहीं बड़े अनुपात में समाज में तनाव, रिश्तों में दुराव और परिवारों में अलगाव बढ़ रहा है। आज विश्व एक साथ कई-कई युद्धों का दंश झेल रहा है और आम आदमी पूरे विश्व में नए-नए समीकरण बनते हुए देख रहा है। विभिन्न राष्ट्र, टैरिफ और किस्म - किस्म के प्रतिबंधों के द्वारा भौगोलिक और वित्तीय विस्तारवाद को हवा दे रहे हैं। अपने देश में राजनीति आम आदमी की साम्प्रदायिक और जातिगत भावनाओं को भड़काकर राजनीतिक लक्ष्यों को साधने पर लगी हुई है। ऐसे में साहित्य और कला पर राष्ट्रीय, सामाजिक, पारिवारिक, मानवीय और नैतिक मूल्यों को बचाने का दायित्व पहले से अधिक आ गया है। इसलिए साहित्यकार या कलाकार को किसी प्रकार के सजून के समय इस जिम्मेदारी को मन-मस्तिष्क में रखना होगा, तभी वे समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर सकेंगे।

'शुभोदय' का 2025 को 'शरद अंक' आपके हाथों में है। मुझे आशा है कि इसकी रचनाएं आपको अपनी गुणवत्ता से प्रभावित करेंगी। हमारे पाठक, रचनाकार और शुभचिंतक हमारी शक्ति हैं जो अपने योगदान, मार्गदर्शन और अभिमत से इस पत्रिका को निरंतर बेहतर बना रहे हैं। अपने संरक्षक समृतिशेष डॉ. कमल किशोर गोयनका के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए मैं 'शुभोदय' के संरक्षक, प्रो. महावीर सरन जैन के प्रति उनके सतत् मार्गदर्शन के लिए तथा संपादक मंडल के सदस्यों के प्रति उनके सहयोग के लिए हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ। हमें पाठकों के अभिमत की प्रतीक्षा रहेगी :

सादर,

डॉ. ईश्वर सिंह
संपादक



वरिष्ठ नवगीत कवि डॉ. सुभाष वसिष्ठ से साक्षात्कार

साक्षात्कारकर्ता -
डॉ. ईश्वर सिंह

डॉ. ईश्वर सिंह: आपके लेखन-जीवन में वह कौन-सा सृजन-क्षण निर्णायक सिद्ध हुआ जिसने आपको पारम्परिक गीत से नवगीत की ओर उन्मुख किया?

डॉ. सुभाष वसिष्ठ: अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के दौरान 1968-69 के वर्ष, मेरी सृजन यात्रा में संक्रान्तिकाल या परिवर्तनकारी रहे। मैं तब हरदुआगंज (ननिहाल) में रहता था। मेरे ममेरे बड़े भाई आद. कीर्तिशेष आनन्द बल्लभ शर्मा, जो पीएच.डी. कर रहे थे, से हर रोज़ किसी नये साहित्यिक विन्दु पर बातचीत होती थी। वहसनुमा भी। उससे पूर्व बचपन से ही, मेरे बाबूजी कीर्तिशेष विद्या सागर वसिष्ठ जी के गीतों से उत्प्रेरित, मुझ को, गोपालदास नीरज, भारतभूषण और मधुर शास्त्री के गीत मेरे ग्राहक मन को बाँधते थे। इस दौरान जब मैंने सोम ठाकुर का एक गीत “खिड़की पर आँख लगी देहरी पर कान...” सुना तो मेरे ग्राहक मन से लेकर सृजन चेतना तक मैं एक अलग प्रकार की लहर का संतरण हुआ, जिसमें ऐसा उद्वेलन था जो मुझे इस गीत की ओर सबलता से खींच रहा था। क्योंकि यह गीत बार-बार मेरी चेतना में गूँजा करता था। इस क्रम में मैंने अलीगढ़ युनिवर्सिटी की एक गोष्ठी में डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, जो मेरे प्रोफेसर भी थे, के गीत “हिरण्य आँखें बड़ी बड़ी/हरतीं कस्तूरी का फूल” का सस्वर पाठ उनके मुख से साक्षात् सुना और मैं मंत्रमुद्ध-सा होकर रह गया। यह गीत भी मेरे भीतर की चेतना पर गूँजने लगा। संयोग से रेडियो से वीरेन्द्र मिश्र के गीत भी सुनने को मिले। विशेष बात यह है कि ऊपर उल्लिखित गीतों की प्रस्तुति सस्वर रही थी। मोह लेने वाली।

मेरा पहला प्यार बचपन से ही संगीत रहा है। मोहक स्वरों के साथ-साथ अलग प्रकार की छन्द



संरचना, अलग प्रकार के शिल्प ने मेरी सृजन-चेतना में बेचैनी पैदा कर दी, जो नवीन दिशा की ओर करवट लेने के लिए उत्सुक हो गयी। इसे ही मैं वह निर्णायक-समय-विन्दु मान सकता हूँ जो मुझे गीत से नवगीत की ओर अग्रसर करने लगा। 1969 के मध्य एक प्रेमगीत उभरा जिसे सोम ठाकुर जी ने हरदुआगंज के एक कवि-सम्मेलन के दौरान सुनकर बाद में कहा था -- “हमारे पीछे भी कोई है”।

ई.सिं. : आपकी रचनात्मकता के उद्भव-स्रोत क्या हैं और किन जीवनानुभवों से आपके नवगीत का सम्बद्धन संसार निर्मित होता है?

सु.व. : गीत मूलतः गेय कविता है। छान्दिक कविता। तो, गीत की रचनात्मकता के संदर्भ में, निजी स्तर पर प्रकृति-प्रदत्त स्वाभाविक प्रेम प्रायः ही प्रथमतः अस्तित्व में आता है। लेकिन मुझ में यह ‘निज’ तक ही सीमित नहीं रहता ‘पर’ तक पहुँचता है। आप यों भी कह सकते हैं कि सोशल कन्सर्वेशन अथवा समाज से लगाव-जुड़ाव और उसके प्रति चिन्ताएँ स्वतः मेरी रचनात्मकता का स्रोत बन जाती हैं।

अपेक्षाकृत अधिक सम्बद्धनशील होने के कारण मेरे स्वयं का अनुभव तो अनुभूति....गहरी



अनुभूति में अन्तरित हो ही जाता है, किसी अन्य के कष्ट आदि का अनुभव भी मेरी चेतना में गहरी अनुभूति के रूप में अवस्थित हो जाता है। बहुत बार अनुभूत अनुभूति प्रत्यक्षतः मेरी चेतना का हिस्सा होती है। साथ ही सम्वेदनात्मक अनुभूति भी गहराई के साथ मुझमें उत्तरती चली जाती है। कल्पना-जन्य अनुभूति भी स्वाभाविक आवश्यकता के अनुसार अनुभूत अनुभूति का रूप ग्रहण कर लेती है। बहुधा अनुभूति या/और सम्वेदनात्मक अनुभूति या/और कल्पना-जन्य अनुभूति एक विलयन (फ्लूज़न) के तौर पर मेरी अन्तर्श्वेतना में अवस्थित हो जाती है। यह सहज प्रक्रिया मेरी प्रकृति का हिस्सा है।

यह भी बताना चाहूँगा आपको कि निजी भावनाओं के अतिरिक्त, शुरू से ही जब भी कभी किसी 'तकलीफशुदा व्यक्ति' को देखता हूँ, तो मैं एक पृथक् प्रकार के विशेष अनुभव से गुज़रने लगता हूँ, जो बहुधा गहरे उत्तरकर अनुभूति में तब्दील हो जाता है।

इस बिन्दु का उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि मेरी सम्वेदना के लिए यह 'व्यक्ति' किसी भी प्रकार के पूर्वग्रह से रहित होता है। मेरी चेतना में, सम्वेदना, प्रायः ही, प्रमुख रहती है और विचार सम्वेदना का अनुगमन करता है। कभी-कभी साथ-साथ भी।

ई.सि.: आपकी दृष्टि में नवगीत का शिल्पगत वैशिष्ट्य पारम्परिक गीतों से किस प्रकार भिन्न होकर एक नई काव्य-भूमि रचता है?

सु.व. : सबसे पहली बात तो यह है कि नवगीत भी पहले गीत ही है। लेकिन, समय, गति और नवता की चेतना की माँग के अनुसार उसमें परिवर्तन व संशोधन अवश्य हुए हैं और वह इसी कारण से नवगीत के रूप में उभरकर सामने आया है।

पारम्परिक गीत में छन्द का आकार प्रायः बड़ा मिलता है। रबर की तरह वह खिँचता चला जाता है। ध्रुव पंक्ति या सुखड़ा के अनुसार टेक की पंक्तियों के तुकान्त जब तक समाप्त नहीं हो जाते छन्द विस्तार पाता रहता है। ऐसा प्रतीत

होता है कि चरण या बन्ध बीच में मात्र भरपाई कर रहे हों। यहाँ तक है कि किसी लम्बे पारम्परिक गीत में से एक या दो बन्ध टेक सहित निकाल दिये जायें तो, तब भी वह गीत, वही गीत बना रह सकता है।

नवगीत में छन्द पारम्परिक गीत के छन्द की तरह पूर्व निर्धारित सा न होकर कथ्य, अपेक्षित शिल्प और अभिव्यक्ति की दृष्टि से आकार ग्रहण करता है। इस क्रम में दो ध्रुव पंक्तियों के नियम या आवश्यकता को भी भंग कर सकता है। चरण/बन्ध की संरचना में भी पारम्परिक नियमबद्धता को तोड़कर नये छन्द को आकार देता है, जिसमें आने वाली पंक्तियों अथवा शब्दों का क्रम, पारम्परिक क्रम से भिन्न कथ्य की माँग के अनुसार नवता को ग्रहण कर, रखा जा सकता है। नवगीत में छन्द का आकार छोटा हुआ है। बहुत से नवगीत मात्र एक ही चरण के मिलते हैं। पारम्परिक गीत में, भाषा अपेक्षाकृत सरल है। शब्द प्रयोग किन्हीं सीमा तक छायावाद अथवा या और छायावादोत्तर जैसे प्रतीत होते हैं, जिनमें बदलते समय की दृष्टि से स्पष्टतः बासीपन झलकता है।

नवगीत की भाषा सहज रहती है। यहाँ मैं एक बात बता दूँ कि सहज का अर्थ सरल नहीं होता। नवगीत की भाषा में, छायावाद और छायावादोत्तर गीतों के शब्द प्रयोगों से भिन्न, उनके प्रयोगों में समय के बदलाव के साथ नवीनता आयी है।

पारम्परिक गीत में, अभिव्यक्ति प्रायः सपाट कथन होकर रह जाती है। इस क्रम में लम्बे-लम्बे गीत प्रायः ही कथ्य की पुनरावृत्ति का शिकार हो जाते रहे हैं। नवगीत के सृजन की अभिव्यक्ति में सूक्ष्मता और पैनापन आया है। टटके और जीवन्त विम्ब एक विशेष विशेषता के रूप में उभरकर आये हैं। इसके अतिरिक्त अभिव्यक्ति के लिए नवगीत में प्रतीकों के प्रयोगों को भी सान्द्रता की दृष्टि से और सार्थकता के साथ अपनाया गया है। पारम्परिक गीत में सभी दृष्टियों से उसके ढाँचे



को विनिर्माण के रूप में खड़ा किया जाता है, जिसे एक प्रकार से कृत्रिम ही कहा जा सकता है, जबकि नवगीत अपनी संरचना में सहज होता है। नवगीत में, नवगीत की संरचना में छन्द के भिन्न प्रकार से टूटकर संरचित होने के बावजूद लय नहीं टूटती है। लय सर्वत्र बने रहना नवगीत की एक अन्य विशेषता है।

ई.सिं. नवगीत-लेखन में छन्द, लय और भाव की त्रयी के मध्य संतुलन साधने की प्रक्रिया को आप किस रूप में अनुभव करते हैं?

सु.व. : मैंने आपको पहले बताया है कि बहुधा अनुभूति या/और सम्वेदनात्मक अनुभूति या/और कल्पना-जन्य अनुभूति एक विलयन (फ्लूजन) के तौर पर मेरी अन्तश्चेतना में अवस्थित हो जाती है। यह सहज प्रक्रिया मेरी प्रकृति का हिस्सा है।

तो यही अनुभूति, जो अनुभूत अनुभूति में आकर अवस्थित हो जाती है, सुर, लय, ताल -- संगीत -- को जीते हुए, स्वतः उद्भूत धून के अनुसार व उसके ऊपर, आरूढ़ होकर, मेरे अर्जित शब्दकोश में से उपलब्ध शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाती है।....और अवतरित होता जाता है या हो जाता है मुझमें....मेरी अन्तश्चेतना में....सृजन चेतना में....गीत...नवगीत।

अनुभूति निहित, निज या पर सम्बद्ध कथ्य के अनुसार, धून स्वतः सृजित हो आ बैठती है मेरे सृजनबोध....सृजन अस्तित्व में।

गीत का छन्द क्रमशः स्वतः आकार ग्रहण करने लगता है। छन्द प्रायः पूर्व निर्धारित नहीं होता।

नवता की स्वतः न्यस्त या अर्जित चेतना अपने अवयवों सहित मेरी सृजन चेतना का हिस्सा हो जाती है। फिर चाहे छन्द हो या उसका गठन अथवा गीत का मुखड़ा, चरण, टेक-पंक्ति, यति, गति आदि। शब्दों का उपयुक्त चयन, आवश्यकतानुसार उनके गठन में परिवर्तन, अथवा और उनके प्रयोग....नवीन भी....., स्वतः मेरी चेतना में न्यस्त हो जाते हैं और विशेष क्षण में अथवा समयांश में सहज रूप में अभिव्यक्ति पाते हैं।

आपने साधने की बात कही है। साधना मेरे लिए दो स्तरों पर है।

एक तो वह है जिसमें मेरी सृजन चेतना अपने एकांत में भाव या कथ्य में डूब जाती है अथवा डूबी रहती है...भाव बिन्दु को जीते हुए...अपने वृत्त में...उसकी गूँज और अनुगूँज को अन्तस में उतारते हुए। लहरों के आलोड़न-विलोड़न के विमर्शों की पर्ती से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष मुठभेड़ करते हुए...!

दूसरा वह है, जिसमें -- छन्द का चयन और उसके गठन, गीत के मुखड़े, बन्ध या चरण, टेक हेतु तुकान्त, गति, यति, कथ्य के अनुसार शब्द चयन, उनके प्रयोग...नवीन भी, विम्बों की सजीवता, प्रतीकों की सार्थकता, क्रियापदों का समुचित प्रयोग, पूरे गीत में सर्वनाम या विशेषण आदि का क्रियापद के अनुसार उपयुक्त प्रयोग -- का सर्वाधिक उपयुक्त सन्तुलन बनाये रखना है। ...सर्वाधिक इसलिए, क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि सृजन के लिए सृजेता को सृजन या आप कहें नवीन सृजन के लिए केवल एक ही अवसर मिलता है। इसलिए, उसे अपना सर्वोत्तम देना होता है या देना चाहिए। यह प्रक्रिया मुझमें क्रमशः सृजन प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा हो गई है।

यहाँ मैं इस बात को फिर रेखांकित करना चाहूँगा कि मेरी चेतना में सम्वेदना अपेक्षाकृत सहज और अधिक सबल होकर अस्तित्व में आती है। इसलिए रचना में सम्वेदना प्रायः प्रमुख रहती है। विचार सम्वेदना का अनुगमन करता है।

यहाँ इस बिन्दु को भी रेखांकित करना अप्रासंगिक नहीं होगा सम्वेदना या विचार अथवा दोनों ही के साथ जब भी मेरा जुड़ाव किसी भी मनुष्य से होता है तो वर्ण, धर्म, जाति, देश, काल आदि की सीमाओं से परे होता है। ...संकुचित सोच से मुक्त! ...मनुष्यधर्म!

ई.सिं. : अतीत के गीतकारों से आपका सृजनात्मक संवाद किस प्रकार प्रस्थापित होता है और उनके काव्य से आपने कौन-से मूल्य आत्मसात किए हैं?



सु.व. : अतीत तो बहुत दूर तक जाता है। उसको समेटना अपने आप में एक पृथक् इंटरव्यू की माँग करता है। आपका आशय यदि मुझसे पूर्व के नवगीतकारों से है तो, मैं यह कहना चाहूँगा कि मेरी नवगीत सृजन चेतना के अपेक्षाकृत अधिक निकट सोम ठाकुर, डॉ.रवीन्द्र भ्रमर, वीरेन्द्र मिश्र, डॉ.माहेश्वर तिवारी, डॉ.ओम प्रभाकर, बालस्वरूप राही, रमेश रंजक, देवेन्द्र शर्मा इन्द्र, आनन्द बल्लभ शर्मा जैसे नवगीत कवि रहे हैं। इन उल्लिखित कवियों के गीत मुझे बहुत अच्छे लगते रहे हैं, लेकिन उनसे प्रभावित होकर वैसी ही गीत-संरचना में मेरा संलग्न होना नहीं रहा है। आप यों भी कह सकते हैं कि मेरी राह अलग और मेरी अपनी ही रही है।

ई.सिं. : समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य आपके नवगीतों में किस रूप में अभिव्यक्त होकर प्रतिध्वनित होता है?

सु.व. : आजकल समकालीन शब्द का प्रयोग काफी प्रचलन में है। छन्दमुक्त कविता से लेकर नवगीत तक में। समकालीन शब्द मुझे भ्रामक अर्थ प्रदान करने वाला लगता है, क्योंकि, इसमें कहीं काल सुनिश्चित नहीं रहता और इसी कारण आकलन करते हुए लोगबाग कहीं से कहीं तक की रचनाओं को समकालीन संज्ञा प्रदान कर देते हैं।

मेरी सृजनात्मक चेतना, कविता को, पत्रकारीय बना देना पसन्द नहीं करती। उससे परहेज़ करती है। इस नाते जहाँ तक राजनीति का सवाल है मेरे गीतों में वह सीधे व्यक्त कहीं नहीं हुई है। हाँ, अपेक्षित स्थलों पर अभिव्यक्ति परोक्ष रहकर टिप्पणी करती है।

राजनीति से जुड़ी हुई सत्ता और व्यवस्था के सामान्य मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभावों को अवश्य मेरे गीतों में अभिव्यक्ति मिली है, पूरी सार्थकता के साथ।

समाज के विभिन्न वर्गों और उनकी शोचनीय स्थितियों की अभिव्यक्ति प्रायः ही मेरे गीतों में मिल जाती है। नगर के मध्य वर्ग का सामान्य व्यक्ति जिस प्रकार से सत्ता और व्यवस्था की

कारगुजारियों के कारण उत्पन्न विषम स्थितियों से घिरता और उनसे जूझता है, उसकी सम्बेदनात्मक विचारपरक अभिव्यक्ति मेरे गीतों में शिद्धत के साथ मिलती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि ग्राम, ग्रामीण और उनकी स्थितियों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। समयानुसार उनके उभार भी मेरे गीतों में मिलते हैं। इतना ही नहीं, कोरोना का प्रभाव का अंकन भी मेरे गीतों में मिलता है।

देखिए, संस्कृति शब्द का प्रयोग, हम और आप, कल्वर के रूप में करते हैं। कल्वर शब्द के लिए संस्कृति शब्द का प्रयोग सबसे पहले कवीन्द्र, रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने किया था। यह जानकारी मुझे डॉ.नामवर सिंह के, अलीगढ़ में जनवादी लेखक संघ के कार्यक्रम में दिये गए एक व्याख्यान में उल्लिखित किये जाने से प्राप्त हुई थी। तो इस दृष्टि से कल्वरल या सांस्कृतिक परिदृश्य मेरे गीतों में संकीर्णता के साथ लगभग नहीं मिलता है, हाँ, उसका, हमारे भी, एक संस्कृति होने के लिहाज़ से, अवश्य अपने विस्तारित रूप में मिलता है।

ई.सिं. : बदलते समय में पाठक और श्रोता-समाज की रुचि और सम्बेदना के बीच नवगीत की प्रासंगिकता को आप किस प्रकार स्थापित होते देखते हैं?

सु.व. : इसमें कोई सन्देह नहीं कि कविता और उसमें भी गीत और उसमें भी नवगीत के पाठक की रुचियाँ बदली हैं। अजेय के 'तारससक' (1943) के बाद से ही कविता के छन्दमुक्त स्वरूप के प्रति पाठक का रुद्धान क्रमशः बढ़ता गया था। छन्दमुक्त कविता के स्वरूप के बदलने के बावजूद पाठक का रुद्धान कम नहीं बल्कि अधिक होता गया। गीत के सामान्य पाठक अपेक्षाकृत कम हुए। लेकिन गीत के बदलाव और नवगीत के उभार के साथ गीत के प्रति पत्र-पत्रिकाओं में बखूबी सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। जहाँ तक प्रासंगिकता का प्रश्न है नवगीत अपने अर्थवान और समावेशी कथ्य और अलग तथा मोहक रूपबन्ध, शिल्प और अभिव्यक्ति के कारण, विभिन्न प्रकार के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उपेक्षा और प्रहारों के बावजूद प्रासंगिक था, है और आशा है।



आगे भी बना रहेगा।

ई.सिं.: मंचीय परम्परा और डिजिटल माध्यम-इन दोनों के बीच नवगीत की प्रस्तुति और उसकी ग्रहणशीलता के स्वरूप में आपको क्या मूलभूत अन्तर दिखाई देता है?

सु.व. : आपका मंचीय परम्परा से तात्पर्य शायद कवि-सम्मेलन से है। इसके बारे में यही कहा जा सकता है कि एक समय था जब कवि-सम्मेलनों के मंच पर महादेवी वर्मा और निराला ने भी काव्य पाठ किया है, अन्य कई छायावादोत्तर गीत कवियों के अलावा। लेकिन बाद में चलकर जब डॉ. हरिवंशराय बद्धन की 'मधुशाला' मंच पर आयी, तो मधुशाला की लोकप्रियता और कवि-सम्मेलनों में माँग के चलते, उनके भी गीत पीछे छूट गये। क्रमशः मंच पर गोपाल सिंह नेपाली, गोपालदास नीरज, रमानाथ अवस्थी आदि जैसे लोकप्रिय गीतकारों के बावजूद, श्रोताओं की रुचियाँ बदलकर मनोरंजनधर्मा होती चली गयीं। गीत अपेक्षाकृत पीछे होता रहा और तथाकथित वीर रस, हास्य रस आदि की कविताएँ आगे आती रहीं। चुटकलों तक।

कवि-सम्मेलनी मंचों पर नवगीत की दृष्टि से सोम ठाकुर, डॉ. माहेश्वर तिवारी, मुकुटविहारी सरोज, वीरेन्द्र मिश्र, शान्ति सुमन, डॉ. शम्भुनाथ सिंह, डॉ. रवीन्द्र भ्रमर, किशन सरोज, कैलाश गौतम आदि कुछ ऐसे नवगीत कवि रहे हैं जिन्होंने कवि-सम्मेलनी मंचों पर भी नवगीत का परचम लहराया है।

बहुत सारे नवगीत कवि और नवगीत के समर्थक कवि-सम्मेलनों के प्रति नफरत की हद तक अरुचि रखते हैं। मैं इसे समुचित नहीं मानता। कारण यह है कि कवि-सम्मेलनों में श्रोताओं की संख्या बहुत होती है और लोकप्रियता की दृष्टि से कवि-सम्मेलनों के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसलिए यथा सम्भव अपने नवगीत को, कवि-गोष्ठियों के साथ-साथ, कवि-सम्मेलनों के मंचों के माध्यम से अधिक से अधिक श्रोताओं तक पहुँचाने से परहेज़ नहीं करना चाहिए। हाँ, आत्म-सम्मान के साथ-साथ।

डिजिटल माध्यम से अपने नवगीत को अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुँचाने की दृष्टि से यह क्रिया काफी हद तक इकतरफा है। आप चाहें तो उत्तर दें और न चाहें तो न दें। कवि-गोष्ठी और कवि-सम्मेलन में कवि की प्रस्तुति की प्रतिक्रिया तत्काल मिल जाती है। इस अर्थ में यह दु-तरफा है।

डिजिटल माध्यम में, कुछ लोग गीत, नवगीत या साहित्य के व्हाट्सएप-ग्रुप चलाते हैं। यह अधिकतर ग्रुप-संचालक के स्वयं के लाभ, स्थापना और वर्चस्व के लिए होता है, नवगीत या साहित्य की सेवा के लिए बहुधा नहीं। उसमें रचना पर सार्थक चर्चा प्रायः कम होती देखी गयी है और रचना को पसन्द करने जैसी वाह-वाह प्रतिक्रियाएँ अधिक।

ई.सिं.: एक नवगीतकार के रूप में सृजन, प्रकाशन और आलोचना-तीनों ही स्तरों पर आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

सु.व. : जहाँ तक सृजन का प्रश्न है उसके बारे में पूर्व के प्रश्नों में बता चुका हूँ।

1970 के आसपास जब मैं नवगीत की ओर बढ़ा तो प्रकाशन की दृष्टि से सभी पत्र-पत्रिकाओं में गीत भेजो। धर्मयुग, सासाहिक हिन्दुस्तान आदि लगभग सभी पत्रिकाओं ने छापा। शायद दो-तीन जगह से गीत वापस भी आये थे। रेडियो पर भी मेरे गीत प्रसारित होते रहे। दूरदर्शन पर भी।...अब तो यूट्यूब पर भी कई सारे गीत आपको मिल जायेंगे। संयोग से पुस्तक प्रकाशन के लिए भी मुझे अधिक परेशानी नहीं उठानी पड़ी।

मैं गीत सिरजता हूँ। मेरी गति मन्थर है। जी कर या डूब कर सिरजना मुझे अधिक भाता है...सिरजता हूँ। पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं। संग्रह छपता है। प्रकाशक बेचते हैं। कुछ मित्रों को मैं भी भेज देता हूँ। कुछ उन्हें ध्यान में लेकर उस पर समीक्षा लिख देते हैं। मैं इसी में अपना संतोष कर लेता हूँ। इस हेतु मैं, प्रकृतिः, अति अतिरिक्त प्रयास नहीं कर पाता।

ई.सिं.: आपकी दृष्टि में भविष्य का नवगीत किस दिशा में विकसित होगा, और साहित्यिक परिदृश्य में उसकी सम्भावनाएँ किस रूप में उभरती हैं?

सु.व.: 1958 में प्रकाशित गीत संकलन 'गीतांगिनी' के सम्पादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा भूमिका में उल्लिखित नवगीत की विभिन्न विशेषताओं को समेटे हुए से, प्रारम्भ होकर नवगीत आज 2025 में भी अपने समय के विभिन्न आयामों को समेटकर विस्तार देते हुए गतिमान है।

दिशा पर चिनार करते हुए कभी-कभी किसी को ऐसा लग सकता है कि नवगीत पंथी अलग-अलग सोच के साथ अलग-अलग मार्गों पर हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह, रचनात्मकता की दृष्टि से, एक स्वस्थ और समृद्ध साहित्यिक परिदृश्य की निर्मिति अधिक करता है, बजाय किसी प्रकार की नकारात्मक या विघटनकारी संक्षिप्त स्थिति के उभार के। इस लिहाज़ से, मैं नवगीत के, व्यापक-प्रेम के रूप को ग्रहण करने वाले, सार्थक, पुष्ट, प्रतिरोधपरक, जनपक्षधर, हस्तक्षेपीय, और ध्यानाकर्षक स्वरूप के प्रति आशावान हूँ।

ई.सिं.: 'शुभोदय' के पाठकों और नवांकुर साहित्यकारों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

सु.व.: 'शुभोदय' के प्रिय पाठको, भारतीय कविता के प्रथम कवि महर्षि वाल्मीकि रचित महान् कृति 'रामायण' के बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में प्रस्फुटित उनके शब्द हैं --

**'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥'**

यह सम्बोधन वस्तुतः शाप है निषाद के प्रति, जिसने क्रौंच पक्षी युगल में से एक को मार दिया था और वियुक्ता क्रौंची की चीत्कार सुनकर वाल्मीकि के मुख से स्वाभाविक रूप में ये तेजोमय शब्द निकले थे कि बहेलिए! जा तुझे जीवन में कभी भी प्रतिष्ठा न मिले।

महर्षि, क्रौंची की चीत्कार सुनकर विगलित हुए, सम्वेदना जगी, करुणा में नहाये, बहेलिए के



शलत कर्म के कारण शलत के प्रति सही का क्रोध जागा... और इस सबने परोक्ष रूप में प्रेम के प्रति समर्थन का आकार ग्रहण किया। कह सकते हैं कि यह कविता करुणा, सम्वेदना, प्रतिरोध और प्रेम की कविता है। तो बस, ऐसे ही बनो, सु-शब्दजीवी!

मैं अपनी कक्षा से लेकर किसी गोष्ठी या सम्मेलन तक मैं प्रायः यह बात कहता रहा हूँ कि जितना सम्भव हो उतना कथनी और करनी के अन्तर को समाप्त करने की ईमानदार कोशिश करो। आप से भी।

साहित्य की बड़ी विशेषता यह है कि यह मनुष्य को सम्वेदनशील बनाने में महती भूमिका निभाने का उल्लेखनीय प्रयास करती है।

एक बात और मैं कहता रहा हूँ कि पूरा जीवन खपाने के बाद भी यदि मैं साहित्य-सागर की एक बूँद का करोड़वाँ हिस्सा हो जाऊँ तो मैं स्वयं को धन्य मानूँगा। तो, किसी प्रकार का दम्भ न पालो, कथनी नहीं... करनी से पहचाने जाओ, शब्द की अस्मिता को पहचान कर सम्मान दो, साहित्य से निस्वार्थ, निश्छल और सबल नाता जोड़ो, शलत के प्रति यथासम्भव यथाशक्ति प्रतिरोध को महत्व देते हुए अंगीकार करो, प्रेम को सर्वाधिक महत्व दो... निज से लेकर पर तक... बिना किसी पूर्वग्रह के प्रेम के व्यापकत्व को अपनाते हुए!



क्षमा

प्रो. महावीर सरन जैन

बुलन्दशहर -उत्तर प्रदेश मो. 9456440756

सामाजिक जीवन में राग के कारण लोभ एवं काम की तथा द्वेष के कारण क्रोध एवं बैर की वृत्तियों का संचार होता है। क्रोध के कारण संघर्ष एवं कलह का वातावरण बनता है। क्रोध में अंहकार एक उर्वरक का काम करता है। इस दृष्टि से क्रोध एवं अंहकार एक दूसरे के पूरक हैं। अंहकार से क्रोध उपजता है तथा क्रोध का अंहकार के कारण विकास होता है। क्रोध में विनय तथा समता की भावना नष्ट हो जाती है। समता की भावना का विकास होने पर अंहकार उत्पन्न नहीं होता तथा क्रोध का पौधा मुरझाने लगता है। इसका कारण यह है कि आत्मतुल्यता की चेतना से सम्पन्न व्यक्ति दूसरों के व्यवहार तथा आचरण से व्यक्तिगत-धरातल पर अशांति का अनुभव नहीं करता।

यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या क्रोध सर्वथा त्याज्य है? क्या समाज की व्यवस्था तोड़ने वाले व्यक्ति पर क्रोध नहीं करना चाहिए? व्यवस्था बनाये रखना वाले अधिकारी को क्या क्रोध नहीं करना चाहिए ? यदि अधिकारी अपराधी पर क्रोध नहीं करेगा तो सामाजिक व्यवस्था कैसे कायम रह सकती है। अपराधी को यदि समुचित दण्ड नहीं मिलेगा तो समाज में अपराध बढ़ते जायेंगे और सामाजिक व्यवस्था नष्ट हो जाएगी। सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए उचित दण्ड प्रणाली अनिवार्य है। अन्यायी एवं अनाचारी को सबक सिखाने के लिए कभी कभी उसे मृत्यु दण्ड भी मिलना चाहिए। ऐसे लोगों के प्रति यदि कोई समाज अपना आक्रोश व्यक्त करता है तो इसका स्वागत करना चाहिए। एक ओर आक्रोश और दूसरी ओर क्षमा के महत्व का प्रतिपादन। क्या ये परस्पर विरोधी नहीं हैं। उत्तर है – नहीं।

अन्याय एवं अनाचार के प्रति आक्रोश करना एक बात है

तथा अहंकार के कारण क्रोधित होना दूसरी बात है। समाज की व्यवस्था एवं नियम के विपरीत आचरण करने वाले व्यक्ति पर सामाजिक न्याय की भावना के कारण क्रोधित होने वाली मानसिकता में तथा अहंकार की भावना से उत्पन्न क्रोध की मानसिकता में अन्तर होता है, वे भिन्न होती हैं। अपने सामाजिक जीवन के दायित्व-बोध के आधार पर आचरण करने तथा क्रोध एवं अंहकार के वशीभूत आचरण करने में अन्तर है। अंहकार से क्रोधित व्यक्ति जब किसी का विनाश करना चाहता है तब वह अपना विवेक खो देता है। जब कोई व्यक्ति सामाजिक भावना से प्रेरित होकर सामाजिक विकास में वाधक बनने वाले असामाजिक एवं दुष्ट व्यक्तियों का दमन करता है तो वह अपने विवेक को कायम रखता है। वह दुष्ट व्यक्तियों का दमन इसलिए करता है जिससे सामाजिक व्यवस्था कायम रह सके। उसके मन में दुष्ट व्यक्ति को सुधारने का संकल्प होता है, उसके अस्तित्व को मिटा देने का नहीं। वह प्रतिकार इसलिए नहीं करता क्योंकि किसी के द्वारा उसका अपमान हुआ है, अपितु उसके ही सुधार एवं कल्याण के लिए वह सामाजिक दृष्टि से अन्याय करने वाले व् यक्ति का प्रतिरोध करता है।

क्रोध के अभ्यास से व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है। क्रोध से अन्धा व्यक्ति सत्य, शील एवं विनय का विनाश कर डालता है। किसी ने उसका अहित किया है या कोई उसका अहित करना चाहता है इसके अनुमान मात्र के आधार पर वह तत्क्षण क्रोधित हो जाता है। इस प्रकार सोच समझकर कार्य करने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है। इसके कारण द्वेष भाव का विकास एवं विस्तार होता है।



सम्पूर्ण जगत को वह अपना शत्रु समझने लगता है। उसके जीवन दर्शन विध्वंसात्मक हो जाता है। संघर्ष, तोड़-फोड़, विनाश, हत्या आदि उसका जीवन की प्रवृत्तियाँ हो जाती हैं। इस प्रकार जब क्रोध का विकास होता है, विस्तार होता है तो व्यक्ति की सम्पूर्ण मानवीयता एवं सामाजिकता नष्ट हो जाती है। इस स्थिति पर यदि नियन्त्रण नहीं हो पाता तो उसके अपराधी बन जाने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। गीता में कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि क्रोध से अविवेक एवं मोह होता है, मोह से स्मृति का भ्रम होता है तथा बुद्धि के नाश हो जाने से आदमी कही का नहीं रह जाता:

**क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्पृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥ (गीता, 2/ 63)**

गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन को युद्ध करने के लिए प्रेरित करते हैं, अन्याय का प्रतिकार करने के लिए बार-बार कहते हैं किन्तु दूसरी तरफ युद्ध में कूद जाने की प्रेरणा देनेवाले श्रीकृष्ण क्रोध से बचने के लिए सर्वत्र सावधान करते हैं। गहराई से विचार करने पर इस प्रतीयमान अंतर्विरोध का रहस्य इस तथ्य में निहित है कि लोकमंगल की साधना के लिए अन्याय का प्रतिकार करने तथा क्रोधित होकर दूसरे का नाश करने के लिए तत्पर होने में बहुत अन्तर है।

क्रोध का विरोधी भाव क्षमा है। क्षमा, 'क्षम्' धातु से बना है। इसके दो अर्थ हैं। एक अर्थ में क्षमा धैर्य, सहनशीलता एवं विनम्रता है और दूसरे अर्थ में क्षमा सामर्थ्य वाचक है- सहने योग्य होना अर्थात् पर्याप्ति सक्षम होना। क्षमाशील व्यक्ति धैर्यवान् एवं विनम्र होता है एवं अत्यन्त सहनशील होता है। क्षमा कायरता नहीं है। क्षमाशील व्यक्ति समर्थ एवं सक्षम होता है। दुःख पहुँचाने वाले व्यक्ति को वह प्रताड़ित कर सकता है किन्तु अपनी क्षमावृत्ति के कारण वह उस दुःख को सहन करता है, विनम्र रहता है। वह क्रोध के शान्ति के साथ जीतता है। 'ऐसा व्यक्ति कम्प रहित होकर क्रोधादि कषाय को नष्ट कर देता है - 'विगिञ्च कोहं अविकंपमाणे' (आचारांग, 4/ 3/ 135)

सामाजिक जीवन में हम कभी-कभी अज्ञानवश यह समझ बैठते हैं कि अमुक व्यक्ति के कारण हमारा अहित हुआ है। यदि हम तत्क्षण क्रोधित नहीं हो जाते अपितु धैर्य, संयम तथा शान्ति के साथ विवेकपूर्वक स्थितियों का विश्लेषण करते हैं तो बहुधा हमारे मन की भ्रांतियाँ दूर हो जाती हैं, स्थितियाँ स्पष्ट हो जाती हैं। हमारी असफलता का कारण अनेक बार हमारी अपनी ही कमजोरी होती है। यदि किसी व्यक्ति ने किसी कारणवश या अकारण ही हमारा अहित कर भी दिया है तो हमें पहले पूरी परिस्थितियों से परिचित होना चाहिए तथा हमको उस व्यक्ति के साथ धैर्यपूर्वक बातें करनी चाहिए। अपना पक्ष उसके सामने प्रस्तुत कर उसके पक्ष एवं दृष्टि से अवगत होना चाहिए। ऐसा करने पर वह व्यक्ति या तो आत्मग्लानि का अनुभव करता है अथवा उन परिस्थितियों को स्पष्ट कर देता है जिसके कारण उसने हमारा अहित किया।

क्षमा का पालने करने वाला व्यक्ति यदि कभी अन्याय का विरोध करता भी है तो भी उसका मार्ग क्रोध का मार्ग नहीं होता। अपने मन में इसी कारण वह किसी के प्रति कभी बैर नहीं बाँधता। इस प्रकार यदि उसे दुष्टता एवं अन्याय का प्रतिरोध करना पड़ता है तो भी उसके मन में किसी के प्रति शत्रुता का भाव उत्पन्न नहीं होता। यदि कभी कहीं शत्रुभाव उत्पन्न हो भी जाता है तो भी वह अपनी क्षमा वृत्ति के कारण उस भाव का शमन कर लेता है। इसी कारण गौतम बुद्ध ने कहा, 'उसने मुझे गाली दी, उसने मुझे मारा, उसने मुझे हराया, उसने मुझे लूटा, इस प्रकार की बातों को जो व्यक्ति गाँठ बाँधकर नहीं रखते उनका बैर शान्त हो जाता है

अङ्गोच्छ्व मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे।

ये तं न उपनयहन्ति वेरं तेसूपसम्मतिः॥

(धम्मपद, 1/ 4)

इस प्रकार क्रोध मन की गाँठों को बाँधता है, प्रतिकार की भावना, कठोरता, दयाहीनता एवं हिंसा आदि प्रवृत्तियों को विकसित करता है। क्षमा मन की गाँठों को खोलती है तथा दया, सहानुभूति, सन्तोष, उदारता, प्रेम, मानशून्यता एवं



वैराग्य की प्रवृत्तियों को विकसित करती है। सहनशक्ति क्षमा की धूरी है। आधुनिक युग में भारत में अरविन्द ने इसका आख्यान किया तथा गांधीजी ने सामाजिक जीवन में इसका प्रयोग किया। अरविन्द ने सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन के सन्दर्भ में कहा-'दमन की बेदनाओं को सहन करो।' अहिंसा की शक्ति का प्रतिपादन करते हुए महात्मा गांधी ने कहा कि सच्ची अहिंसा भय से नहीं, प्रेम से जन्म लेती है; निःसहायता से नहीं, सामर्थ्य से उत्पन्न होती है। जिस सहिष्णुता में क्रोध नहीं, द्वेष नहीं, निःसहायता का भाव नहीं, उसके समक्ष बड़ी से बड़ी शक्तियों को भी झुकना पड़ेगा।

क्षमा की कई कोटियाँ, अनेक रूप एवं प्रकार हैं। 'उत्तम क्षमा' मन की सहज प्रवृत्ति है। जब हम व्यक्तिगत रागद्वेष की सीमाओं से ऊपर उठ जाते हैं तथा संसार के सभी प्राणियों के प्रति मैत्री-भाव एवं आत्म-तुल्यता की प्रतीति करने लगते हैं तो क्षमा का भाव हमारे जीवन का सहज अंग बन जाता है। मध्य कोटि की क्षमा वह होती है जहाँ हम आत्मतुल्यता की भावना से प्रेरित होकर नहीं अपितु उपेक्षा-भाव से प्रेरित होकर दूसरों को क्षमा करते हैं। जब हम मन की सहज भावना से नहीं अपितु किसी स्वार्थ से प्रेरित होकर अथवा भय की भावना के कारण क्षमा का प्रदर्शन करते हैं अथवा क्रोधित नहीं होते तो इस प्रकार की क्षमा अधम कोटि की क्षमा है। वस्तुतः यह क्षमा नहीं, कायरता है।

हमें यह प्रयास करना होगा जिससे क्षमा की वृत्ति हमारी मानसिकता का एक अभिन्न अंग बन सके। क्षमा वृत्ति के विकास में जैन दर्शन की प्रांसगिकता उल्लेखनीय है। जैन दर्शन यह स्वीकार करता है कि प्रत्येक द्रव्य स्वतन्त्र है, उसके गुण और पर्याय भी स्वतन्त्र हैं। विवक्षित किसी एक द्रव्य तथा उसके गुणों एवं पर्यायों का अन्य द्रव्य या उसके गुणों और पर्यायों के साथ कोई अभिन्न सम्बन्ध नहीं है। प्राणीमात्र आत्मतुल्य है। स्वरूप की दृष्टि से सभी आत्माएँ समान हैं। अस्तित्व की दृष्टि से प्रत्येक आत्मा स्वतन्त्र है। प्रत्येक जीव

अपने ही कारण से संसारी बना है और अपने ही कारण से मुक्त होगा। आत्मा अपने स्वयं के उपार्जित कर्मों से बँधती है। आत्मा का दुःख स्वकृत है। व्यक्ति अपने ही प्रयास से उच्चतम विकास भी कर सकता है। आत्मा सर्व कर्मों का नाश कर सिद्ध पद प्राप्त करने की क्षमता रखती है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने ही बल पर उच्चतम विकास कर सकता है। प्रत्येक आत्मा अपने बल पर परमात्मा बन सकती है। अपने विकास में तत्त्वतः कोई दूसरा बाधक नहीं हो सकता। हमारे कर्म ही इसके लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार के बोध एवं ज्ञान के कारण हमारे मन में प्रत्येक प्राणी के प्रति क्षमा का भाव सहज ही विकसित हो जाता है।

सामाजिक जीवन के लिए क्षमावृत्ति अनिवार्य है। क्रोध से क्रोध उपजता है। यह चक्र सामाजिक सापेक्षता की भावना को समाप्त कर देता है। सामाजिक सद्व्यवहार एवं पारस्परिक बन्धुत्व की भावना के लिए क्षमावृत्ति अनिवार्य है। इससे व्यक्ति धार्मिक बनता है, शान्त-चित एवं विवेकशील होकर विचार करने एवं कार्य करने में समर्थ होता है। क्षमा याचना के आधार पर वह समाज के अन्य सदस्यों के प्रति अपनी प्रेम-भावना का विकास करता है, उसके जीवन में आस्था और विश्वास का संचार होता है, आत्मतुल्यता की दृष्टि का विस्तार होता है।

खामेमि सव्वेजीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।

मेत्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्जं न केणइ॥

(मैं समस्त जीवों से क्षमा याचना करता हूँ।)

समस्त जीव मुझे क्षमा प्रदान करने की अनुकम्पा करें।

मेरी समस्त जीवों के प्रति मैत्री है।

मेरा किसी के प्रति वैर-भाव नहीं है।

सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियचित्तो।

सव्वे खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि।

धर्म में स्थिर चित्त होकर मैं भावपूर्ण समस्त जीवों से अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना करता हूँ और उनके समस्त अपराधों को मैं भी क्षमा करता हूँ।



'विदेह' अरविन्द कुमार

लखनऊ – उत्तर प्रदेश
मो. 7408403570

'अयन' का अर्थ है स्थान, घर, आश्रम। कामायनी : काम-वासना के स्थान वाली, वह जिसका मुखड़ा कामुक हो, वह जिसे देखकर काम जागृत हो। सृष्टि स्वयं काम (वासना) का ही परिणाम है; वह किसी भी प्रकार अस्तित्व में नहीं आ सकती जब तक कि जिसे 'प्रजनन' कहते हैं उसकी प्रक्रिया संभव न हो, अर्थात् प्रकृति के पुरुष और स्त्री रूपों का सम्मिश्रण।

महाकवि जयशंकर प्रसाद रचित् 'कामायनी' उस परिदृश्य का चित्रण करती है, जिसमें सृष्टि का विध्वंस उसके एक मूल तत्व – जल – के द्वारा कर दिया गया; अपितु, कहना चाहिए कि सभी पाँच मूल तत्वों द्वारा कर दिया गया : पृथ्वी द्वारा स्वयं झूबकर, जल द्वारा सबको झुबाकर, अग्नि द्वारा सबको भस्मसात् करके, वायु द्वारा तीव्र झकोरों से सब कुछ मटिया-मेंट करके, और आकाश द्वारा इस सब विध्वंस का ऐसा मार्मिक एवम् हताशाजनक दृश्य प्रस्तुत करके।

तथापि, विनाश, विध्वंस, वह चाहे कितना भी प्रलयंकारी क्यों न हो, सदैव पुनर्सृजन के द्वारा ही अनुगमित होता है; पुनर्जीवन, पुनर्सृजन; अपरिहार्यतः, निःसंदेह! यही प्रकृति का अमोघ विधान है। सृष्टि कभी समाप्त नहीं होती! अन्त यदि कभी सम्भव होता है, तो उसको कहा जाता है : 'निवाण', बुद्ध ने जिसे कहा : 'निब्बान'।

कामायनी एक काव्य या महाकाव्य के रूप में हिन्दी साहित्य की सबसे दुरुह रचना मानी जाती रही है; इसमें दो राय भी हो सकती हैं। परन्तु यह भी सच है कि यह सबसे अधिक गृह्ण दार्शनिक विषय को उठाती है। इसकी रचना निःसंदेह अत्यन्त दुरुह है, लगभग समझ में न आने वाली; विशेषतः उनके लिए जो साहित्य – या हिन्दी साहित्य – के

कामायनी का अर्थ-बोध

मर्मज्ञ नहीं है, और हिन्दी साहित्य के प्रेरणा-स्रोत, संस्कृत पुरातन ग्रन्थों एवम् पुराणों, के अध्येता नहीं हैं।

अपने एक युवा नव-कवि की काव्य-संहिता 'हत्यारी सदी में जीवन की खोज' के प्रकाशन के बाद अपने मानस में कविता के प्रति जागे हुए तीव्र अनुराग के कारण, और उस हिन्दी ग्रन्थ को इंग्लिश भाषा में अनूदित करके 'सर्च फॉर लाइफ' के नाम से प्रकाशित करके; और घटना-चक्र में फँसकर, एक और मूर्धन्य हिन्दी नव-कवि की काव्य-संहिता 'अदृश्य का यथार्थ' का भी इंग्लिश में अनुवाद करके 'रियलिटी ऑफ इनविजिबल' के नाम से प्रकाशन करके; मेरे मन में यह विचार बड़ी गंभीरता से कौंधा कि ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं कभी भी – चाहते हुए भी – अपनी मातृ-भाषा हिन्दी के, मेरे मन्त्रव्य में सबसे महत्वपूर्ण, महाकाव्य – कामायनी – को पूरा पढ़ नहीं पाया, उसे समझना और उसके कवित्व का आनंद लेना तो बहुत दूर की बात है। यह तब, जबकि मैं अपने आप को साहित्य, और विशेषकर हिन्दी साहित्य, का सुधी अध्येता मानने का दर्प पाले हुए हूँ।

और मैंने बीड़ा उठा लया। प्रथमतः, मैंने कामायनी को, उसके मर्म को समझने के उद्देश्य से, हिन्दी में पढ़ने का निश्चय किया; और साथ-साथ उसका गद्यान्तरण करते जाने का; और उस प्रक्रिया को मैंने नाम दिया : 'कामायनी का गद्यान्तरण। इतना कर लेने के बाद यह बड़ा स्वाभाविक और सहज लगा कि उसे इंग्लिश भाषा में पद्य और गद्य दोनों रूपों में ही परिणत कर दिया जाए; और मुझे उस सारी प्रक्रिया का नामकरण 'इंग्लिश में कामायनी का गद्य एवम् पद्य अन्तरण' के रूप में करना समीचीन लगा। इस सारे उद्यम का एकमात्र अन्तिम उद्देश्य वस्तुतः यह था कि कामायनी का भाव और अर्थ अच्छी तरह समझ में आ जाए;



उस कामायनी का, जो हिन्दी भाषा का दुरुहतम महाकाव्य समझा जाता है, तत्व और दर्शन दोनों ही दृष्टियों से। उसका अर्थ 'कामायनी का सरलीकरण' भी हो सकता है; अर्थात् उसे सार्थक और रुचिकर बना दिया जाए, कम-से-कम उनके लिए पठनीय, जो काव्य-प्रेमी और साहित्य-प्रेमी हैं, कदाचित् उसकी दुरुहता से घबरा जाते हैं। यह उस अर्थ में 'गद्य-कामायनी' हुई! जिसे सामान्य प्रज्ञा सम्पन्न छात्र आम बोलचाल की भाषा में 'कामायनी मेड ईंजी' बोल सकते हैं।

'कामायनी' महाकाव्य के प्रमुख दो पात्र मनु और श्रद्धा हैं, जो क्रमशः मन और प्रणय के रूपक हैं। अन्य पात्र हैं : इडा और आयु, जो कि क्रमशः मनु की प्रेयसी और मनु (एवम् श्रद्धा) का पुत्र हैं। हाँ, उसमें असुर भी हैं, खलनायक, जो कि पशु-याज्ञिक पुरोहितों का बहुरूपियापन धरकर मनु को पशु-बलि करने को प्रेरित करते हैं, और इस तरह एक कुत्सित परम्परा डालते हैं।

विभिन्न – कुल पन्द्रह -- सर्गों के माध्यम से महाकवि सुधी पाठक को मानव अस्तित्व के सकल आयामों का अवलोकन कराता है : क्रमशः होने वाले चिंता, आशा, श्रद्धा (प्रेम), काम, वासना, लज्जा, कर्म (यज्ञ), ईर्ष्या, इडा (अनैतिक प्रेम), स्वप्न (अन्तर्दृष्टि), संघर्ष (अहंकार), निर्वेद (विराग), दर्शन (जीवन), रहस्य (सृष्टि), आनन्द (श्रेय); इसी क्रम से व्यक्ति के जीवन में ये भाव सामान्यतः आते भी हैं।

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से 'कामायनी' शब्द का अर्थ है : 'कामुक मुखड़े वाली' या काम-वासना के स्थान वाली, जिसे देखकर काम जाग्रत हो; तथापि, मेरी दृष्टि में इस काव्य का सारांश रूप शीर्षक हो सकता है : 'प्रलय और पुनर्सृजन', क्योंकि विलासी देव-संस्कृति के अकुशल कर्मों के फलस्वरूप उसका विध्वंस जल-प्रलय के माध्यम से हुआ, परन्तु फिर भी वीज-रूप एक मानव बच रहा और फिर से जीवन फलीभूत हो उठा। दूसरा एक शीर्षक 'सृष्टि और प्रजनन' भी हो सकता है, क्योंकि सारी सृष्टि काम से ही सृजित हो रही है, फिर चाहे वे जीवित प्राणी (सत्त्व) हों, या

जड़ पदार्थ।

कामायनी के पात्रः

मनु = मन,

श्रद्धा = प्रणय,

इडा = प्रेयसी, शासिका, गन्धर्व कन्या, नगर-वधु

आयु = सन्तान, मानव-संसृति,

असुर = पुरोहित, पशु-यज्ञ-कर्ता,

पशु = मानवेतर निरीह प्राणी

कामायनी के स्थलः

हिमालय की चोटियाँ

मनु और श्रद्धा की गुफा

श्रद्धा की कुटीर,

मनु का आखेट-स्थल, वन

सारस्वत देश और सारस्वत नगर

इडा और मनु का राजमहल

कैलास-मानसरोवर का पर्वतीय पथ

कैलास-मानसरोवर

कामायनी की घटनाएँः

जल-प्लावन – प्रलय का दृश्य – प्रकृति के पंच महाभूतों का ताण्डव!

नाव, समुद्री जल से निकलती हुई धरती

प्रकृति का पुनर्सृजन

वसन्त का आगमन

मनु के अग्निहोत्र

अग्न का दान, अज्ञात जीवित प्राणियों की संभावना के लिए वन में रखना,

श्रद्धा का आगमन, आश्र्वय और प्रेम,

श्रद्धा द्वारा मनु के विषाद को दूर करना, जिजीविषा जगाना,

श्रद्धा का अपने पालतू पशु को साथ लाना, उसे प्यार से



पालना,

असुर पुरोहितों का माँसाहार के लिए लालायित होना,
श्रद्धा के पशु पर उनकी जीभ का लपलपाना,
कुटिल चाल से मनु को पशु-यज्ञ के लिए पटाना,
यज्ञ में श्रद्धा के प्यारे पशु की बलि, सोम का पान, माँस-
भोजन,
श्रद्धा का शोकग्रस्त होना, अपनी गुफा में पड़ रहना,
मनु का उसे मनाना और सोमपान कराकर काम-क्रीड़ा
करना,
श्रद्धा का गर्भवती होना, तकली कातने में और बालियाँ
बीनने में व्यस्त रहना,
मनु के प्रति उदासीनता,
मनु का सशंकित होना, ईर्ष्यालु होना,
मनु का शिकार में मगन रहना,
मनु द्वारा प्रश्न करने पर श्रद्धा द्वारा उन्हें अपनी पर्ण-कुटी में
ले जाकर दिखाना,
और अपनी भावी सन्तति के प्रति अपने भाव व्यक्त करना,
मनु का और भी अधिक उद्वेलित होकर वहाँ से भाग जाना,
श्रद्धा का उन्हें रोकने का असफल प्रयास,
मनु के भटकाव के बीच सारस्वत नगर में इडा जैसी अनुपम
सुन्दरी से मिलन,
दोनों का प्रणय,
इडा के राज्य में प्रजा-पालन, मानव-संसृति की सुन्दर
व्यवस्था,
मनु का अहंकारी हो जाना, शासन के नियमों को स्वयं न
मानना,
यह मानना कि शासक पर राष्ट्र के नियम लागू नहीं हो
सकते,
इडा द्वारा समझाने का निष्फल प्रयास,
उसी क्रम में इडा के साथ भी मनु द्वारा अनधिकार
व्यभिचार,
यह कहकर कि उन्हें राज्य नहीं इडा चाहिए,

प्रजा का रोष,

इस पाप के कारण प्राकृतिक विप्लव,
प्रजा का राजा की शरण में आना, राजमहल में शरण
माँगना,
अहंकारवश मनु का उन्हें अन्दर न आने देना,
दरवाजे बंद करवा देना, प्रहरियों को शख्त आदेश,
प्रजा के धक्के और रोष से राजमहल के दरवाजों का
चरमराकर गिर जाना,
प्रजा का अंदर घुस आना, और विप्लव - क्रान्ति - करने
लगना,
मनु का उनके साथ अपने बलबूते युद्ध करना,
मनु ने देखा कि वही पुरोहित जिन्होंने उनसे पशु यज्ञ कराया
था, प्रजा को उनके विरुद्ध भड़का रहे थे, मनु ने उन्हें यह
कहकर मार डाला कि 'लो, ऐसे होती है बलि!' मनु ने प्रजा
को उलाहना दिया कि उनके लिए उन्होंने कितनी अच्छी
व्यवस्था की थी, कि फिर भी वे सब-के-सब कृतन्न निकले,
प्रजा इडा को ही सारस्वत भूमि की रानी - शासिका -
मानती थी, इडा ने युद्ध को रुकवाने का भरसक प्रायस
किया, परन्तु असफल रही, अन्ततः मनु धायल होकर गिर
पड़े, इडा उनके पास बैठकर सोचने लगी कि वह क्या करे,
कि वह मनु को बचाने के लिए वहाँ बैठी थी या क्या करने
को, युद्ध तो रुक गया था, परन्तु मनु मरणासन्न अवस्था में
रक्त-रंजित राजमहल में पड़े थे, उधर, श्रद्धा को यह घटना
अपने स्वप्न में ज्यों-की-त्यों दिख रही थी, वह व्यथित हो
उठी, श्रद्धा की उदासी में उसका पुत्र ही एक सहारा था जो
इधर-उधर धूल में घूमता फिरता था,
वे दोनों इस स्वप्न के बाद मनु की खोज में निकल पड़े,
अन्धकार में भी वे बढ़े जा रहे थे, और श्रद्धा यह पुकारती
जा रही थी कि 'अरे, कोई मुझे बता दो, मेरा रूठा हुआ प्रेमी -
प्रवासी - कहाँ चला गया है, इधर, इडा उस स्वर को
सुनकर करुणा-द्रवित हो जाती है, और चलकर श्रद्धा और
उसके पुत्र के पास पहुँचती है, उनसे पूछती है और आश्वासन



देती है कि 'जीवन की लम्बी यात्रा में बहुत सम्भव है कि खोये हुए साथी भी मिल जाते हैं!' उन्हें अपने स्थान पर ले जाती है, वहाँ, अकस्मात् उस अस्त-व्यस्त मण्डप के अंदर जब मनु के पास जलती हुई अग्नि प्रज्वलित हो उठती है तो श्रद्धा को मनु दिखलायी पड़ जाते हैं, वह उनके पास जाकर आश्चर्य-चकित हो जाती है, और दुःखी भी; और अपने पुत्र को बुलाकर कहती है कि 'यही तेरे पिता हैं', पुत्र जो अभी तक इधर-उधर उस अभूतपूर्व राजमहल के वैभव को देखने में व्यस्त था, पिता को देखकर प्रसन्न हुआ, इतने में श्रद्धा की स-स्नेह सेवा-सुश्रुषा से मनु को होश आ गया, श्रद्धा को देखकर उन्हें ढाढ़स बैंधा, 'श्रद्धा, तुम आ गयीं, अच्छा हुआ!' फिर, 'अरे, मैं अभी तक यहाँ पड़ा हुआ हूँ! मुझे यहाँ से तुरन्त दूर ले चलो!' इतने में उन्हें इडा दिखलायी पड़ गयी, और मनु का पारा चढ़ गया, उन्होंने उसे खूब बुरा-भला कहा, और इडा ने चुपचाप सुन लिया, श्रद्धा ने कहा कि वे उसे 'ले चलेंगी, परन्तु अभी अपनी अवस्था कुछ सुधरने तो दो!' और कि 'क्या इडा उन्हें इतने समय भी वहाँ नहीं रहने देंगी?' इडा इस घटनाक्रम से बल्कि शर्मिदा थी, रात को मनु अकेले ही भाग निकले और मानसरोवर और कैलास पर्वत की राह पर चले गये, सुबह सबने देखा कि मनु गायब हो गये, श्रद्धा ने अपने पुत्र को इडा के संरक्षण में छोड़ा और मनु की खोज में फिर से निकल पड़ी, कहीं अत्यन्त ऊँचाई पर एकान्त में चिंतन-मनन करते हुए मनु उन्हें मिल भी गये, फिर वे दोनों कैलास के समीप मानसरोवर के पास साधना-निरत रहने लगे, श्रद्धा मनु के लिए साधना की सुविधाएँ जुटाती, अचानक एक दिन इडा श्रद्धा के पुत्र को लेकर सारस्वत नगर निवासियों के साथ तीर्थ यात्रा के लिए निकली, लम्बी यात्रा में बद्धे तरह-तरह के प्रश्न करते जाते थे, और उनकी माताएँ उन्हें तरह-तरह की गाथाएँ गढ़-गढ़कर बताती जाती थी, बद्धों ने जब पूछा कि उस तीर्थ की क्या महिमा है तो इडा ने समझाया कि बतलाते हैं वहाँ कोई सिद्ध पुरुष रहते हैं, जो कहीं से आकर वहाँ साधना में रत हैं,

और बहुत महान हैं, थोड़ी देर में वह यात्री-दल वहीं जा पहुँचा जहाँ मनु और श्रद्धा मानसरोवर के किनारे कैलास के निकट साधना निरत थे। सबने उनको पहचान लिया और श्रद्धावनत होकर उन्हें प्रणाम किया।

इडा ने उन्हें स्पष्ट किया कि वे जान-बूझकर उन्हें खोजने नहीं आये हैं, बल्कि वे तो तीर्थ-यात्रा करने आये थे और कि वे लोग अकस्मात् दैववश उन्हें मिल गये, मनु ने उन्हें उपदेश दिया कि वह स्थल बड़ा पावन है, कि वहाँ पहुँचकर मन और मस्तिष्क में तुच्छता नहीं रह जाती है; और यह भी कि 'इस सृष्टि में न कोई अपना है, न कोई पराया, और कि हम सब बस हम ही हैं! सब एक ही मिट्ठी के बने हुए, और इसी में मिट जाने वाले!' और कि 'चेतन समुद्र में जीवन लहरों-सा बिखर पड़ा है।'

कामायनी का निहितार्थ:

यह सब तो ठीक है; परन्तु प्रबल अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न महाकवि वस्तुतः हमें सन्देश क्या देना चाहता है; यह प्रश्न मन को मथता है। मेरी दृष्टि में यह भी एक रूपक ही है, उस पद-दलित भारत-भूमि का जो विदेशी आक्रान्ताओं से अन्ततः विद्वस्त हो गयी। उससे पूर्व यहाँ की संस्कृति देव-संस्कृति थी, अर्थात् देवताओं की सत्ता में विश्वास करने वाली, और देवताओं की उपासना करने वाली। उसके विपरीत वह संस्कृति थी जो देवताओं की सत्ता में विश्वास नहीं करती थी : असुर, अर्थात् अ-सुर, बिना देवता! उस देव-संस्कृति के लोग अपने आप को अमर मानते थे और धोर भोग-विलासी और काम-लोलुप थे। और वस्तुतः परतंत्रता के पूर्व के भारतीय समाज की वही दशा थी! विदेशी आक्रान्ताओं ने आकर सारी संस्कृति को जल-प्रलय की तरह तहस-नहस कर डाला।



डॉ. भावना तिवारी

नोएडा -उत्तर प्रदेश

मोबाइल- 9935318378

सोशल मीडिया युग में हिन्दी

भाषा मानव सभ्यता की सर्वोच्च उपलब्धि है। भाषा और मनुष्य का सम्बन्ध अत्यंत गहरा और अनिवार्य है। सम्पूर्ण सृष्टि में भाषाई स्तर पर ही मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक संवेदनशील और श्रेष्ठ है। अन्य प्राणियों की सांकेतिक और ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति मात्र उनकी निजी आवश्यकताओं हेतु होती हैं, जबकि मनुष्य अपनी भाषा के माध्यम से जटिल विचार, भावनाएँ व्यक्त कर सकता है और यही मनुष्य की विशेषता है। भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से किसी समाज की संस्कृति, परंपराएँ, ज्ञान और नियम संचरित होते हैं। भाषा विचारों के आदान-प्रदान, परस्पर संवाद, भावनाओं व दृष्टिकोण को स्पष्ट करने और भावाभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम रूप है। भाषा ही व्यक्ति, समाज और समुदाय को परस्परपरिचित कराती है। यह केवल बोलने या लिखने मात्र तक सीमित न होकर संस्कृति, समाज और चेतना का अभिन्न अंग भी है। भाषा जितनी समृद्ध होगी, व्यक्ति उतना ही सुसंस्कृत और संस्कारवान होगा; क्योंकि भाषा मनुष्य की अर्जित पूँजी है जो प्रयासों से सँजोई जाती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। स्वयंसिद्ध है कि भाषा किसी भी सभ्यता व संस्कृति के विकास की रीढ़ है। यदि संक्षेप में कहा जाये तो भाषा वर्णों की एक व्यवस्था है जो संप्रेषणता के गुण से संपृक्त होती है।

सोशल मीडिया का तात्पर्य उन अंतर्जालीय सामुदायिक पटलों से है, जहाँ इसके उपभोक्ता परस्पर विचार विनिमय करते हैं। उदाहरणार्थ- फेसबुक, इंस्टाग्राम, टिकटॉक, लिंकडइन, रेडिट, हवाट्सएप, एक्स, ग्रैंड, यूट्यूब इत्यादि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं; जहाँ व्यक्तिगत और

व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु टेक्स्ट, फोटो, वीडियो आदि के रूप में सामग्री साझा कर सकते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने हिन्दी में सामुदायिक संवाद को बढ़ावा दिया है।

यांत्रिक माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की योग्यता ही सोशल मीडिया का सबल पक्ष है। अंतर्जाल का माध्यम वर्तमान में सर्वाधिक शसक्त माध्यम हो चुका है। इसके बिना मानव जीवन स्वयं को असहाय मानने लगा है। अब प्रश्न है कि सोशल मीडिया के समय में हिन्दी की क्या स्थिति है, क्योंकि यह सत्य है कि अंतर्जाल के सर्वसुलभ व आक्रामक रूप में प्रभाव में आने के पश्चात सोशल मीडिया के इस युग में और दुनिया का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से अस्पृश्य नहीं है। हिन्दी भाषा की स्थिति भी इससे निष्प्रभावी नहीं है।

हिन्दी भाषा सशक्त, समृद्ध और सृजनात्मक रूप से विकसित है। सोशल मीडिया का माध्यम इसके प्रचार-प्रसार, सम्बर्धन और संरक्षण में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। उपलब्ध सोशल समुदायों ने हिन्दी को न केवल व्यापक जनसंपर्क का माध्यम बनाया है, बल्कि इसके प्रयोग और स्वरूप में नए आयाम भी जोड़े हैं। आभासी सामाजिक समुदाय का संभाग होकर ग्रामीण क्षेत्र से लेकर महानगरों तक, युवाओं से लेकर वृद्धजन तक, प्रत्येक वर्ग हिन्दी के माध्यम से अपनी सृजनात्मक उपस्थितिसुनिश्चित करते हुए अपनी भावनाओं और अनुभवों को व्यापक जनसमूह तक संचरित कर रहा है। सोशल मीडिया के प्रभाव ने गाँव, शहर, प्रदेश, देश और विदेश की दूरी समाप्त कर दी है।



सूचना और विचार विनिमय इतना सशक्त हो चुका है कि मात्र अल्प घंटों में ही एक सूचना संक्रमित हो जाती है जिसे हम वायरल होना कहते हैं।

सोशल मीडिया वर्तमान में तीव्रतम गति से संचार करने का माध्यम हो चुका है। अब हिन्दी केवल पारंपरिक संवाद का साधन न रहकर वैश्विक संवेदनाओं की संवाहक बन गयी है। विदेशी शोधकर्ता और भारतीय प्रवासी समुदाय हिन्दी सामग्री का अध्ययन करने में रुचि दिखा रहे हैं। अनुवाद की सहज उपलब्धता के कारण हिन्दी साहित्य अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी पढ़ा जाने के साथ ही साथ सुना जा रहा है, क्योंकि डिजिटली ऑडियो पुस्तकों की उपलब्धता ने इस प्रक्रिया को अत्यंत सरल बना दिया है। हिन्दी साहित्य में गद्य-पद्य की लगभग प्रत्येक विधा में पर्याप्त लेखन किया जा रहा है और उसका प्रचार-प्रसार भी हो रहा है, जिससे रचनाकार सीधे पाठक वर्ग तक पहुँच रहा है। सोशल मीडिया ने मुद्रित पत्रिकाओं के ई-संस्करणों और ऑनलाइन पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य को दुनिया भर में सुलभ बनाया है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को विस्तार मिला है।

ब्लॉग, शॉर्ट फिल्म, कविता, कहानी और शोधपत्र में हिन्दी सामग्री को बढ़ावा देने के लिए प्रतियोगिताएँ और पुरस्कार इत्यादि की घोषणाओं ने इसे अधिक बल प्रदान किया है। कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया पर हिन्दी भाषा, भावनाओं और लोक-संस्कृति को अपने श्रेष्ठतम स्वरूप में अभिव्यक्त कर रही है। पॉडकास्ट इत्यादि के माध्यम से अनेक जानकारी कहीं भी, कभी भी, सुनी जा सकती हैं। ऑनलाइन कोर्स, शैक्षणिक वीडियो और साहित्यिक सामग्री हिन्दी में उपलब्ध हो रही है। हिन्दी ई-लाइब्रेरी और सरकारी, गैरसरकारी शैक्षणिक पोर्टलों पर हिन्दी में पाठ्यक्रम, वीडियो, ऑडियो और साहित्यिक सामग्री उपलब्ध होने से पाठक वर्ग बढ़ा है। अब सारा संसार हमारी

मुट्ठी में, सारे संसार का ज्ञान-अज्ञान, अच्छा-बुरा, श्रेष्ठ-निकृष्ट सब कुछ एक कुंजी की इंगिति मात्र से उपलब्ध है। ये एक युगीन क्रान्ति है, भ्रान्ति नहीं। हिन्दी घोषित राष्ट्रभाषा भले ही न हों पर जनमानस में सर्वाधिक लोकप्रिय भाषा है। सरकारी आंकड़ों में मात्र हिन्दी पखवाड़े में हिन्दी का महत्व समझाया जाता है, लेकिन सोशल मीडिया के पश्चात् यह सतत प्रवहमान है।

सोशल मीडिया के माध्यम से धनार्जन की उपलब्धता ने हिन्दी का बाजारीकरण किया है। इस अवसर के कारण हिन्दी भाषा का व्यावसायिक उपयोग, विशेषकर मीडिया, विज्ञापन, कॉर्पोरेट जगत और सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ता जा रहा है, जिससे यह एक शक्तिशाली वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। हिन्दी का उपयोग साहित्य, शिक्षा और परम्परागत पत्रकारिता तक संकुचित न रहकर दैनिक संवाद, रचनात्मक लेखन और व्यावसायिक परिधियों तक विस्तार प्राप्त कर चुका है। भूमंडलीकरण और आर्थिक उदारीकरण के दौर में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भी अपने व्यापारिक हितों के लिए हिन्दी का सहारा लिया है। सोशल मीडिया ने हिन्दी को एक व्यापक मंच प्रदान किया है, अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी सामग्री के उपभोक्ताओं की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है।

सोशल मीडिया हिन्दी के लिए एक वरदान भी है और चुनौती भी। मीडिया ने नये प्रयोगों और नवाचारों को जन्म दिया है जो उसे जीवंत और समाजोपयोगी बनाते हैं, क्योंकि यह समय और परिवेश के अनुरूप अपने स्वरूप को ढालती है। यह भाषा को समय के साथ बदलता है और उसे यथार्थ समाज की प्रतिक्रियाओं के करीब लाता है। हिन्दी शब्द ग्राह्यता में उदारीकरण की नीति अपनाती रही है। बड़ी संख्या में अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करती रही है। इंटरनेट के आने के बाद हिन्दी सभी विषयों के लिए समेकित हो चुकी है। अब यह पुराने संचार माध्यमों से द्विगुणित और त्रिगुणित स्वरूप में आगे निकल चुकी है।



लेकिन सोशल मीडिया के त्वरित संदेशों का चलन भाषा की शुद्धता को प्रभावित कर रहा है। युवावर्ग में हिन्दी में कई नये शब्द, स्लैंग और अंग्रेज़ी मिश्रित प्रयोग बढ़ रहे हैं। उदाहरण-कल्चर शॉक, फिल्टर लगाना, चिल करना; आदि। ट्रेंडिंग आदि शब्द अब आम संवाद का हिस्सा बन चुके हैं। मीम, वायरल, लाइक जैसी शब्दावलियों ने हिन्दी संवाद में अपना स्थान बना लिया है। चैटिंग, इंस्टेंट मैसेज; और शॉर्ट फॉर्म कम्युनिकेशन के कारण शब्दों की सही संरचना और व्याकरण का ध्यान कम होने से अपूर्ण वाक्य, त्रुटिपूर्ण, अशुद्ध हिन्दी प्रयोग प्रचलन में आ चुकी है।

गूगल और वर्तमान में क्रत्रिक बुद्धिमता के कारण अभ्यास और स्वाध्याय में कमी आने से मौलिक सृजनात्मकता भी प्रभावित हुई है। सभ्य, संतुलित भाषा का ह्रास हुआ है। संक्षिप्त संदेश व्याकरण और छंद के नियमों को अधिकांशतः अनदेखा करते हैं। अत्यधिक अँग्रेज़ी मिश्रित हिन्दी का चलन मानक हिन्दी भाषा स्तर और सौन्दर्य को प्रभावित करता है। साथ ही भावी पीढ़ी के लिए एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर रहा है, जहाँ आगामी पीढ़ियाँ विशुद्ध हिन्दी का स्वरूप और उसके व्याकरण को समझने में असमर्थ हो जायेंगी। वर्तनी, लिंग, सम्बोधन वाचक संज्ञा की त्रुटियाँ इत्यादि दोष बहुत सामान्य मान लिया जाता है। भाषा के ऐसे परिवर्तन समय की आवश्यकता और सामाजिक परिवेश को दर्शते हैं। त्वरित सृजन-प्रकाशन और प्रतिक्रिया के कारण मानक स्तर का क्षरण हुआ है। लेखक, पाठक, सभी शीघ्रता में हैं। छंदानुशासन, व्याकरणिक दोष, भाषाई कृपणता, और व्यक्तिगत शब्दकोश लघुतर होता जा रहा है।

आज की नई पीढ़ी और हिन्दी भाषा का बिगड़ता स्वरूप वास्तव में गम्भीर चुनौती बन गया है। कहना अतिशयोक्ति न होगी कि भाषा किसी भी समाज को सभ्य और

संस्कारित करती है। किसी सभ्य समाज को भ्रष्ट और भ्रमित दिशाहीन करना हो या उसकी प्रगति में बाधा उत्पन्न करना हो तो उसकी भाषा पर प्रहार करना चाहिए। भाषा का विकृत स्वरूप कुल समाज को दूषित करता है, क्योंकि भाषा सभ्यता की परिचायक है और जहाँ भाषा कुरुप और विकृत हो जाये, भाषा के संस्कार नष्ट और पथभ्रष्ट हो जायें वहाँ सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, क्योंकि भाषा मात्र शब्दों का समुच्चय न होकर किसी भी देश की सांस्कृतिक, सामाजिक और मानसिक जीवन का मूलाधार है। डिजिटल युग में हिन्दी के नवाचार को अपनाएँ, साथ ही भाषाई शुद्धता और साहित्यिक सांस्कृतिक मूल्य बनाए रखना आवश्यक है। भाषा का सौन्दर्य, विशुद्धता स्थापित रहे, इसके लिए अपरिहार्य है कि इस डिजिटल युग में भाषा की नवप्रवृत्तियों को अपनाते हुए भी हम सजग और सचेत रहें कि भाषा का मूल बचा रहे। हिन्दी का भविष्य और स्थायित्व नवप्रवृत्तियों और परंपरा के मध्य सामंजस्य संतुलन स्थापित करने पर निर्भर करेगा, ताकि हिन्दी केवल संवाद का माध्यम न रहकर सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की संवाहक बनी रहे।



राजभाषा हिन्दी की स्थिति: सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में

किसी भी राष्ट्र या समाज के लिए भाषा उसके सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार तत्वों में स्थान रखती है। मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न व श्रेष्ठ बनाने में भाषा की महती भूमिका रही। आधुनिक युग में राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार संस्कृति व भाषाई अस्मिता ही है। विश्व के अनेक देश भाषाई आधार पर अपनी पहचान बनाते हैं यथा फ्रान्स (फ्रेंच), जर्मनी(जर्मनी), चीन(चाइनीज़), इंग्लैण्ड(इंग्लिश), साउदी अरब(अरबी) आदि। किन्तु इस सन्दर्भ में भारत की स्थिति बहुत विचित्र रही है। वस्तुतः भारत एक बहुभाषी विभिन्न जातियों परम्पराओं तथा विविध अदिमताओं का देश है। प्राचीन समय से ही यहाँ भाषाई विविधता रही है। तथा सभी भाषाएं अपनी स्थिति व सामर्थ्य के अनुसार फलती-फूलती रही है। किन्तु 19वीं सदी में राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सम्पूर्ण देश में सम्पर्क का आधार बन सकें। इस विषय में भारतीय राजनेताओं व चिन्तकों ने व्यापक विचार-विमर्श के पश्चात हिन्दी को अपना समर्थन प्रदान किया। वस्तुतः भारत की राष्ट्रभाषा की समस्या जटिल है क्योंकि भारत में भारोपीय व द्रविड़ भाषा परिवारों की अनेक भाषाएं बोली जाती हैं जो भाषिक संरचना एवं व्यवहार की दृष्टि से परस्पर पर्याप्त भिन्नताएं रखती हैं। इसके साथ ही भारत में लम्बे समय तक विदेशी भाषाओं का वर्चस्व राजकाज में रहा। 13वीं सदी से मुगलकाल के लम्बे समय में फारसी रही तो औपनिवेशिक शासनकाल में अंग्रेजी का वर्चस्व रहा। इसलिए भारत की स्वतंत्रता के समय राजभाषा का प्रश्न विभिन्न दृष्टियों से विवादास्पद बना रहा। राजभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जिसका प्रयोग राज्य के कार्यालयी कामकाज में किया जाता है। राजभाषा और राष्ट्रभाषा कई परिस्थितियों में ये पृथक पृथक भी हो सकती हैं। संविधान सभा में व्यापक विचार-विमर्श के पश्चात 14 सितम्बर 1949 ई0 को देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को

डॉ. मधु मिश्रा

बुलंदशहर-उत्तर प्रदेश

मो. 9359374748

राजभाषा के रूप में अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत मान्यता प्रदान की गई तथा इसके विकास एवं विभिन्न प्रदेशों के संदर्भ में राजकाज के लिए अनुच्छेद 344 से 351 तक अनेक प्रावधान किए गए। राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकृति के सन्दर्भ में तीन मुख्य बातें थी। 1- हिन्दी का राजभाषा के रूप में विकास किया जाये। 2- संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष तक अंग्रेजी राजकाज की भाषा रहे तथा 3- हिन्दी के विकास के कारण अन्य भारतीय भाषाओं के हितों की उपेक्षा न हो। अनुच्छेद 344 के अनुसार संविधान के प्रारम्भ के पांच वर्ष की सामसि पर तथा तत्पश्चात प्रारम्भ से दस वर्ष की समासि पर राष्ट्रपति एक राजभाषा आयोग गठित करेगा जिसमें एक सभापति तथा आठवीं अनूसूची में सम्मिलित भाषाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित किए जाएंगे। भारत में सर्वाधिक जो भाषा बोली व समझी जाती है वह हिन्दी ही है। अतः हमें किसी भी भावनाओं को ठेस पहुंचाएं बिना हिन्दी के प्रचार प्रसार व अधिकार की दिशा में आगे बढ़ने के प्रयास करने चाहिए। सफलता के सिद्धान्त 1. इंसान को थोड़ी सी सफलता पर संतुष्ट नहीं होना चाहिए क्योंकि अक्सर कठितयां साहिल के करीब आकर ढूब जाती है। 2. दुनिया इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है कि अगर आपने शिक्षा हासिल नहीं की तो आय न सिर्फ पीछे रह जायेगे बल्कि खत्म हो जायेगे। 3. तकलीफे इंसान को सोचने पर मजबूर कर देती है सोचने से इंसान अकलमंद बनता है और अकलमंदी इंसान को जीने के काबिल बना देती है। 4. मुश्किलों से बेहतर है कि जंग लड़ों मुमकिन है कि हार जाओं, पर बुजदिल न रहोगे। 5. आलस्य को त्यागकर सिर्फ अपना लक्ष्य ध्यान में रखें। अगर तुम चार-पाँच साल जी तोड़ मेहनत करोगे तो आने वाले चालीस साल आराम से काट सकते हो। वरना उन चालीस साल तक जी तोड़ मेहनत करनी पड़ेगी। ***



बी. एल. आच्छा

पेरंबूर, चेन्नई (तमिलनाडु)

मो-9425083335

दूँढ़ उस शिखर को, जिससे चिपक सके

लिखूँ क्या? कलम-कागज सामने पर कुछ जमता नहीं। दिल को समझाता हूँ कि ले। पर प्रेमिका को लिखी चिट्ठी की तरह दस-बीस कागज फेंकने पर भी दिल की इबारत नहीं बन पाती। दिन के उजाले के बावजूद, संशय के अंधेरों की घुमड़ लेखनी पर बनी हुई है। किसको आकांक्षा नहीं होती शिखर ध्वज की तरह लहराने की। पर कागज फटे जा रहे हैं। उम्दा लेखन के लिए खरीदा महँगी पेन भी स्वाहा हो जाता है और बादल भी सफेदी दिखाकर खिसक जाते हैं।

ब्रह्म मुहूर्त में सोते हुए सपना आया। अंधेरे में रोशनी चमकी। देवी का आशीर्वादी हाथ दिख गया। मैंने कहा- "माँ! कुछ कृपा मुझ पर भी करो। कितने कागज खरीदे और रंगे, पर बात कुछ बनती नहीं। कुछ नामी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन और सम्मान का बाजार बने। पर लोकप्रियता के राजमार्ग के बजाए खड़ंजा सड़क ही हाथ लगती है।" माँ ने कहा- "तेरे खाते में अपने रंगे शब्द कम ही हैं। शब्दों का कोलाहल जरूर है। अब साधारण- सी शब्द -पूँजी से साहित्य के सूचकांक में छलांग मारेगा तो मजबूरी ही हाथ लगेगी।" मैंने कहा- "माँ, कोई उपाय बताइए। मैं तो शब्दों में जीना चाहता हूँ। शब्दों पर मिठना चाहता हूँ।" देवी माँ ने कहा- "अब अपना कुछ नहीं-सा है, तो परायी पूँजी से खेल खेल ले। चिपक जा किसी शिखर पुरुष से। यशस्वी शब्द पुरुष से। फिर तुम्हें खुद सूझ जाएगा कि परिक्रमा कैसे करनी है। झांझमंजीरे कब बजाने हैं? कैसे परिक्रमा से साधना है? तू दूँढ़ उस शिखर को, जिससे चिपक सके।"

शाम को घूमते-घामते मुझे बेताल पेड़ पर लटकने से पहले दिख गया। मैं तत्काल बेताल की पीठ से चिपक गया। बेताल बोला- "लोगों की पीठ पर मैं चिपकता हूँ। आज तुमने यह दुस्साहस कर लिया?" मैंने कहा- "रात के सपने ने बताया कि किसी शिखर पुरुष से चिपक जाऊँ। तुम चिपकन-कला में माहिर हो। विक्रम के कंधे पर कैसे चिपक जाते हो। माँ ने सपने में कहा कि तुम अपने लिखे से कभी छलांग नहीं लगा पाओगे। किसी शब्द-शिखर से चिपक जाओ। मैंने सोचा कि विक्रम से बेताल की संवाद कला आज भी कायम है। मैंने तुम्हें उड़ते हुए देख लिया। तुम चिपकन-कला के शिखर पुरुष हो। अब मेरे सवालों का जवाब दो।"

बेताल भौंचक रह गया। सोचा कि जवाब नहीं दिया

तो पेड़ की डाल क्या दो का बजन संभाल पाएगी? मजबूर होकर बोला- "बताओ सवाल क्या है?" मैंने कहा, "मेरे पास साहित्य की पूँजी तो कम है, पर मैं साहित्य की दुनिया में नाम चाहता हूँ। तो क्या करें?" बेताल ने कहा- "यह उत्तर तो देवी माँ ने तुम्हें दे ही दिया है। तो वहीं जा धमको।" मैंने कहा- "तो किस शिखर पुरुष से जा चिपकूँ?" बेताल ने कहा- "यह तो तुम्हारी मर्जी पर है।"

मैंने पूछा - "आजकल साहित्य विद्याओं के गुरु हैं। विचारधाराओं के शिखर हैं। प्रकाशन-गृह, शासन-प्रशासन के शिखर हैं। किससे चिपकें?" बेताल ने कहा- "तुम भटक रहे हो। किसी एक से चिपक लिए तो सबसे चिपक जाओगे। एक विचारधारा से चिपक लिए तो वैचारिक-शीर्ष हो जाओगे। मंचों के शीर्ष को पकड़ लोगे तो बाजार समीकरण साध लोगे।" मैंने कहा - "साफ-साफ बताओ, बुझाओ मत।" बेताल ने कहा- "अब देख लो बाजार में जो चलन में हो उसको पकड़ लो। बाजार विचारधारा का हो, शिखर महिमा मंडित मठाधीश का हो, ऐतिहासिक लेखक की शताब्दी आए या किसी के जीवन का स्वर्ण-अमृत काल, तुम उसे शिखर तीर्थ बना लो। न बने तो अनेक लेखकों से लिखवाकर किताबें संपादित करो, विचारधारा के बाड़े बनाओ, संस्मरण लिखवाओ, आयोजनों के लंबे समाचार छपवाओ, कविताओं के पोस्टर बनाओ, तुकड़ सभाएं करो, सम्मान आयोजित करो, उनकी शब्द - प्रतिमा बनाओ, विशेषांक निकालो, विरोधियों पर प्रहार करो, वे उत्तर देंगे तो लोकप्रियता बढ़ेगी। जगह-जगह आउटलेट्स बनाकर अपने को स्थापित करो, खुद मुख्य पुजारी बन जाओगे। विरोधियों से टकराओ, विरोधियों को पंचर करने के लिए तेजतर्रार पंच लाइनें लिखो, वाट्सएपिया एडमिन बनो, फेसबुक पर छा जाओ, ऐसे काबिज़ हो जाओ कि सारे ताले तुमसे ही खुलें।"

चिपकन कला की दिव्य दृष्टि पाकर मैंने कहा - "तुम ज्ञानी हो, बेताल, चमत्कारी हो, मठाधीशी चक्रवूह के विशारद हो। अगर तुमने चिपकन कला का ज्ञान नहीं दिया होता तो मैं तुम्हें डाल से चिपकने नहीं देता।"



डॉ वेद व्यथित

बलरामगढ़ – हरियाणा

मो. 9868842688

भरोसे लाल का पुस्तक-प्रेम

मेरे मित्र भाई भरोसे लाल ने मुझे फोन पर सूचना दी कि अब वे बुढ़ापे में अच्छी पुस्तकें पढ़कर अपना समय बिताएंगे जिसके लिए वे लाइब्रेरी यानि पुस्तकालय से बहुत सारी किताबें ले आये हैं। मुझे भी अच्छा लगा कि चलो यह तो बहुत अच्छा हुआ। जैसे कोई फिल्म देखकर आये तो वह फिल्म की कहानी किसी दूसरे को सुनाने के लिए बहुत उतावला रहता है। चाहे कोई सुनना चाहे या न सुनना चाहे पर वह जबरदस्ती सुनाने पर तुला रहता है। यदि बीच में कोई और बात शुरू हो जाये या उसे मना कर दो फिर भी वह कुछ देर बाद फिर से सुनाना शुरू कर देता है। ऐसे ही मुझे भी उनका किताबें पढ़ना इस लिए भी अच्छा लगा कि वे खुद पढ़ कर उन किताबों का सारांश मुझे अवश्य बताएंगे नहीं तो उन्हें यह सब पत्तेगा नहीं और उनके ज्ञानी या विद्वान होने के बाद वे मुझ से ताश खेलने की जिद नहीं करेंगे और बिना बात की बातों पर बहस करके मेरा और अपना समय व्यर्थ नहीं करेंगे। और सब से बड़ी बात तो यह लगी की अब उनके और भाभी जी के बीच समय समय पर होने वाली राष्ट्रीय नॉंक-झोंक में मुझे दोतरफा या एक तरफा जज की भूमिका नहीं निभानी पड़ेगी और जब उन के यहां जाऊंगा तो उनकी महाभारत में श्री कृष्ण जी बन कर निपटाने के बजाय मुझे अब शरणम् गच्छ पार्थ की भूमिका में रहना पड़ेगा। और पहले तो चाहे मुझे समय हो या न हो पर फिर भी उन की लम्बी २ बहस के बाद ही चाय मिलती थी पर अब ऐसा शायद न हो क्योंकि अब इस की शायद गुंजाइश ही न रहे इस लिए चाय भी शायद शांति के साथ ही बन जाएगी और पी भी उसी तरह से जाएगी।

दूसरा मुझे यह लाभ भी होगा कि मैं ठहरा आलसी

आदमी क्योंकि मुझे शुरू से ही किताबें पढ़ने में आलस आकर नींद आ जाती थी। पर अब मुझे बिना पढ़े ही बहुत सारा ज्ञान भाई भरोसे लाल के किताबें पढ़ने पर आसानी से मिल जाया करेगा। क्योंकि यहां भारत में तो विद्या श्रुति परम्परा से ली जाती रही है इस लिए सुन-सुन कर मैं ज्ञानवान हो जाऊंगा क्योंकि जब वे किताब पढ़ेंगे तो मुझे भी उस में क्या लिखा है, यह सुनाएंगे जरूर नहीं तो उनके पेट में दर्द हो जायेगा। इस कारण मुझे उन की किताबें पढ़ने की इस धोषणा से बहुत खुशी हुई चाहे उन के घरवालों को न हुई हो।

मैं इसी खुशी में फूला उनके घर मिलने और बधाई देने पहुँच गया। मैंने वहां जा कर देखा मेरे मित्र भाई भरोसे लाल नाक पर आधे वाला चश्मा चढ़ाये बड़ी दार्शनिक मुद्रा बनाये ड्राइंग रूम के एक कोने में बैठे हैं और उनके आसपास कुछ किताबें रखी थीं पर वे सब की सब बंद थीं। वे उन्हें पढ़ नहीं रहे थे बस निहार भर रहे थे। मुझे देख कर वे बहुत प्रसन्न हए और अपने कितान पढ़ने के निर्णय की स्वयं ही प्रशंसा करने लगे। मैं काफी देर तक उनके द्वारा उनका गुणगान सुनता रहा। पर बीच-बीच में मैं चुपके से किताबों की ओर देख लेता और कोशिश करता कि उन पुस्तकों के शीर्षक क्या है परन्तु वे मुझे उनकी तरफ देखने का मौका ही नहीं दे रहे थे। परन्तु भगवान का धन्यवाद रहा कि इस बीच अखबार वाले हाँकर ने उन की दरवाजे की घंटी बजा दी और वे बाहर अखबार का बिल देने चले गए और इस बीच उनकी हाँकर से काफी देर तक बाकी खुले पैसे के



लिए राष्ट्रीय बहस होती रही। इस बीच मुझे उन पुस्तकों के शीर्षक देखने का अवसर मिल गया। मैंने देखा कि वे पुस्तकों में मनोविज्ञान से संबंधित थीं। परन्तु मैं उन्हें बचपन से ही जानता हूँ और उन के साथ ही पढ़ा भी हूँ तो मुझे पता है कि उन का मनोविज्ञान जैसी चीज से कभी कोई दूर का भी संबंध नहीं रहा है।

जब वे हॉकर से निपट कर आये तो मैंने स्वभाविक ही पूछ लिया कि भाई आपको यह मनोविज्ञान पढ़ने का शौक कैसे लग गया और आप मनोविज्ञान पढ़कर अब किस का मनोविज्ञान जानना चाहते हैं। अब तो आप भाभीजी की सब बात और भाभीजी आपकी सब बातें जानने ही लगी होंगी, परन्तु मेरी बात को सुनकर वे बोले कि आपकी यह बात अर्धसत्य है यानी आपकी आधी बात ही ठीक है। मैं उनकी बात समझा नहीं सका और असमनंजस में पड़ गया कि अभी तो उन्होंने मनोविज्ञान की पुस्तकें पढ़नी भी शुरू नहीं की हैं परन्तु बातें वे अभी से मनोवैज्ञानिक जैसी करने लगे हैं। मेरे असमंजस को शायद वे समझ गए तो उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाते हए मेरी भूल को अपनी तरफ से ही सुधारते हए कहा कि आपकी बात आधी ही सच है, पूरी नहीं, क्योंकि तुम्हारी भाभी तो मेरी सब बातें आराम से जान जातीं हैं पर मैं उनके मन की एक भी बात नहीं जान पाता हूँ। पता नहीं कैसे उन्हें मेरे मन की सब बातें पहले ही पता चल जातीं हैं। जब मैं तुम्हारे पास आने की सोचता हूँ और तैयार होने लगता हूँ तो वे पहले से बता देतीं हैं दोस्त के पास जा रहे होंगे। उन्हें पता नहीं कैसे पता चल जाता है कि मैं आप से मिलने लिए तैयार हो रहा हूँ। परन्तु उनका कब कहाँ का प्रोग्राम बन जाये मुझे पता ही नहीं चलता है। तो मुझे भी उनके मन की बात समझने के लिए मनोविज्ञान पढ़ना पड़ रहा है, ताकि मैं भी उनके मन की बात जान सकूँ।

अब मेरी समझ में आ गया कि भाई भरोसे लाल का मनोविज्ञान पढ़ने का कारण क्या है परन्तु मुझे उनके भोलेपन पर तरस भी आया कि भला आज तक भला कोई अपनी पत्नी के मन की बात को ठीक से समझ पाया है? या क्या कोई महिला का मनोविज्ञान आज तक समझ सका है? मैं तो अभी तक नहीं जान सका हूँ और मैंने शास्त्रों के विषय में भी यही सुना है शायद स्त्री के मन की बात तो स्वयं स्त्री की रचना करने वाले ब्रह्माजी भी नहीं समझ सकें क्योंकि यदि भगवान शिव को यह पता होता कि सती जी इतना बड़ा काण्ड करने वालीं हैं तो किसी भी तरह उन्हें उनके मायके जाने से रोक लेते। परन्तु वे तो बेचारे भोले भंडारी थे अब उन्हें क्या पता कि उन की अर्धांगी क्या क्या कर सकतीं हैं। वे भला उनके मन की बात कैसे जान पाते क्योंकि आज तक स्त्री के मन की बात कोई नहीं जान सका तो मेरे मित्र भरोसे लाल की भला क्या औकात जो वे अपनी पत्नी की बातें जान सकें चाहे। वे मनोविज्ञान की कितनी ही पुस्तकें क्या ग्रंथ के ग्रंथ पढ़ लें तो भी वे अपनी पत्नी के मन की बात नहीं जान सकेंगे। पर मैंने सोचा कि चलो इनका भ्रम भी दूर हो जाने दो। मेरे मना करने से भी वे मानेंगे थोड़े ही। संभव है इन पुस्तकों को पढ़कर वे अपना मनोविज्ञान बदल कर अपनी पत्नी से सामजस्य बिठा लें, इसलिए मैंने उन्हें और भी प्रोत्साहित किया कि वे निरंतर पुस्तकें पढ़ते रहें।



भ्रष्टाचारियों के मौलिक अधिकार

भारत के संविधान में नगरिकों के लिए कुल 6 मौलिक अधिकार और 11 कर्तव्य हैं। यह और बात है कि लोगों को केवल अपने अधिकारों और उनकी रक्षा का ही पता है, कर्तव्यों की सूची का नहीं। खैर, सूची से याद आया कि हाल ही में हरियाणा सरकार के किसी मंत्री ने भ्रष्टाचारी पटवारियों की एक सूची बनवाई जिसे कुछ अति उत्साही अधिकारियों ने मंत्रीजी की वाहवाही बटोरने के इरादे से लीक करके आफत मोल ले ली है। अब वे कोर्ट के चक्रर लगा रहे हैं। असल में, अपनी ईमानदारी और कर्तव्य परायणता के लिए ख्यात पटवारी अपने अपमान से जुड़े इस मामले को हाईकोर्ट तक ले गए जो अब उनके मौलिक अधिकारों की रक्षा करने के लिए सुनवाई कर रहा है।

मुद्दा यह नहीं है कि किसी सम्मानित कर्मचारी को अपना नाम भ्रष्ट लोगों की सूची में देखकर कितनी पीड़ा हुई होगी बल्कि मुद्दा यह भी है कि कोई इस देश में भ्रष्टाचार के बारे में ऐसा दुःसाहस कैसे कर सकता है? इतिहास गवाह है कि देश में करोड़ों रुपए का घोटाला करने वाले नेता तथा बड़े पदों पर आसीन नौकरशाह आज तक क्या किसी बड़ी सजा के हकदार बने? किसान, मजदूर अथवा अन्य जनसामान्य से जुड़े लोगों को डराकर, उनके काम अटकाकर कितने सरकारी कर्मचारी माल काटते रहे हैं, आज भी काट रहे हैं, उनमें से आज तक कितनों को उनके कुकर्मां की सजा समय पर मिली है? एक बेचारा अदना सा कर्मचारी पटवारी ही मिला था सूची बनवाने के लिए? कौन कहता है कि पटवारी भ्रष्ट होता है, वह तो इतना बुद्धिमान और दरियादिल होता है कि पहले तो वह रिश्वत लेगा ही कैसे क्योंकि वह जब भी ढूँढ़ोगे तो अपनी सीट पर बैठने का समय ही कहां पाता है? जमीन की नापजोख के लिए उसे अक्सर कार्यालय से बाहर ही रहना पड़ता है, अरे गलत मत समझो भाई, घर या इधर-उधर नहीं, बल्कि झूटी पर ही। यदि कभी सुकून से सीट पर बैठ भी जाए तो वह बंदे को देखकर ही जमीन से जुड़े उसके मामले को ताड़ लेता है और उसके घर पहुंचने से पहले ही जमीन का

सुरेश चंद शर्मा,
फरीदाबाद-हरियाणा
मो. 9953091619

इंतखाब या कोई भी ऐसा ही दूसरा मामला रजिस्टर में दर्ज कर देता है। लोग हैरत में पड़कर यह सोचने लगते हैं कि क्या पटवारी हाड़ मांस का बना कोई जीवित सामान्य मनुष्य है अथवा कोई देवता जो बिना रिश्वत लिए उनके कार्यों को 'हुक्म मेरे आका' कहकर चुटकियों में पूरा कर देता है! अब ऐसे देव तुल्य कर्मचारी को भ्रष्टाचारी कहना और कहना ही क्या उसकी सूची बनवाना घोर कलयुगी कृत्य का उदाहरण नहीं तो और क्या है?

एक पल के लिए मान भी लिया जाए कि किसी पटवारी ने किसी किसान से थोड़ी बहुत सेवा मांग भी ली हो तो क्या यह भारत की कोई अनहोनी घटना हो गई? क्या कोई पहाड़ टूट गया या धरती रसातल में समा गई? आखिर वह भी समाज का एक सम्मानित धनी प्राणी तथा एक सरकारी कर्मचारी है जिसके सम्मान की रक्षा हेतु उसे भी मौलिक अधिकार मिले हुए हैं। क्या अन्य नागरिकों की तरह किसी भ्रष्ट अधिकारी-कर्मचारी अथवा नेता के मौलिक अधिकार कोई मायने नहीं रखते? वैसे भी प्रायः अदालत के विषय में यह सुनने में आता है कि चाहे सो अपराधी बरी हो जाएं किंतु एक निर्दोष व्यक्ति को सजा कदापि नहीं होनी चाहिए। अब ऐसे में जब तक मामला कोर्ट में न जाए, सौ-डेढ़ सौ तारीख नहीं लगें, वकीलों में लंबी चौड़ी जिरह न हो, 25-30 साल का समय नहीं लगे तो क्या किसी सत्पुरुष को भ्रष्टाचारी कहकर उसका सम्मान खतरे में डालना न्यायोचित होगा? कदापि नहीं!

इस देश पर मिलावट खोरों, रिश्वतखोरों, जमाखोरों सहित सबका समान अधिकार है, संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार भी सबके लिए हैं, अतः आइंदा किसी भी मंत्री-संतरी को भ्रष्टों की सूची बनवाने की ऐसी हिमाकत सोच समझकर करनी चाहिए वरना जनता अगली बार चुनाव में उसे सत्ता से चलता कर देगी।



राकेश वामन्या

इंदौर-मध्यप्रदेश

मो. 9650109938

संस्मरण - अमरनाथ यात्रा

यह बात अप्रैल 2000 की है। उन दिनों मेरी पोस्टिंग इंदौर में थी ..शादी के बाद सही अर्थों में घुमक्कड़ी के उद्देश्य से कहाँ बाहर निकलने का मूड हुआ तो श्रीमती को अपने मंतव्य से अवगत कराया। संशय इसी बात को लेकर था कि घूमने कहाँ जाया जायें, श्रीमती ने जो पहला विकल्प सुझाया अंततः वही (अमरनाथ यात्रा) फाइनल हुआ। हालाँकि उन दिनों श्रीनगर में आतंकवाद अपना सर उठा चुका था पर हम भी पीछे हटने वालों में से नहीं थे। इंदौर के ही शिव शक्ति सेवा समिति के माध्यम से पंजीकरण प्रक्रिया का आवेदन फार्म भर दिया। तब तक मैं अपनी कंपनी हिंदुस्तान पेट्रोलियम के सौजन्य से एक बार हवाई यात्रा का आनंद उठा चुका था लेकिन श्रीमती जी को यह सौभाग्य नहीं मिला था, सो यह तय हुआ कि यह सफर हवाई यात्रा से ही पूरा करेंगे लेकिन जब बजट का गुणा भाग तैयार किया तो यह तय हुआ श्रीनगर जाने के लिए फ्लाइट और लौटने के लिए ट्रेन से यात्रा की जाएगी। जोस ट्रेक्सल्स के मार्फत यात्रा के चारों टिकिट बुक करा लिए। शिव शक्ति सेवा समिति के निर्देशों के अनुसार यात्रा हेतु आवश्यक संसाधन जुटा लिए गए। शीघ्र ही यात्रा की तिथि भी आ गई। जब मैं जींद हरियाणा की पोस्टिंग पर था तो वहाँ श्रीनगर का एक लोकल लड़का मुजफ्फर अहमद इंजीनियरिंग पास करके अधिकारी प्रशिक्षण ट्रेनिंग बनकर आया था और करीब 15 दिन मेरे घर पर ही रुका था। वह उन दिनों पुलवामा मेरा था सो उससे टेलीफोन पर बात करके श्रीनगर और पहलगाम के कुछ संपर्क सूत्र हासिल कर लिए। यात्रा के बारे में जो भी धर्मप्रेमी पहले अमरनाथ यात्रा कर चुके थे उनसे अनुभव जानना चाहा तो सबने बहुत अच्छा अच्छा बताया और यहाँ तक बताया कि अमरनाथ यात्रा में चंदनवाड़ी से पिस्सूटाप, शेषनाग और

पंचतरणी होते हुए चार दिन का ट्रेक है जहाँ रास्ते भर लंगर और ठहरने की मुफ्त सुविधा शिवभक्तों द्वारा की जाती है। हमने इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था की और अंततः इंदौर से शाम की फ्लाइट पकड़ कर दिल्ली रवाना हो गए। जब फ्लाइट जयपुर के उपर से गुजरी तो श्रीमती जी को जमीन पर असंख्य दीपों से टिमटिमाते शहर को देखकर घोर आश्र्वर्य हुआ। फ्लाइट में जो भोजन मिला वह पेट भरने के लिए पर्याप्त था। दिल्ली पहुँचकर एयरपोर्ट से निकलते-निकलते रात के दस बजे चुके थे और एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही हमें गर्म हवा के थपेड़ों ने परेशान कर दिया। चूँकि दिल्ली से श्रीनगर की फ्लाइट अगले दिन सुबह की थी तो रात दस बजे से सुबह 4 बजे तक का समय हमने एयरपोर्ट के बाहर बारी बारी झपकी लेकर निकाला। खैर, फ्लाइट के दो घंटे पहले एयरपोर्ट में घुसने की अनुमति मिली। दिल्ली से श्रीनगर तक का पूरा सफर खिड़की से बर्फ आच्छादित पहाड़ों के देखते हुए बीता। फ्लाइट में हल्का फुल्का नाश्ता मिला जिसे नाश्ता कहना ही उचित होगा। फ्लाइट नियत समय पर श्रीनगर उतरी और वहाँ से हमने टैक्सी लेकर अपनी पहलगाम तक की यात्रा पूरी की। दिन में पैदल ही थोड़ा बहुत पहलगाम घूमे। एक रात पहलगाम में होटल में गुजारने के बाद अगली सुबह चैक आउट करने से पहले अपना सामान दो हिस्सों में विभाजित कर लिया था। एक हिस्सा हमें अमरनाथ तक अपने साथ ढोना था और दूसरा हिस्सा जिसमे मुख्यतः कपड़े और पैसे थे, पहलगाम में एक डीलर के पास ही छोड़ना था। चूँकि चंदनवाड़ी से अमरनाथ गुफा तक सारी सुविधायें लगभग मुफ्त ही मिलनी थीं सो हमने अपने पास पूजा प्रसाद के बास्ते कुछ रूपये रखे और बाकी रकम अपने कपड़ों के साथ लगेज में



पहलगाम में डीलर के पास ही छोड़ दी। पहलगाम से चंदनवाड़ी वाली बस के लिए खूब भीड़ थी। लम्बी लाइन से बचने के लिए जब श्रीमती जी ने पार्क की करीब 10 फुट ऊंची रैलिंग वाली दीवार फाँदी तो एक पल को मुझे अपनी आँखों पर भरोसा ही नहीं हुआ पर मैंने भी किसी तरह यह टास्क पूरा किया। श्रीमती जी को तो बस के अंदर जगह मिल गयी पर मुझे बस की छत पर अन्य यात्रियों के साथ सफर करना पड़ा। बस की छत से मुझे कश्मीर के नजारे बहुत ही लुभावने लग रहे थे। कुछ देर में हमारी बस चंदनवाड़ी में रुकी। मेले जैसा माहौल था हर तरफ भोले के जयकारे लग रहे थे और लंगरों से विभिन्न पकवानों की खुशबू आ रही थी और लोग हाथ जोड़ जोड़कर भक्तों से प्रसाद ग्रहण करने की गुहार लगा रहे थे। हमने भी हल्का फुल्का प्रसाद ग्रहण किया, चाय पी और यात्रा प्रारंभ स्थल पर पहुँचे। हमारे अनुमति पत्र चैक हुए और हम बम बम भोले के जयकारे लगाते हुए अपनी पैदल यात्रा पर निकल पड़े। पिस्सू टाप तक पहुँचते पहुँचते ही हमारी हालत पतली हो गयी थी। एक लंगर पर जमकर प्रसाद (छोले भट्ठे और हलवा) खाया और दोनों ने अपना सामान सिरहाने रखकर पेड़ों की छाँव में घंटे भर खराटि मारे। एक घंटे की नींद ने खूब सारी उर्जा दी और हम फिर आगे चल पड़े। रास्ते में एक दो जगह हल्की बारिश ने जरूर रुकने पर मजबूर किया पर रुकने के लिए हमारे पास कोई छत या ओट नहीं थी, केवल छाते का सहारा था। जहाँ तक मुझे याद है हमें रास्ते में एक छोटी सी उथली नदी भी पार करनी पड़ी थी जिसका पानी बर्फ जैसा ठंडा था। हमारा पहला रात्रि विश्राम शेषनाग पर था, सो हम चाहते थे कि जितनी जल्दी हो सके, शेषनाग पहुँचा जाये ताकि हमें टेंट में आसानी से जगह मिल जाये। इस आपाधापी में हम दोनों बिल्लुड गए पर करीब आधा घंटे की खोज पड़ताल के बाद हमारा पुनर्मिलन हो गया था। हमने टेंट में शरण ली और उस टैट में लगभग 25 से 30 लोगों को सट सटकर सोना पड़ा। सुबह उठे तो कई लोग अपनी चप्पल और छड़ी ढूँढ़ते नजर आये। भला हो श्रीमती जी का कि उनके कहने पर हमने अपनी चप्पल अपने सिरहाने और

छड़ी अपने बिस्तर के नीचे रख ली थी। सुबह फ्रेश होकर हमने लंगर में नाश्ता खाया और आगे की यात्रा पर निकल पड़े। राह भी अब संकरी और थोड़ी कठिन हो चली थी। साथ चल रहे खच्चर वालों ने बताया कि यदि कोई इंसान या कोई खच्चर सवारी सहित फिसले तो फिर लाश मिलने की उम्मीद करना बेमानी है क्यूंकि खार्ड बहुत गहरी है। भगवान का नाम लेते आगे बढ़ते रहे और जहाँ कहीं भी जरा भी असहजता महसूस हुई तो जेब से कपूर की डली निकाल कर सूँघ लेते थे जिससे काफी राहत मिलती थी। सफर के इस हिस्से में लंगर नजर नहीं आये तो हमने अपने बैग में रखे ड्रायफ्रूट्स से अपनी भूख मिटाई। शाम होते होते हम पंचतरणी पहुँच चुके थे जहाँ पर काफी लंगर भी थे और टेंट भी। पंचतरणी से अमरनाथ गुफा मात्र 4-5 किलोमीटर ही रह जाती है। एक बारगी तो विचार आया कि रात्रि विश्राम गुफा के पास ही करेगे पर पाया कि सुरक्षाकर्मी शाम 6 बजे के बाद श्रद्धालुओं को आगे जाने की अनुमति नहीं दे रहे हैं तो हमने शेषनाग की तरह पंचतरणी में भी अपनी रात काटी। थकान खूब थी तो नींद भी खूब आयी। सुबह उठे तरोताजा होकर लंगर में चाय नाश्ता लिया और निकल पड़े गुफा के अंतिम पड़ाव की तरफ। गुफा के कुछ पहले ही हमें कलकल बहती नदी नजर आयी तो अपने आप को स्नान से रोक नहीं सके। पानी नहीं बहता हुआ तरल बर्फ था पर हमने हिम्मत नहीं हारी। एक दूसरे का हाथ पकड़ा एक एक हाथ से नाक बंद की और झटपट दो तीन डुबकी मारी। एक चट्टान के पीछे खड़े होकर श्रीमती जी कपड़े बदल रही थी तभी पहाड़ से पत्थरों के टुकड़ों की बारिश सी चालू हो गयी। लोग चिल्लाये कि चट्टान के नीचे छुप जाओ और हमने उनका कहा तुरंत मानते हुए अपनी जान बचायी। जब माहौल शांत हुआ तो हम चट्टान के नीचे से निकल कर बाहर आये, टावेल से अपना शरीर पोंछा, कपड़े बदले, इसके बाद जैसे ही मैंने श्रीमती जी को और श्रीमती जी ने मुझे देखा तो हम एक दूजे को पहचान ही नहीं पाये



क्यूंकि कोल्ड बर्न के कारण हमारे चेहरे की त्वचा नाक और गाल से गल कर निकल गयी थी। हमने ईश्वर का विधान मानकर इसे स्वीकार किया और चल पड़े गुफा की तरफ। गुफा तक पहुँचे तो देखा कि करीब 2 किलो मीटर लम्बी लाइन लगी हुई है। ईश्वर के द्वार पर पहुँचकर इतनी लम्बी लाइन हमें परेशान कर रही थी तभी श्रीमती जी को बीएसएफ के दो जवान सामने से आते हुए दिखे। श्रीमती जी ने उनको जयहिंद कहकर हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया तो वे प्रसन्न हो गए। श्रीमती जी ने करुणामय मुद्रा में जब उनसे बाबा के दर्शन कराने में मदद मांगी तो वे इंकार नहीं कर सके। अपने साथ वे हमें अपने टेंट में ले गये। दरअसल उनका लंच ब्रेक हुआ था उन्होंने हमें लंच शेयर करने का भी ऑफर दिया पर हमने बताया कि हम लंगर से कुछ देर पहले ही चाय नाश्ता खाकर चले हैं तो उन्होंने अपने थर्मस से हमें गरमागरम चाय पिलाई। लंच के बाद हम उनके पीछे चलते चलते गुफा तक पहुँच गये जहाँ पर उन्होंने हमे बाहर जाने वाले गेट से मंदिर में प्रवेश कराया। हमने BSF जवानों के सौजन्य से लगभग आधा घंटा गुफा में बिताया और ईश्वर का ध्यान लगाया। जी भरकर दर्शन लाभ लेकर हमने उन जवानों का हृदय से आभार जताया। गुफा से कुछ ही दूरी पर एक सीमेंटेड हाल बना हुआ था जिसमें करीब 300 लोग रात बिताने के लिए रुके हुए थे, हम भी वहाँ घुस लिए। तीन दिन तक लगातार पहाड़ों पर चलना वास्तव में बहुत दूभर होता है। हम जो दो तीन सौ रुपये साथ में लेकर चले थे वे पूजा प्रसाद में खत्म हो चुके थे और हम पूर्णतः ठनठन गोपाल बन चुके थे। रात में सोने से पहले श्रीमती जी ने जब कहा कि तीन दिन लगातार पैदल चलकर उनके पैर बुरी तरह दुख रहे हैं और अब उसी रूट से वापसी का पुनः उतना लम्बा सफर पैदल संभव नहीं है तो यह सुनकर मेरे भी हाथ पैर फूल गए और दिमाग विचारशून्य हो गया। ऐसी विकट परिस्थिति में क्या किया जाये? जब मैं फूटी कौड़ी नहीं बची, श्रीमतीजी के पैरों में ताकत नहीं बची तो अब क्या किया जाए... जेब टटोली पर्स निकाला तो पर्स में अपना हिंदुस्तान पेट्रोलियम वाला आई कार्ड नजर आया।

मैंने सकुचाते हुए आसपास नजर मारी तो अपने बाजू में ही 5 -6 लोगों का एक गृप दिखा। उनकी भाषा सुनकर मुझे लगा कि वे हरियाणा से हैं। उनमें से एक व्यक्ति से मैंने अपना आई कार्ड दिखाते हुए अपनी व्यथा व्यक्त की तथा आर्थिक मदद मांगी। उस बंदे की जिंदादिली देखिये कि उसने अपना पर्स जेब से निकाल कर मुझे पकड़ाते हुए कहा कि जितने चाहिये उतने निकाल लीजिये। मैंने सादर पर्स वापस करते हुए कहा कि मुझे मात्र हजार रुपये चाहिएं क्यूंकि श्रीमती जी के पैर की तकलीफ के कारण हमें बालटाल के रास्ते श्रीनगर पहुँचना है और हमारा सामान तथा पैसे पहलगाम में डीलर के यहाँ पड़े हैं। उन महानुभाव ने 100 - 100 के दस नोट मुझे पकड़ा दिए साथ ही तीन चार कॉच के गिलास और कुछ चम्मच भी गिफ्ट की। मैंने (धन वापसी हेतु) उनका नाम पता पूछा तो उन्होंने बताया कि उनका नाम शामलाल गोयल है और वे हिसार के रहने वाले हैं। मैंने उनका नाम पता नोट किया और फिर कुछ ही देर में सो गया। सुबह जब नींद खुली तो पाया कि शामलाल जी हमारे जागने से एक घंटा पहले ही उस विश्राम स्थल से रवाना हो चुके हैं। श्रीमती जी को तो रात का घटनाक्रम पता ही नहीं था, सुबह फ्रेश होकर चाय नाश्ता करके जब उन्हें रात के वाक्ये से अवगत कराया तो उन्होंने भोले शंकर का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हे उम्मीद थी कि बाबा कुछ न कुछ व्यवस्था जरूर करेंगे। वापसी यात्रा हमने बालटाल वाले रूट से शुरू की और सोनमर्ग होते हुए बस से शाम तक श्रीनगर आ गए। रात्रि विश्राम हेतु हम ठिकाना ढूँढ़ ही रहे थे कि अब्दुल गनी मट्टू नाम का एक शख्स हमारे पास आया और अपने हाउस बोट में रुकने का आग्रह करने लगा। हमने 300 रुपये प्रति दिन के हिसाब से स्टे तय किया और कहा कि पेमेंट चैक आउट पर करेंगे तो वह हमारा HPCL वाला। Card देखकर तैयार हो गया। हम उसके हाउसबोट पहुँचे और रात्रि विश्राम किया। अगले दिन सुबह उठकर फ्रेश हुए नाश्ता किया और तुरंत STD PCO ढूँढ़ने निकल पड़े। पास में ही STD बूथ मिल गया



सो वहाँ से पुलवामा एलपीजी प्लांट का नम्बर घुमाया और मुजफ्फर अहमद से बात की। उसे बताया कि हमारा सामान पहलगाम वाले डीलर के यहाँ रखा है और हम अपरिहार्य कारणों से बालटाल सोनमर्ग होते हुए श्रीनगर आ गए हैं। मुजफ्फर ने कहा सर जी आप बिल्कुल चिंता मत करिये आपका सामान यथाशीघ्र आपको मिल जाएगा। इतनी निश्चितता के बाद हमने एक आटो किया और दो तीन गार्डन मजे से घूमे। शाम को जब हाउसवोट पहुंचे तो पाया कि मुजफ्फर हमारा सामान लेकर बोट पर हमारा इंतजार कर रहा है। दरअसल फोन पर बात होने के बाद मुजफ्फर पुलवामा प्लांट से अपनी कार से पहलगाम गया और हमारा सामान पिक किया जिसे उसने शाम को हमें डिलीवर किया। मुजफ्फर ने घर चलने का बहुत आग्रह किया। हमारे मना करने पर उसने एक अच्छे ढाबे पर डिनर कराया। अगले दिन हम श्रीनगर के बाकी हिस्से घूमे थोड़ी बहुत शार्पिंग भी की। अंतिम दिन सुबह 8 बजे की फ्लाइट पकड़ कर नौ बजे दिल्ली आ गए। चूंकि इंदौर की ट्रेन शाम 4 बजे की थी तो सोचा कि चलो पालिका बाजार घूम आते हैं सो पूरा सामान लेकर नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन के क्लाकरूम में जमा कराया। हमारी टिकट देखकर क्लाकरूम वाला बंदा बोला कि साहेब थोड़ा समय से पहले आ जाना तो हमने कहा ठीक है जी, सामान जमा कराकर पालिका बाजार पहुंच गए और वहाँ से करीब 3 बजे वापस अपना सामान लेने नई दिल्ली स्टेशन के क्लाकरूम आ गए। सामान लिया और सूचना पट्टी की तरफ भागे, पता करने कि ट्रेन किस प्लेटफार्म पर आएगी पर हमारी ट्रेन का नाम नम्बर हमें कहीं नजर ही नहीं आया। करीब साढ़े तीन बजे चुके थे और हमारा सब भी खत्म हो रहा था सो हम टीटी रूम में एक टीटी के पास गए और अपना टिकट दिखाकर ट्रेन की जानकारी चाही। टिकट देखते ही वह चिल्लाया, साहब आपकी ट्रेन नयी दिल्ली से नहीं, निजामुद्दीन स्टेशन से है। जल्दी से वहाँ पहुंचो। हमने तुरत फुरत बाहर आकर एक आटो पकड़ा और उसके ड्राइवर से

लगभग हाथ जोड़ते हुए कहा कि जितनी जल्दी हो सके निजामुद्दीन स्टेशन पहुंचा दो। वह भी शायद स्थिति समझ गया था पर हमें 4 बजकर 5 मिनिट पर निजामुद्दीन स्टेशन पहुंचा पाया। किराया 80 रुपया बना था पर हमने 100 रुपये का नोट उसको पकड़ाया और प्लेटफार्म की तरफ भागे। रास्ते में कुली से पूछते पर पता चला कि ट्रेन 3 नम्बर प्लेटफार्म से छूटेगी। हम तीन नम्बर प्लेटफार्म तरफ भागे। किस्मत कहिये कि ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी थी। अपनी सीट पर पहुंचते पहुंचते हम पसीना पसीना हो चुके थे। करीब सवा चार बजे ट्रेन छूटी जो अगले दिन सुबह इंदौर पहुंची। घर पहुंचकर टीवी ऑन किया तो पता चला कि हमारे लौटने के अगले ही दिन चंदनवाड़ी में आतंकवादी हमला हुआ जिसमें अमरनाथ यात्रियों को निशान बनाया गया था। एक दिन के विश्राम के बाद मैंने शाम लाल गोयल के नाम एक हजार रुपये का ड्राफ्ट और हार्दिक आभार के शब्दों भरी चिट्ठी उनको प्रेषित करने का काम किया। तो यह थी मेरी पहली असली और चुनौती से भरी घुमक़ड़ी जिससे मैंने यह सीखा कि:

- * प्लान A के साथ प्लान B के बारे में भी सोचें और आपस में चर्चा करके सभी परिस्थितियों पर विचार करें और तैयारी करें।
- * जेब में हमेशा कुछ अतिरिक्त पैसे होने ही चाहिये जो आपात स्थिति में काम आ सकें।
- * बड़े शहरों में एक से अधिक रेल्वे स्टेशन होते हैं तो दो तीन बार चैक करें कि आपकी ट्रेन का नम्बर क्या है, ट्रेन कब चलेगी और किस स्टेशन से चलेगी।
- * सबसे बड़ी सीख यह कि यदि आप ईश्वर के दर्शन हेतु धार्मिक यात्रा पर जा रहे हैं तो सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दें वो आपकी समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करेंगे।
- * यात्रा में कभी किसी की मदद का मौका कर्तव्य नहीं चूँके आपके सुकर्म ही आपके पास लौटकर आयेंगे।



डॉ. केशव कल्पांत,
खुर्जा-उत्तर प्रदेश
मो. 9650992062

आदि और अंत

थप-थप
द्वार पर कौन है
मैं हूं जवानी
तुम्हारे पास आई हूं
एक संदेश लाई हूं

अरे, जवानी का
मुझसे सरोकार क्या है
दो विपारी दशाओं का
मिलाप क्या है
कहीं भूल कर तो
दूसरे द्वारे नहीं आ गई
नहीं, नहीं मैं ठीक द्वार पर आई हूं
साथ में जीने का सामान लाई हूं
द्वार तो खोलो
मैं तुम्हारे ही पास आई हूं

बहुत दूर थी लेकिन
क्यूं आज मेरे पास आई है
जीने की आस संग लाई है

बुढापे ने कुछ सोचकर
द्वार खोल दिया
उसकी आंखें पथरा गईं
साँस रुक सी गईं
बूढ़ी आंखें देखती रह गईं
जिस जवानी पर हजारों
दिल दीवाने होते थे
आज वही जवानी बुढापे
में ढलती जा रही है
काल चक्र के आगे
आदि से अंत
होती जा रही है।

बुढापे के लड़खड़ाते
कदम आगे बढ़े
पर सहसा द्वार पर
आकर रुक गए
और सोचने लगे
क्या जवानी आज मेरे
पास आई है
साथ में जीने का
सामान लाई है
जब मुझे जवानी
की चाह थी
तब वह मुझसे



जन जीवन की दशा - दिशा

गंगा प्रसाद यादव 'आत्रेय'

सुलतानपुर - उत्तर प्रदेश

मो, 9453066755

भावी जीवन पथ दशा, दिशा लगायें थाह।
लायें संबल हौंसला, भूलें कष्ट कराह॥

स्वेत पक्ष ही हों प्रबल, गौण रहें जो स्याह।
ऐसे शुभ व्यक्तित्व की, आभा बने गवाह॥

मन मानस स्थिर करें, बढ़े न द्रन्द प्रवाह।
शुद्ध रखें अंतःकरण, करें मलिनता स्वाह॥

दृष्टि द्वंके संयम बढ़ें, होंय मोह मद दाह।
सुख आये या दुःख बढ़े, निकले वाह न आह॥

करें मनन चिंतन भले, लिये ज्ञान की चाह।
पर किंचित यश श्रेय में, रहे न कोई डाह॥

रहें पूर्ण संतुष्ट नित, अपनी जीवन राह।
'आत्रेय' हर क्षण सुखद, लगें बारहो माह।
बिन मांगे देवें नहीं, कोई कहीं सलाह।
रखें अपेक्षा भी नहीं, लोग करें परवाह॥

मृत्यु पूर्व ही लें समझ, अपने जाह बेजाह।
दोषमुक्त आनंदमय, हों अपने में शाह॥

प्रभु प्रकृति में अंततः, पायें सहज पनाह।
सद्गति हो उपजे सुखद, अनुपम शांति अथाह॥



नेहा वैद,
नोएडा-उत्तर प्रदेश
मो. 97699 92656

छंद-

शरद चंद्र से अमृत बरसा रात पूर्णिमा आई है,
कृष्ण मुरारी की वंशी ने अद्भुत टेर लगाई है।
बृज-मंडल सखियों-संग 'नेहा' निकल रास-रस पीने को,
मनमोहन के हाथ हृदय की कुंजी आज थमाई है॥

श्री कृष्ण बांसुरी की धून से सखियों को निकट बुलाए हैं।
वैशाख-मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

गजराज सरीखा गोवर्धन, निर्मल-जल की धाराएं हैं
हो रहे शिखर भी उद्धासित, अल्हाद भरी कंदराएं हैं
सारस, कोकिल, मधुमत्त भ्रमर, अनुपम कलरव बिखराए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

कुंडों में मनहर फूल खिले, हैं नील-कमल-दल मन-लोभा
गोलोक की भूमि पृथ्वी पर नन्दन वन-सी अद्भुत शोभा
सब-भाँति सुशोभित वृदावन, राधा-वल्लभ मुस्काए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

सिर-मोर-मुकुट कानन-कुंडल, बनमाल, बांसुरी सोह रही
अभिनव जलधर-सम श्याम देह, पट-पीत, कमलिया मोह रही
पारंगत प्रेम-क्रीड़ा मोहन, सखियों के मन संकुचाए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

मण्डली बनाकर आई हैं श्रृंगार-युक्त बृज-बालाएं
प्रवीण वाद्य वादन में कुछ, कुछ नृत्य-निपुण गोपांनाएं
सज-धज मन-भाव लिए सखियाँ, श्री कृष्ण-चंद्र भरमाए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

मनमोहन रास रचाए हैं

वैकुण्ठ-स्वामिनी चिर-संगिनी, श्री राधा मधु मुस्कान लिए
मनमोहन-मन-मोहन-वाली, हैं दिव्य-रास प्रवेश किए
दर्शन से कीर्ति नन्दिनी के, श्री नन्दलाल हरषाए हैं।
वैशाख मास माधवी लता मनमोहन रास रचाए हैं॥

ज्यों श्याम-तमाल लता-स्वर्णिम, चपला जैसे घनमंडल-
संग

हैं विश्वमोहिनी श्री राधा, शोभित श्री कृष्ण प्रिय के संग
श्री राधा-मोहन की शोभा, रति-संग, नाथ रति आए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

गोपिन-संग जमुना-जल-विहार, परिधान लहर लहराय रहे
केशों से छुटकर पुष्प-गुच्छ, जमुना-जल शोभा पाय रहे
बांकी दृष्टि वृषभानु लली, मनमोहन आनन्द पाए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥

जितनी सखियां उतने मोहन, बहु-रूप धरे, नाचे-गाए
बज उठे झांझ, मिरदंग ताल, श्री कृष्ण सभी के चित छाए
'नेहा' दासिन की दासि प्रभु निज-नेह हृदय बरसाए हैं।
वैशाख मास माधवी लता, मनमोहन रास रचाए हैं॥



योगेंद्र कुमार

नोएडा-उत्तर प्रदेश

मो. 9871395282

दिशाहीन सभ्यता !

ठगा सा देखता हूँ
निज स्वार्थपूर्ति के लिए
बिखरते हुए घर
अहंकार की बेदी पर
टूटते हुए अनेकानेक रिश्ते
हृदय पर होते तीक्ष्ण संघात

एकाकीपन के तरंगाधात से
स्वयं से भी मुँह चुराती
अकुलाई हुई मानवता
लक्ष्यहीन राहों पर
छलनामयी मरीचिका
उस पर भ्रान्त सपनों की
बदहवास दौड़ की गाथा !

फिर विलुलित नेत्रों से देखता हूँ
सकुचाई हुई सुकुमारता
संवेदनाओं की बलि देती
कचोटती हुई नीरवता
दिखावेपन में प्रबल होती
अन्तर्मन की करुण व्यथा
तनाव-घिराव-फँसाव में झूबती
नवीनता का उद्घोष करती
एक दिशाहीन सभ्यता !!

शब्दातीत सौंदर्य

हिम-शिलाओं पर पड़ती
तेजोमयी सूर्य की अरुणिम किरणें
चमकती दमकती हैं कुछ ऐसे
मानो किसी अर्निंद्य सौंदर्यशाली
सलज्जता में डूबी नवयौवना की
नाग जैसी बेणी के सिरों पर
चमक रहे हों कांतिमय हीरे-पन्ने

या फिर किसी सुकुमार नायिका के
कोमल कपोलों पर प्रदीप हों
अत्यंत मनमोहक स्मित रेखायें
या फिर अभिसारिका नायिका के
शारीरिक सौंदर्य-सरोवर में
देदीयमान हों मद-विह्वल लहरें

या फिर किसी सजी-सँवरी कामिनी के
प्रेमातुर अरुणिम अधरों पर
पसर रही हों ज्योतिर्मय चेष्टाएं
प्रकृति ही रच सकती है ऐसे
शब्दातीत सौंदर्य की लकीरें !



डॉ उपासना दीक्षित

गाजियाबाद - उत्तर प्रदेश

मो. 9015292022

याद तुम्हारी आती है

जब जब देखूँ चांद गगन पर याद तुम्हारी आती है
भूली बिसरी हर एक गाथा मानस पर गहराती है॥

हर एक क्षण फिर बन जाता है एक रूपहली प्रेम कथा
इक क्षण रुकना, एक क्षण हंसना हृदय पर जादू कोई चला
सुखद स्वप्न की लहर सजीली, मन के तट लहराती है
जब - जब देखूँ चांद गगन पर याद तुम्हारी आती है॥

कितना प्यारा बन जाता है वह पथ जब हम साथ चले
हाथ थाम कर दूर देखना चलते जाएं बिना थके
हमें देख पवन फिर हंसकर आंचल को फहराती है
जब जब देखूँ चांद गगन पर याद तुम्हारी आती है॥

चेहरा कमल - सा खिल जाता है तुम सम्मुख अनुभव होते
उलझे वालों को सहलाते साथ में सपनों को बुनते
फिर वर्षा होती मुर्का की, जो दूरी पिघलाती है
जब जब देखूँ चांद गगन पर याद तुम्हारी आती है॥

शरद रात में

शरद रात में छत पर चंदा राह तुम्हारी देखेगा
है उदास फिर भी अमृत की किरणें तुम तक भेजेगा॥

इच्छा उसकी रही अधूरी देख सका ना वह तुमको
अब तो सारी रात अनमना, यादें सभी सहेजेगा॥

स्मृतियों की गहन चांदनी फैल जाए जब छज्जों पर
तब यह चंदा स्वप्न - देश की दूरी बैठ समेटेगा ॥

भावनाओं का ज्वार संभाला जाए न केवल उससे
आंखों में आंसू भरकर वो कैसे तुमको खोजेगा ॥

अनुबंधों का सच है दिखता और करो अब न वादे
कांच की गोली से कब तक यह खेल भला कोई खेलेगा॥

मन को नींव बनाकर हमने तय कर दी है परिभाषा
तन फिर ग्रहण लगाकर कैसे राहें अपनी रोकेगा॥

प्रेम भरा मन विपुल सम्पदा, शरद चांद समझाएगा
पर कोमल मन, कोमल मन है वह अपनी ही सोचेगा॥



नौका अपनी बिठलाऊं..

डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'राज'

गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश

मो. 9868958706

भव सिंधु यदि पार करोगे, नौका अपनी बिठलाऊं।
कौशल नंदन हे रघुनंदन, पीर हृदय की बतलाऊं॥

सुना है तेरी पग रज पाकर, पाहन नारी बन जाती।
छूने भर से धनु को तेरे, धरती कंपित रह जाती॥
कैसे मन को समझाऊं, या सुनकर नौका पर लाऊं।
भव सिंधु यदि पार करोगे, नौका अपनी बिठलाऊं.....।१।

सबके मन की गह लेते हो, विनय हमारी आज सुनो।
चरण पखारुंगा पहले मै, चाकर अपना नाथ चुनो॥
लघु कुटुंब को पाल रहा हूं, ज्ञांकी कैसे दिखलाऊं।
भव सिंधु यदि पार करोगे, नौका अपनी बिठलाऊं.....।२।

वचन पालना रीति है कुल की, चले दनुज करने संहार।
सिया लखन भी साथ तुम्हारे, चले छोड़ पीछे परिवार॥
मै तो नाव खिवैया केवल, कैसे समुख टिक पाऊं।
भव सिंधु यदि पार करोगे, नौका अपनी बिठलाऊं.....।३।

बीच भंवर में छोड़ न देना, दयासिंधु हे खेवनहार।
उतराई तुमसे नहीं लुंगा, हे मर्यादा पालनहार॥
गंगे मैया भी आतुर हैं, धो कर चरण छू पाऊं।
भव सिंधु यदि पार करोगे, नौका अपनी बिठलाऊं.....।४।



डॉ० भावना कुँअर,
आँस्ट्रेलिया
संस्थापक, संपादक-आँस्ट्रेलियांचल

ग़ज़ल

किया था वादा तो उसने मगर नहीं आया
छुड़ा के हाथ गया फिर इधर नहीं आया

कड़ी है धूप बहुत पाँव भी तो ज़रूमी हैं
उगर ये कैसी हैं जिसमें शजर नहीं आया

लिखे थे उसको कई ख़त बड़ी ही शिद्दत से
जवाब उसका अभी तक भी पर नहीं आया

कहीं पे अश्क गिरे ख़बाब भी तो टूटे हैं
क्या कोई दिल है कि तूफ़ाँ जिधर नहीं आया

जो उसने वक्त दिया था मिलेगा हमसे वो
हमारे सामने वो ही पहर नहीं आया

जहाँ पे जिंदगी चैन-ओ-सुकूँ से कट जाए
नज़र में ऐसा कोई भी नगर नहीं आया

पुकारती है तुझे 'भावना' ये राहों में
न मुड़के देखेगी फिर तू अगर नहीं आया

ग़ज़ल

किया था वादा भी उसने मगर नहीं आया
उधर गया है वो जबसे इधर नहीं आया

सफ़र है धूप का और पाँव में भी छाले हैं
ये कैसी राह है जिसमें शजर नहीं आया

लिखे थे उसको कई ख़त बड़ी ही शिद्दत से
जवाब उसका अभी तक मगर नहीं आया

गिरें हैं अश्क मेरे ख़बाब ऐसे टूटे हैं
हयात में कोई पल मोतबर नहीं आया

किया था वक्त मुकर्रर तो मिलने का हमसे
वो वक्त और कभी वो पहर नहीं आया

जहाँ पे जीस्त ये चैन-ओ-सुकूँ से कट जाती
सफ़र में ऐसा कोई भी नगर नहीं आया

पुकारती रही तन्हा तबील राहों में
वो 'भावना' तो मगर लौट कर नहीं आया



अलका शर्मा,
नोएडा-उत्तर प्रदेश
मो. 8755722357

दोहा गीतिका

ग़ज़ल

पेड़ों, पौधों आदि से, जीवन है गुलजार।
मानव जीवन इन बिना, बेवस है बेज़ार।

वर्षा, वायु, हरीतिमा, पर्यावरण सुशांत,
पेड़ों से ही है सुलभ, धरती का शृंगार।

सुमन-सुरभि, फल, सब्जियाँ, चाहें सब भरपूर,
काटेंगे वन तो पलट, प्रकृति करेगी वारा।

प्रभु का हैं उपहार ये, हैं अमोघ वरदान,
कुदरत ने सज्जित किया, सुंदर ये संसार।

करते हैं सब प्रण यही, रोपेंगे नित पौध,
जगती को जिससे मिलें, खुशियाँ अपरम्पार।।

क्या होगा अब जीकर यारा, जीने के अरमान नहीं।
थामे हैं आवे हयात पर, पीने के फरमान नहीं॥

सबको कल्याणार्थ जगत के, करनी थी मिलकर पूजा
सामां तो थे सभी इकट्ठे, पता चला यजमान नहीं॥

अंधी दौड़ मची तो सबने, भौतिक संसाधन जोड़े
भूल गया इंसान मगर ये, वो कोई भगवान नहीं॥

तारीफों के पुल बांधे थे, जाने किस किसने कितने
कौन सगा है कौन नहीं है, कर पाए हम भान नहीं॥

जाने कितने सपने टूटे, किरच किरच कर बिखर गए
लगता 'अलका' की टूटन से, शायद वो अंजान नहीं॥



शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

वाराणसी-221005 उ.प्र.

मो. 9412212255

एक पर्वत गल रहा है

आ गया जाड़ा

आ गया जाड़ा

बनी है धूप

मुँहबोली बहन।

कमर में लहँगा लपेटे

जा रही गरमी

या कि मौसम को मिली है

तपन से नरमी

सज गया मेला

हुआ है अधम

रावण का दहन।

हँस रही उन सूर्यमुखियों
के सिरों की पत

जानता वह ढाक अब कुछ

समय की भी गत

आ रही है धून

कलरवी आंचलिक

साड़ी पहन।

लग रहा है कुंभ कोई

गाँव का हर दर

धूंध कुछ ओढ़े हुए हैं

नदी नाले सर

लिख रही नवगीत

अब प्रारब्ध की

कोई कहन।

समय अपना काम करता

चल रहा है

पल-पहर दिन-रात होकर

पल रहा है।

गाँव अपने बैल को

नहला रहा है

पेड़ पत्ते जो नए

सहला रहा है

खंजनों के

घोंसलों में जाग है

और कलरव भी उन्हें

बहला रहा है

एक सागर भर रहा है

एक पर्वत गल रहा है।

लग रहे हैं पेड़ तो कुछ

कट रहे हैं

दूर हटते लोग तो कुछ

सट रहे हैं

ऐक्य परिवारों के

दिन हैं लद गए

बात से अपनी बहुत हम

नट रहे हैं

एक दीया बुझ रहा है

एक दीया जल रहा है।

दिन किरण से बात करते

आ रहा है

'आज' भागा धूप के सँग

जा रहा है

क्षितिज का जो नील-सा

गुंबद बना है

अब पर्पीहा राग भैरव

गा रहा है

सुबह सूरज उग रहा है

शाम सूरज ढल रहा है।



स्वरणेंद्र

कुछ रशियां जब मौन से
हैं चीरती आकाश को
वो खेलती फिर धरा पर
हैं बिखरती प्रकाश जो

हो प्रफुल्लित मन मेरा
फिर बोलता स्वर्णेंद्र से
तेरी कला व दिव्यता
छिपी मनुज न विश्वेन्द्र से

ये दिवा क्या ये रात्रि भी
तेरी कला से जागती
है चंद्र में तेरी छवि
जो सब दिशाएं ताकती

तेरा बड़ा उपकार है
वसुधा से अद्भुत प्यार है
अमृत जो पीता क्षीर से
हर जीव का आधार है

ज्यों स्वर्ण तेरा वर्ण है
व शुद्ध अंतःकर्ण है
दिग है भरा मयूख से
पथ तेरा अग्निवर्ण है

स्वर्णों में अद्भुत स्वर्ण है
कौतेय में तू ही कर्ण है
हर कल्प को तू पर्ण है
पथ तेरा अग्निवर्ण है

पूर्णिमा संघी बंसल “इमा”

मोदीनगर-उत्तर प्रदेश

मो. 8477000321

भावों के मोती

मेरा हर भाव एक मोती,
पिरोँगे प्रेम धागे में,
ये धागा रेशमी डोरी
है रिश्ते की बड़ी नाज़ुक।

हैं नाज़ुक तो ये मोती भी,
जिन्हे बांधा है रिश्तो ने,
न टूटे, न पड़े गाठें,
सँजोया है यूँ रहकर चुप।

है चुप रहना मेरी आदत,
तो इसमें क्या बुराई है?
कला हर भार सहने की,
धरा से मुझमें आई है।

है आई तो वो हलचल भी
जो पर्वत चीर देती है,
मगर फिर झाँक कर देखो
तो सूनेपन कि खाई है।

ये सूनापन तो हालांकि
छुए अब सारी ऊँचाई,
कभी सूना लगे अम्बर,
कभी सागर की गहराई।

कि गहराई में सागर की,
हजारों सीपियाँ रहतीं,
बनाकर भावों के मोती,
हैं मुझसे बस ये कहतीं।

हैं कहती आओ ले जाओ,
न रुकना बात ये सुनकर,
बहुत अनमोल मोती हैं,
तो ले जाओ इन्हें चुनकर। ***



डॉ. शारदा प्रसाद

रामगढ़ कैट ज्ञारखंड, भारत

शरद पूर्णिमा की रात

शरद पूर्णिमा की रात है
लक्ष्मी पूजा की रात ...!
श्री लक्ष्मी अवतरित हुई
लिए सौभाग्य सौगात...!!

आज खिला है चंद्रमा
सोलह कला के साथ...!
खीर भी अमृत बने
ले चंद्र किरण का साथ...!!

गोपियों संग कृष्ण ने
रचाया सुभग महारास...!
प्रेम की सौगात और
दिया हास-उल्लास...!

कोई कहे शरद पूर्णिमा
कोई कहे कोजागरी...!
आई माँ लक्ष्मी जगत में
लिए अमृत की गागरी...!!

पुलकित धरा का कण-कण
दामन में कलियों का वास है...!
बिछे हैं स्वागत में हरसिंगार
झीलों का दर्पण खास है...!!



वंदना कुँअर रायज़ादा,
गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश
मो. 9582502722

ग़ज़ल——

करने हैं दुश्मन के इरादे हमको चकनाचूर
आज नहीं है दोज़ख इससे देखो ज़्यादा दूर

बहुत दे चुके हम संदेश अमन का दुनिया को
समय आ गया हैं जवाब देने को हम मजबूर

जैसा भी वर्ताव करेगा वैसा भोगेगा
इन्तज़ार में बैठी हैं जन्मत में सारी हूर

नामों निशाँ मिलेगा न दुनिया के नक्शे में
कोशिश कर ले चाहे जालिम तू अपनी भरपूर

लगे बदुआ तुझको उन सारी माँ बहनों की
जिनका मिटा सिंदूर गया जिनकी आँखों का नूर

अब तू रोक न पायेगा इस हिन्द की सेना को
तुझे मिटाकर होगा पूरा “आपरेशन सिन्दूर”

एक शहीद की पत्नी की मनोदशा——

बिन तुम्हारे अधूरा है संसार ये
तुम ही तो मेरे प्यारे परम मीत हो
तुम न हो तो है सूना ये जीवन मेरा
तुम ही तो मेरी शाश्वत अमर प्रीत हो।

शब्द हैं मौन नैनों में आँसू भरे
मेरा व्याकुल ये मन कैसे धीरज धरे
तुम गये तो गया मेरा श्रृंगार सब
मेरे सपने गये आज बस हार सब
मिट गये देश पर तुम मेरी जीत हो।

बिन तुम्हारे अधूरा है संसार ये
तुम ही तो मेरे प्यारे परम मीत हो।

रास्ता देख बूढ़ी ये आँखें थकीं
यादें तेरी वो बचपन की मन में बसीं
कौन थामेगा लाठी यही सोच है
आज माँ बाप के मन पे ये बोझ है
रह गया जो अधूरा वही गीत है।
बिन तुम्हारे अधूरा है संसार ये
तुम ही तो मेरे प्यारे परम मीत हो।



डॉ . अंजु दुआ जैमिनी,
फरीदाबाद - हरियाणा

दोहे

तिनका-देही उड़ गिरा, जलधि करता मखौला।
शोर मचावें कश्तियाँ, तिनका दिखे सुडौल॥

पैसे दो यदि तू कमा, देता दुखिया बाँट।
सद्कर्मों की पोटली, पाप बचे न छटाँक॥

भर कर अमृत ओक में, उसे छुआया माथ।
फिर चुटकी-भर चख लिया, शेष मित्र के हाथ॥

पथर करती मोम मैं, रखूँ जुबां पर फूल।
मंजिल पाने की कशिश, हाथाँ रखूँ त्रिशूल॥

दो पैसे की ले कलम, छा गए प्रेमचंद।
टेबलेट पर लिख रहे, पोथी शेखानंद॥

कागज में कस्तूरिया, महके कलम-दवात।
कम्प्यूटर का ककहरा, नकली धन बरसात॥

बिखरन कहती बीज से, क्यूँ तू हँसता जाय।
बीज कहे तू कोख है, होना तुझसे आय॥

पौधा इक उगता नया, टूटता जब बीज।
रख च्यूटी-भर हौंसला, तेरे घर भी तीज॥

जीरो की कीमत नहीं, रोता है एकांक।
आगे एका जा अड़ा, चमक उठा भाग्यांक॥



गांव की यादें

भोर की पहली किरण,
जब धरा पर मुस्कुराई ,
यादों के पंक्षी ने आकर,
जीवन में ली अंगड़ाई ।

देख-देख खेत खलिहाने,
मन को बड़ा सुकून मिला,
नजर गई जब पगड़ी पर,
यादों का अंबार खड़ा।

बढ़ने लगे जो कदम हमारे,
दिल थोड़ा सा बेचैन हुआ,
देख नजारा गांव के अपना,
अंतर्मन डावां - डोल हुआ।

आंगन में सूरज की किरणें,
जो हँसी टिठोली करती थी,
कुछ टूटी - फूटी दीवारें थी ,
सूनी सी खड़ी हवेली थी।

मीठी - मीठी शहतूतों का,
यादों में स्वाद भी चख डाला,
बरगद, पीपल के पेड़ तले,
मकड़ी ने बना दिया जाला ।

न चक्री के दो पाट वहां,
जो आपस में बतियाते थे,
न टूटे - फूटे चूल्हे थे अब,
जो सौंधी खुशबू महकाते थे।

डॉ. पुष्पा रानी गर्ग
हापुड़-उत्तर प्रदेश
मो. 917473730,

जिस आंगन में बैठ के दादी,
चिल्मी हुङ्का गुड़गुड़ाती थी,
एक कोने में खड़ी वो खट्टिया,
हाले - बेहाल बताती थी।

अब नहीं दिखाई देता छप्पर,
जहाँ गाय - भैंस रंभाती थी,
बाड़ से बछिया भी आकर,
आपा खो कूदन मचाती थी।

लहलहाती फसलें, नदियां,
मन को आंदोलित करती थी,
अब नहीं सुकून पहले जैसा,
अम्मा सबको बतलाती थी।

सब छोड़ शहर को चले गए,
मां बाबा की आँखें रोती थी,
बचा ये जीवन कट जायेगा,
पर हँसके कुछ न कहती थी।

कुछ गांव की यादें साथ लिए,
हम लौट गये घर को अपने,
सुख आनंद के जो क्षण बीते,
वे केवल रह गए अब सपने।



ऋषभ शुक्ला,
शाहजहांपुर-उत्तर प्रदेश
मो. 8299455767

(क) मुक्तक

(१)

युग परिवर्तित होने से, दुःशासन नहीं बदलते हैं।
सरकारें आती जातीं, आश्वासन नहीं बदलते हैं।
दंभ जिन्हें है सत्ता का, इतिहास उठाकर देखें वो-
शासक बदला जाता है, सिंहासन नहीं बदलते हैं।

(२)

किसने बोला आग उगलते तीर बनो ?
किसने बोला ज़हर बुझी शमशीर बनो ?
दंगाई बनने से कहीं अच्छा है यह-
कलम उठाकर तुलसी, सूर, कवीर बनो।

(३)

अंगारों पर पांव रखा फिर, जलने से घबराना क्या ?
भीड़ खड़ी हो बहरों की फिर, रोना क्या चिल्लाना क्या ?
अपने हङ्क की आवाजें जो, स्वयं उठा ना पता हो -
उस इंसाँ का इस दुनिया में, जीना क्या मर जाना क्या ?

(४)

कुछ ख़्वाबों की आदत में है, पलकों को गीला कर जाना।
जख्मों को सीने वाली, तुरपाई को ढीला कर जाना।
अंतर्द्वीदों में तपकर जो, सोने जैसी निखर रही हो -
मन उपवन की उस माटी को, फिर से रेतीला कर जाना।

(ख) दिखाई दे...

भ्रष्ट आज ये सारा तंत्र दिखाई दे,
तन स्वतंत्र है मन परतंत्र दिखाई दे।

सुनो! भेंट में वो आईना दे देना,
जिसमें अपनों का पड़यंत्र दिखाई दे।

कभी अहम् की पट्टी यदि हट पाई तो,
राजा को शायद जनतंत्र दिखाई दे।

है सुषेण कोई जिसको इस विपदा में,
संजीवन बूटी सा मंत्र दिखाई दे।



कोख से कब्र तक

अग्नि परीक्षा में झुलसती
सदियों से परंपरा के चक्रवूह में ,
बहन, बेटी, बहू और फिर माँ के रूप में
अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर,
सृजन की ऋचाएं होकर भी
अभी तक सूना कैनवास है नारी...

कभी लिंग से पहचानी,
कभी धरती पर है भारी,
मैं नारी वो अभिमन्यु
जिसकी तकदीर में
चक्रवूह में फंसना तो है पर निकलना नहीं
इतिहास की स्मृति में है
गार्गी, मैत्री, अपाला, धोषा और लोपमुद्रा है पर
आज बेटियों की लोरियों में निर्भया जैसी
न जाने कितनी सिसकियां भी हैं

माना कि नारी ने
धर्म, शिक्षा, अर्थ, राजनीति
और अंतरिक्ष के चक्रवूह को भेदा है
अवनि ने अंबर का
सफर तय किया है
परियों की परीकथाएं से निकल
जीवन की महाभारत में
खुद ही अर्जुन
खुद ही कृष्ण बन
नारी को स्वयं सिद्धा बनाया है

डॉ. शिखा कौशिक

बुलंदशहर - उत्तर प्रदेश

मो. : 9639028656

मैं भी एक नारी हूं
बेटी-बहू और मां हूं,
कहां कमतर हूं ये
कोई तो बतलाए

चाहती हूं बस इतना
मुझको खो जाने दो
माटी की उस तासीर में
जहां गर्भ में एक बीज बने
नारी तू नारायणी का ..

कोमल है कमजोर नहीं
शक्ति का नाम नारी है
जग को जीवन देनी वाली
मौत भी तुझ पर भारी है..



निशांत शर्मा
ग्रेटर नोएडा—उत्तर प्रदेश
मो. 8587992794

खुशी

हर लम्हा मुझे इक सबक दे गया
जो चाहा न चाहा वो सब दे गया
मैं निकला था जाने किसकी तलाश में
तुमसे मिलकर खुद तुम्हारा हो गया

सूरज निकला तो रोशनी दे गया
चाँद निकला तो चाँदनी दे गया
अपनी कोशिश में रक्खी न कोई कसर
बहुत कुछ मिला, बहुत कुछ खो गया

दीवारें घर को हवाओं से बचाती हैं
छत इन दीवारों को घर बनाती हैं
मुसीबत में दुआएं बहुत काम आती हैं
दूरियां ही रिश्तों की कीमत बताती हैं



हाइकू

डॉ. देवकीनन्दन शर्मा

गुलावठी, बुलन्दशहर-उत्तर प्रदेश

मो. 9837573250

1.

बोला है कागा
हुआ शुभ शगुन
बजेगी धुन

6.

उन्मन मन
सर्वत्र प्रभंजन
शांति सपन

2.

छोटी सी नैया
भरे हैं लता पता
राम खिवैया

7.

जरूरी नहीं
चाँदनी हो बिस्तर
धूप भी सही

3.

कभी पहेली
जिन्दगी और कभी
खुली हथेली

8.

मन टहनी
किसने है हिलाई
हिचकी आई

4.

तेरी अजान
मेरे भजन रचें
नया वितान

9.

प्रेम की छाँव
महकें नाते रिश्ते
चहकें गाँव

5.

मूर्खों का मंच
प्रत्येक सरपंच
जय प्रपंच

10.

एक रुमाल
मौसम हर पल
करे कमाल



डॉ. ईश्वर सिंह तेवतिया

गाजियाबाद- उत्तर प्रदेश

मो. 9899137354

वृद्धाश्रम से ख़त

“शुभोदय परिवार सहर्ष सूचित करता है कि हमारे संपादक डॉ. ईश्वर सिंह तेवतिया की यह कविता एच एस एन सी विश्वविद्यालय, मुंबई ने बीए द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में शामिल की है” – प्रधान संपादक

तुमने मुझको मिट्टी समझा, क्यों तुम्हीं पर मिट रहा हूँ
एक तरफा प्यार में क्यों, मुफ्त में मैं बिक रहा हूँ
आज मैं खुद ही खुदी को, एक मुज़रिम दिख रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

याद आता है पुराना, वक्त जो घर पर गुजारा
साथ रहते थे सभी हम, स्वर्ग सा था घर हमारा
तब तुम्हारी छवाहिशों का, सिर्फ जिम्मेवार मैं था
नाव में असवार थे सब, नाव की पतवार मैं था
जो तुम्हें खेता रहा वो, एक मैं नाविक रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

प्यार की बातें नहीं, आक्रोश कहना चाहता हूँ
एक लावा बन गया हूँ, आज बहना चाहता हूँ
तुम वहाँ सुख भोगते हो, मैं यहाँ दुःख भोगता हूँ
जी रहे हो तुम यहाँ मैं, खुदकुशी को रोकता हूँ
जिंदगी को ढो रहा हूँ, एड़ियों को घिस रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

मैंने जीवन भर दिया है, तुमने जीवन भर लिया है
भेजकर मुझको यहाँ, तुमने जताया शुक्रिया है

किंतु तुमने जो किया, उस पर लजाना तो पड़ेगा
आइने से भी तुम्हें, मुँह को चुराना तो पड़ेगा
ये बताना तो पड़ेगा, बाप से क्यों छिप रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

अच्छा है इस आश्रम में, कोई भी अपना नहीं है
टूटने को शेष अपना, अब कोई सपना नहीं है
और जीवन में कोई अब, मोह माया भी नहीं है
अब कोई अपना नहीं, कोई पराया भी नहीं है
मैं किसी खुदगर्ज पर भी, अब नहीं आश्रित रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

तुमको देने को नहीं, आशीष अब कोई बचा है
जो जहर तुमने दिया है, वो कहाँ अब तक पचा है
तुमसे मिलने की तमन्ना, भी नहीं दिल में कोई है
तुम वही काटो फसल जो, हाथ से अपने बोई है
मैं पिता बनकर तुम्हारा, अंततः शापित रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ

तोड़ता हूँ आज तुमसे, शेष है गर कोई नाता
काश गुजरे वक्त को मैं, छोड़ पाता, मोड़ पाता
जिंदगी के कुछ पलों को, मैं जर्मी में गाड़ता हूँ
तुमसे अपने रिश्ते के, अध्याय को ही फाड़ता हूँ
मैं इसी पल इक पिता से, कर तुम्हें वंचित रहा हूँ
मैं तुम्हें वृद्धाश्रम से, आखिरी खत लिख रहा हूँ



कुछ तो बचा है

विपिन जैन,
गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश
मो. 9873927829

एक पुरानी सी एल्बम में एक फोटो लगा है। जिसमें हम पांच भाई खड़े हैं। यह फोटो नानी के घर का है, नानी का घर जिसमें बचपन की यादें बसी हैं। उस फोटो में मेरे साथ दो भाई और दो मौसेरे के भाई हैं। किसी पुराने कैमरे से खींचा गया यह फोटो हमें उन दिनों की याद दिलाता है जब हम हर साल गर्मियों की छुट्टियों में नानी के गांव जाया करते थे गांव में हमारा मन खूब मन लगता था। अब तो कभी-कभी याद आते हैं वह धमा चौकड़ी के दिन, हंगामे से भरे दिन, उधर मचाने के दिन, हंसने हंसाने के दिन, गांव भर में धूम आने के दिन, यादें बचपन के उन दिनों में ले जाती हैं जब गांव में भाईचारा था, धार्मिक सौहाद था, धर्मकी दीवारें इतनी ऊँची नहीं थी, जातिय बंधनों के साथ सहानुभूति और प्यार मोहब्बत थी। भाईचारा था, अपना ही हित और स्वार्थ सर्वोपरि नहीं था। यह कमी जो आज महसूस की जाती हैं तब नहीं थी।

गर्मियों की छुट्टी का मतलब नानी के गांव जाना होता था। छुट्टियों से पहले ही मन गांव जाने को उमगने लगता था। गांव के दिनों की अब ज्यादा याद आती है। इधर से हम तीनों भाई उधर से मौसी की बड़े आ जाते थे सारे बड़े मिलकर बागों में धूमते, ट्यूबवेल पर नहाते। तब आमों का सीजन होता, बागों में आम की बहार होती थी। कड़े आम तोड़ने पर नानाजी डांटते थे। मुल्लाजी रखवाल के साथ आम के बाग भी खरीद लेते थे। जब नाना जी के साथ हम बाग में पहुंचते थे तो वह तरह तरह के आम खाने को हमारे सामने लाते। गांव में खूब मन लगता था। गांव में छुट्टियां कितनी जल्दी बीत जाती थी? उन दिनों का पता ही नहीं चलता था और हम स्कूल खुलने पर ही लौटते थे।

गांव का बड़ा सा वह मकान जिसमें नाना जी के परिवार के साथ छोटे नाना बड़े नाना भी रहते थे। नाना को हम कंजूस नाना कहते थे।

आज बच्चों के साथ चालीस साल बाद उधर से निकलना हुआ। अमेरिकावासी जो कभी बचपन में हमारे नाना के गांव आया था और मां के साथ था तब उसे गांव पसंद नहीं आया था। आज कहने लगा, 'ठीक है पापा, बच्चों को आमों की बहार दिखा देते हैं। गांव कैसे होते हैं, देखकर बच्चों को मजा आएगा। बच्चों ने आम से लदे पेड़ नहीं देखे। पेड़ से टपके आमों का मजा नहीं लिया।' पोती ने कहा, 'मैंने कभी आम के ऐसे बाग नहीं देखे जिसमें आम ही आम हो चाहे और कुछ न हो।' बेटे और बच्चों ने याद दिलाया कि 'दाढ़, यहीं थोड़ी दूरी पर आपकी नानी का गांव है, आज वहीं चलते हैं बड़ा मजा आयेगा।' उनकी इच्छा सुनकर मैंने कहा 'हमारे मामा ने तो वह गांव छोड़ दिया है अब वह मकान भी खाली है, जहां वह रहा करते थे। अब वहां कोई पहचान का भी नहीं मिलेगा! बागों के अलावा वहां कुछ नहीं बचा। वे भी अलग सड़क के किनारे होते तो बिक गए होते, सड़क किनारे वालों ने अच्छे पैसे बना लिए हैं। एक बड़ा बाग उनका वही है। परंतु मुझे वहां कौन पहचानेगा? बाग वाले मुल्ला जी पर या किसी भी रखवाले पर मोबाइल होगा तो उसे कहला दिया जाएगा।' मामा को फोन मिलाया तो उन्होंने कहा "गांव जाना चाहते हो तो जाइए, बाग में मुल्लाजी मिलेंगे। उनसे मेरी बात करवा देना। हमने कार गांव की तरफ जाने वाली सड़क की तरफ मोड़ दी।

सड़क पर बहुत से फ्लाई-ओवर बन गए थे। गांव का बस अड्डा भी अच्छा बड़ा हो गया था। जहां बैठने का भी इंतजाम था। गांव का रास्ता चौड़ा हो गया था। जिसमें गाड़ी जा सकती थी। गांव के बाजार की दुकानें अब पहले की तरह नहीं थीं। कुछ के नाम याद आये, मैंने उन्हें बताया कि यहां एक पंसारी की दुकान थी जो लाला रामचंद्र की दुकान थी। लाला जी बिना पंखे की दुकान में पसीना पोंछते हुए ग्राहकों को समान देते रहते थे। उसी के सामने छज्जू भाई की दुकान थी। जिसकी जलेबी बड़ी मशहूर थी। दूसरे गांव से भी लोग खाने आते थे।

गांव में मुस्लिम आबादी अधिक नजर आ रही थी उनके बच्चे गली-गली नजर आ रहे थे। स्कूल में बच्चों की संख्या पहले से अधिक थी। बेटे ने कहा यह गांव तो मुसलमानों का हो गया है। हिंदू तो रहे नहीं जो बचे थे वह दंगों के बाद चले गए। एक मंदिर था जो आज भी है पर सूना सा दिखाई दे रहा था। नाना जी की कपड़े की दुकान थी। कुल मिलाकर पंद्रह बीस दुकानों का बाजार था बाजार में जिन्हें सब लाला जी कहते थे, दुकान पर बैठा करते थे, कभी-कभी रात को लाला जी हिसाब-किताब में लगे होते थे बीच-बीच में मामा भी काम संभालते थे। सप्ताह में दो दिन पैंठ लगती थी जिसमें अन्य गांवों के लोग भी खरीदारी करने आते थे। बाजार के आगे बीच में चौराहा था जिसे चौगड़ा बोलते थे? उसके आगे मुस्लिम बस्ती थी और जाटों के मकान थे।

बाग का रास्ता इसी बस्ती से होकर जाता है। मैंने गाड़ी में चलने के बजाय बाजार में होकर बाग तक पैदल ही चलने का इरादा किया तो बच्चे भी मेरे साथ हो लिए थे। बाजार के बीचों बीच में नानाजी का मकान भी दिखाई दिया जो कभी हलचल से भरा रहता था। उसे देखकर मुझे ऐसे लगा जैसे उसे आज भी किसी के आने का इंतजार है। पर अब उसमें कौन रहते आएगा? जो गांव छोड़कर चला जाता है लौटकर कब आता है? कितने ही लोगों ने शहरों में घर ले लिया वहीं काम धंधा जमा लिया। गांव का मकान जो एक बार खाली हो गया वह मकान खाली ही रह गया।

नीचे छोटी नानी की खाना पकाते हुए दिखती थी उनकी निगाहों से बचकर जीना चढ़ना मुश्किल था। वह आते को देखकर खुश होती थी तो जाते को देखकर दुखी हो जाती थी, कहती थी जल्दी क्या है? यह घर आज भी इंतजार करता होगा। जाने कितनी कहानियां छुपी हैं.. सारा जीवन यहीं छोटी नानी ने चूल्हे के आसपास काट दिया। जब जाना कम हो गया तो यह ताना सुनने को मिला था ‘अब बड़े आदमी हो गए हो, गांव में मन नहीं लगता होगा।’ उनका बेटा गांव में नाना के घर में डकैती पड़ी थी तो वह उनके सामने आ गया और डाकुओं ने उसे गोली मार दी थी। खून बहता रहा रोकने का कोई उपाय न था। बचने का एक ही उपाय था कि जल्दी से शहर पहुंचा दिया जाए। अस्पताल में ही जान बच सकती है! ट्रैक्टर ट्राली में ले जाया गया मगर तब तक देर हो चुकी थी। उसके बाद छोटी नानी चुप रहने लगी थी। सबके बीच यह सवाल उठा था कि नाना जी के परिवार को गांव छोड़ देना चाहिए। ऐसे हालातों में रहना सुरक्षित नहीं है, पर वह किसी भी तरह तैयार नहीं हुए। कहने लगे मैंने यहां पर ही बचपन से बुढ़ापे तक का समय गांव वालों के बीच बिताया है, गांव में ही भाईचारे की मिट्टी में जो मैंने बाग बनाया है उसे हाथों से सींच कर बड़ा किया है। नाना जी की आस्था देखकर सब चुप थे। यह आस्था तब आहत हुई जब उसके दूसरे ही साल उनके पड़पोते का अपहरण कर लिया गया था। मामा को सब पता था कि किन लोगों का हाथ है, वही लोग दुकान पर आकर हमदर्दी जताते थे। फिरौती की रकम देनी पड़ी। फिर यह सवाल सभी के बीच उठा कि अब गांव छोड़ देना चाहिए, पर नाना जी गांव नहीं छोड़ सकते थे, वह शहर में जाने को तैयार नहीं थे। फिर भी आपसी माहौल इतना बिगड़ा नहीं था। गांव में आपसी आत्मीयता का थोड़ा बहुत माहौल अभी बाकी था। लोगों ने आश्वासन दिया था कि आगे कुछ नहीं होगा, मानो उन्हें सब मालूम था।



फिर एक दंगा होने के बाद गांव में भाईचारे के माहौल वाली पुरानी बातें नहीं रह गई थी। ऐसा हमने सुना था और उस समय लग रहा था। गांव के बीच से गुजर कर हम बाग के रास्ते पर पहुंचे। बाग की मेंड पर खड़े हुए जो मुल्लाजी दिखाई पड़े तो उन्हें देखकर मैं हैरानी में पड़ गया। मैं जैसे बचपन में लौट गया था और बार-बार उन्हें देख रहा था। उनकी सूरत जिससे मिलती थी वो मुल्ला जी थे जिन्हें हम नाना के साथ आकर देखा करते थे मुझे लगा जैसे वही मुल्लाजी सामने खड़े हों। उन्होंने आत्मीयता से मुस्कुरा कर मुझे देखा। मैंने कहा 'मैं लालाजी का धेवता हूँ' मुल्लाजी के चेहरे पर हँसी आ गई बोले 'मैं तुम्हें खूब पहचान रहा हूँ, जब तुम छोटे से थे तो अपने नाना के साथ आया करते थे। खूब शरारती थे' मैंने पूछा तब तुम कहां थे? वह बोले 'मैं भी तुम्हारी उमरों का हूँ! मैं अपने अब्बू के साथ बाग की रखवाली करता था। अब तुम भी बड़े हो गए मैं भी बूढ़ा होकर अपने अब्बा जैसा हो गया हूँ' मैंने पूछा 'मामा जी का फोन आया होगा' 'फोन मेरा खराब है पर तुम क्यों चिंता कर रहे हो? तुम बरसों बाद दिखाई दिए हो, कितने भी रिश्ते खराब हो गए हों, हम साथ-साथ रहते हैं एक दूसरे को दूसरे का सहारा हैं। अब यह क्या हो रहा है, लोगों का पेट ज्यादा भर गया है। सगे भाइयों में भी वह मोहब्बत और सुलूक नहीं रहा। सब की निगाहें जमीन और दौलत पर ज्यादा रहने लगी हैं यही वजह है कि रिश्तों की गहराई कम होती जा रही है, जैसे बिना रिश्तों के लोग रह लेंगे।' मैंने पूछा, 'मुल्लाजी, यहां दंगा हुआ था, उसके बाद अब तो शांति है?' मुल्लाजी चुप रहे, फिर बोले हम तो सब से मिलकर रहने वाले लोग हैं कुछ लोग होते हैं जिनका जरूरत से अधिक पेट भर गया है। उन्हें न तो किसी की जिंदगी दिखाई देती है, न भगवान का भय रहता है और न खुदा का खौफ। रास्ता निकालना है तो बातचीत से निकालो। लड़ाई झगड़े से किसका हल निकलता है।

दुश्मनी से दुश्मनी पैदा होती है। लड़ाई से कोई मसला हल नहीं होती। मैंने पूछा, 'बच्चे कितने हैं?' बोले 'चार लड़कियां हैं, दो की शादी कर दी है, दो कुंवारी हैं।' मेरे मन में आया कुछ मदद की बात करूँ, पर चुप रह गया। 'तुम्हें देखकर अच्छा लग रहा है! सालों के बाद तुम्हारे कदम गांव में पड़े हैं। तुम्हारे कदम यहां पड़ गए तो हमें तुम्हें देखना मिल गया। बाकी, मैं तुम्हारी कोई सेवा नहीं कर सकूंगा। इस बार आम की बहार कम है बोर तो बहुत आया पर आंधी में झड़ गया। चार पेड़ों पर कुछ आम बचे दिखाई दे रहे हैं। जो हो सकेगा करूँगा' कहने के साथ वह पेड़ पर चढ़ गए और पंद्रह बीस किलो आम तोड़कर उतरे और कहने लगे 'ये आम मैं अपनी तरफ से दे रहा हूँ' लाला जी के हिसाब में से नहीं।'

उनसे विदा होते समय मैंने पांच सौ रूपये का नोट निकाल कर उन्हें पकड़ाते हुए कहा 'छोटे बच्चों के लिए कुछ ले जाना मेरी तरफ से' 'मेरे हाथ को वापिस मोड़ते हुए बोले 'क्यों मुझे शर्मिंदा कर रहे हो, लालाजी के धेवते हो, इस तरह मेरे लिए धेवते के समान हो। मेरा फर्ज तुम्हें देने का बनता है, लेने का नहीं। मौका लगे तो फिर आना' मैंने कहा 'देखिए कब- आना होता है? चलते समय फिर उन्होंने कहा 'मैं तुम्हारी सेवा न कर सका। पचासों बरस बाद तुम्हें देखकर अच्छा लगा है.. ये थोड़े से आम ही मिल पाये हैं और आम की पेटी गाड़ी में रखते हुए मुल्लाजी ने कहा' "आमों के बीच में ही मैंने पकाने का मसाला रख दिया है। दो-चार दिन में ही पक कर खाने लायक हो जाएंगे। मुझे ऐसे सौहार्द की अपेक्षा नहीं थी। हमारी कार जब धूल उड़ाती हुई कच्चे रास्ते से पक्की सड़क की ओर बढ़ी तो मैंने देखा मुल्ला जी पीछे खड़े हुए एकटक हमारी गाड़ी की तरफ देख रहे थे। उनका हाथ हवा में हिलता हुआ लग रहा था, मुझे लगा कि अभी सामाजिक संबंध खत्म नहीं हुए हैं आपस के झगड़ों के बावजूद, कुछ तो है जो बचा हुआ है।'



डॉ प्रभाकर जोशी

देवप्रयाग-उत्तराखण्ड

मो. 9411144392

दांव

वसंत आते ही पहाड़ो में उमंग छा जाती। घाटियों में सुहावनी हवाएं चलने लगती। पहाड़ों में यह मौसम मेलों का होता है। महिला, बच्चे, बुजुर्ग महीनों से मेलों में खरीदारी के लिए रुपया जोड़ते। खेतों, सड़कों पर दिन रात हाड़ तोड़ने के बाद वसंत में उन्हें जीवन का नया उत्साह मिलता है। अनजान जगहों से आये दुकानदार गठरियों में बँधी चीजों को जमीन में बिछा देते या लकड़ी के आड़े तिरछे डंडों पर सजा देते। कई ऐसी चीजें होती जो पहले किसी ने नहीं देखी होती थी। मन पसंद खिलौने, कपड़ों, नकली जेवर खरीदने के लिए बच्चे से लेकर महिलाएं तक दुकानदारों से देर तक मोल भाव करते। जब मनपसंद चीज उन्हें मिल जाती तो वह झूम उठते।

देवू को हर बार की तरह पिता ने मेले में जाने के लिए पचास रुपये थमा दिये थे। क्या आता है इस पचास रुपये में अब? वह चिल्ला उठा था। पर पिता टस से मस नहीं हुए। काफी दिनों से काम भी नहीं मिलने से पिता ज्यादा देने की स्थिति में नहीं थे। देवू ने मेले के लिए साल भर से रखे नये से लगते कपड़े पहने। पैरों में महंगे जूतों का भरम डालते प्लास्टिक के जूते कसे। पर जेब में पड़ा पचास का नोट उसे उदास किये था। फिर भी मेले का आकर्षण उसकी हल्की जेब पर भारी था। धीरे-धीरे ढलती धूप के साथ मेले का हर कोना भर चुका था। हँसने, बतियाने, पुकारने की आवाजों के बीच घूमती चरखी से अचानक उठता तेज शोर उसे डरा रहा था। चपटी लोहे की कढ़ाई में बनती रंग बिरंगी जलेबी, उबलते तेल में सौंधी गंध छोड़ती पकौड़िया उसके पैरों को थाम रही थी। यह अभी नहीं, सोचते वह आगे बढ़ गया। नये खिलौने देख वह रुक

गया। उड़ता हवाई जहाज, कसरत करता आदमी, कई तरह की आवाजें निकालता पक्षी, बनाओ मिटाओ वाली स्लेट न जाने क्या-क्या था वहाँ पर। खरीदारी करते बच्चों को दुकानदार दाम बता रहा था, पचास से कम कुछ नहीं था। मतलब, एक खिलौना लूंगा तो जलेबी, पकौड़ी का स्वाद खोना पड़ेगा। खाने की चीज तो बाद में भी मिल जायेगी पर ऐसे खिलौने फिर कहाँ मिलेंगे।

पचास के नोट में एक खिलौना खरीदने का मन बनाते ही अचानक उसका ध्यान कुछ दूर लगी भीड़ पर चला गया। उत्सुकता से वह भी उस ओर बढ़ गया। भीड़ के बीच किसी तरह घुसकर उसने अपना सिर आगे किया। जमीन पर बिछी एक चादर में छुटपुट सामान के साथ सौ, पचास, पांच सौ तक के नोट बिखरे थे। दस रुपये में रिंग फेंककर जो चीज बीच में आयी वह उसी की थी। पर न जाने दुकानदार ने क्या जादू किया हुआ था मुश्किल से ही कोई रिंग सही पड़ती था। पर लालच ऐसा कि दांव पर दांव लग रहे थे। काफी देर बाद एक रिंग साबुन की चक्की पर गिरी तो जोर से तालियां बज उठी। पचास रुपये गंवाकर एक आदमी साबुन की चक्की ही जीत सका था। सामने पड़े नोटों ने देवू को व्यग्रता से भर दिया था। उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था वह इनके पाने के इतने निकट था। अपने भीतर उठी हृक से वह दुकानदार को पुकार उठा, मुझे भी एक रिंग दे दो, पर मेरे पास पचास रुपया है खुला नहीं है। दुकानदार ने लापरवाही से पचास का नोट लेते उसे एक रिंग व दस के चार नोट पकड़ा दिये। देवू पूरे विश्वास से रिंग फेका पर वह बेकार गया। ‘पहले में ही कौन जीतता है’ सोचकर उसने दस का नोट



देकर दूसरा रिंग फेंका। ओह, पचास के नोट तक जाते-जाते वह रह गया। दो नोट जा चुके थे। पर कौन जाने तीसरी बार में भाग्य खुल जाए। इस बार रिंग सौ के नोट का कोना छू गया था। देवू की धड़कन बढ़ गयी थी अब सिर्फ बीस रुपये रह गए थे। ‘इसमें आयेगा भी क्या, इनको भी दांव पर लगा देता हूँ।’ देवू ने पूरी एकाग्रता से चौथा रिंग फेंका जो नोटों के उपर से घूमता एक दर्पण के ऊपर गिरा। तालियां बज उठी पर उसका मन डूब सा गया। दुकानदार उसके मूर्ख बनने पर मुस्करा रहा था। पर अब भी देवू की आस टूटी नहीं थी। दस का आखिरी नोट बचा था। कांपते हाथों से उसने आखिरी नोट का भी अंतिम दांव लगा दिया। दुकानदार ने पांचवीं बार उसे रिंग पकड़ाया। आस-पास लगी भीड़ भी देवू के आखिरी दांव का परिणाम जानने को अचानक उत्सुक हो गयी। कुछ देर तक वह अंगुलियों में रिंग घुमाता रहा फिर बिना लक्ष्य के उसने रिंग हवा में उछाल दी। एक क्षण सन्नाटा छा गया। आँख बंद किये उसे सिर्फ रिंग के गिरने की खटक सुनाई दी। एक क्षण कोई हलचल नहीं हुई पर अचानक भीड़ चिल्ला उठी। सम्मोहन से जगते उसने आँखें खोली, सामने दुकानदार भौंचक खड़ा था। लगातार तेज तालियाँ बज रही थीं। हर कोई वहाँ चिल्ला रहा था पांच सौ, पांच सौ... शाबाश।.... रिंग के धेरे में पड़े पांच सौ के नोट पर उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था। आज तक इतना बड़ा नोट उसके पास कभी नहीं आया था।

कुछ देर में ही पूरे मेले में हर कान तक यह बात पहुँच गयी। हर कोई उसको ही को ढूंढ रहा था। रिंग के खेल में काफी रकम खो चुका एक अधेड़ खुश होकर देवू के लिए गरम जलेबी, पकौड़ी ले आया था। मेले में यह सब उसके लिए अनोखा सा था। जो भी मिलता उसे कंधे थपथपाकर शाबाशी दे रहा था। अंधेरा होने तक मेले की भीड़ धीरे-धीरे छँट गयी। दुकानदार बचा कुचा समान समेटने में लगे थे।

देवू उसी जगह फिर चला आया जहाँ उसने पांच सौ का नोट जीता था। मैले कुचले कपड़ों में एक छोटी लड़की पिता को वहाँ सामान समेट कर दे रही थी।

रिंग के खेलवाला उदासी से विदा होते मेले की ओर देख रहा था। देवू समझ नहीं पा रहा था इतना कमाने पर भी वह इतना उदास क्यों था। तभी एक तगड़ा आदमी वहाँ प्रगट हुआ और दुकानदार से मेले में हुई कमाई की सभी रकम लेते बोला, बस इतना ही। दुकानदार की ओर कुछ नोट फेक वह चलने लगा। ‘साब, गरीब आदमी हूँ, इससे क्या होगा’, रिंग वाला उसके पीछे गिड़गिड़ाया, पर तगड़ा आदमी कोई दया नहीं दिखाते ओझल हो गया। नम आँखों से रिंग वाला अपने भाग्य को कोसने लगा। देवू को जेब में पड़ा उससे मिला पांच सौ नोट अचानक चुभने लगा। जेब से पांच सौ का नोट निकाल वह एक क्षण रुका और छोटी लड़की के हाथ में उसे थमा दिया। वहाँ से तेजी से निकलकर कुछ दूर अंधेरे से उसने देखा। बेटी के पांच सौ रुपये देते ही दुकानदार का मुरझाया चेहरा अचानक खिल उठा था। 500 का नोट आकाश की ओर उठाये वह किसी को दुआएं दे रहा था।

खाली हाथ होने पर भी देवू को लग रहा था कि मेले से सबसे अधिक लेकर वह ही लौटा है।



पूनम सुभाष,
गाजियाबाद-उत्तर प्रदेश
मो. 9999845402

कंधा

नीलांबर सोसायटी की देखरेख करने वाले ईमानदार छवि वाले अरविंद जी अपने सातवें फ्लोर से भी लिफ्ट में सवार ही हुए थे कि पंद्रहवीं मंजिल पर रहने वाले चौधरी साहब बड़े अदब से उनके सामने झुक गए अरविंद जी कहने लगे 'अरे आप इतने सीनियर हैं, मुझे क्यों शर्मिदा करते हैं।' ऊची पदवी वाले चौधरी साहब यूं तो सब जगह दबदबा रखते थे मगर अरविंद जी की तीक्ष्ण बुद्धि और ईमानदारी के कारण उनके आगे बरबस झुक जाते थे। सोसायटी में ज्यादातर लोग रईसों की श्रेणी में आते थे। अरविंद जी बैंक मैनेजर और उनकी पत्नी सरकारी विद्यालय की प्रिंसीपल होने के बावजूद मध्यमवर्गीय ही माने जाते थे। लगभग बीस साल से रह रहे थे, पचास वर्ष से अधिक आयु के हो चुके थे। जीवन में जमा पूँजी के नाम पर समाज सेवा और ईमानदारी ही थी। भीतर से सभी के लिए दया ममता रखने वाले दम्पति होशियारी और चालाकी भांपते ही अति उग्र हो उठते थे और उनके व्यवहार की ऐसी ही घटनाएं अन्य लोगों को उनके विपरीत किस्से कहानियां गढ़ने का अवसर प्रदान कर देती थीं।

आज भी चौधरी साहब अरविंद जी से सोसायटी के वित्तीय घोटाले की चर्चा करने लगे कि पूर्व सेक्रेटरी ने सोसायटी में कितना भ्रष्टाचार किया है और धार्मिक आयोजनों के नाम पर सोसायटी के निवासियों को काफी चूना लगाया है। लिफ्ट अब तक ग्रांउड फ्लोर पर आ गई थी। अरविंद जी ने केवल इतना कहा कि ऑडिट रिपोर्ट आ चुकी है और काफी समय से मल्होत्रा साहब के पास है वह उसे देखकर कर कोई निर्णय लेंगे और उन्होंने चौधरी साहब से कहा कि आप भी इस काम में सहयोग दें तो

तुरंत कार्रवाई हो सकती है। दरअसल इस वित्तीय घोटाले पर पहली दृष्टि अरविंद जी की पत्नी सुषमा की ही गई थी। पेशे से प्रिंसीपल नालायक बच्चों की आंखों से उनकी नालायकी भांप लेती थी तो भला सोसायटी के घोर भ्रष्टाचारी उनकी नज़र से कहां बच पाते। जब उनकी चोरी पकड़ी जाने लगी और अरविंद जी ने सरेआम पर्दाफाश किया तो सभी निवासियों को अहसास हुआ कि घोटाला कई स्तरों पर है जिसमें रखरखाव के नाम पर लिए गए उनके पैसे की लूट हुई है। चंद निवासी अरविंद जी के साथ खड़े थे अधिकांश तो सरकारी कम्पनी के अधिकारी ही थे जिनके रखरखाव के पैसे तो उनकी कम्पनी की ओर से जाते थे इसलिए उन्हें यह घोटाला कहीं से प्रभावित नहीं करता था अपितु पूर्व सचिव के रंगारंग आयोजनों से उनकी घरेलू पत्नियां और घरों में काम करने वाली बाइयों का मनोरंजन होने से उनका अच्छा समय पास हो रहा था। इस सारे प्रकरण में यदि कोई पीड़ित था तो वह परिवार जिन्होंने अपने पैसों से फ्लैट खरीदकर उसके सारे खर्चे अपनी जेब से बहन करने थे। जब विजली, पानी, जेनरेटर के डीज़ल, इंटरकॉम, सीसीटीवी कैमरे वगैरह वगैरह..... सभी में घोटाले थे।

कई बैठकों, वार्तालापों और मुद्दों को सुलझाने के नाम पर यही निर्णय लिया गया था कि किसी बाहरी चार्टर्ड अंकाउंटेंट से सोसायटी के पिछले चार और वर्तमान वर्ष का ऑडिट करवाया जाए। और एक वर्ष तक सोसायटी का काम अरविंद जी की टीम देखेगी उस समय तो सभी ने हां में हां मिलाई। छः आठ महीने की प्रतीक्षा के बाद मिलने वाली ऑडिट रिपोर्ट तो सचिव महोदय और



उनकी टीम की कई परतें खोल रही थी। पर अरविन्द जी के कार्यभार संभालते ही सोसायटी के खर्चे एक चौथाई ही हुए पर पूर्व सचिव की टीम अरविन्द जी के हर काम में टांग अड़ाती रही और दुःखद बात तो यह थी कि कल तक जो अरविन्द जी के साथी और हिमायती बन रहे थे उन्होंने भी उन्हें अकेला छोड़ दिया। काम तो सभी करवाए किन्तु साथ कहीं नहीं दिया। स्वयं को अरविन्द जी का दायां हाथ बताने वाले सत्यदेव मल्होत्रा जी ने ऑडिट रिपोर्ट भी अपने पास रख ली और चार महीने से कोई चर्चा नहीं की गई। अरविन्द जी और उनकी पत्नी भी इसलिए चुप थे कि बाकी निर्णय सोसायटी के निवासी मिलकर लें। अरविन्द जी ने **106** फ्लैट वाली सोसायटी के कई निवासियों से अनुरोध किया कि वे आगे आएं और निर्णय लें। कोई भी आवाज उठाने को तैयार नहीं था। सब चाहते थे कि अरविन्द जी और उनकी पत्नी अपने स्तर पर ही उनकी भी लडाई लड़ें और पूर्व सचिव महोदय की नज़रों में भी वे अच्छे बने रहें। चौधरी जी भी इसी तरह उनके कंधे पर बंदूक रखकर काम चलाना चाह रहे थे।

चौधरी जी से बात करने के बाद अरविन्द जी बाजार चले गए और वापिस बिल्डिंग में आए तो **211** नंबर वाले डॉक्टर साहब और ऊँची पदवी से रिटायर्ड सक्सेना जी मिल गए और अरविन्द जी से कहने लगे आप कुछ करते क्यों नहीं। अरविन्द जी ने कहा, 'मैंने जितना करना था कर दिया अब बाकी आप लोग भी आगे आओ और मल्होत्रा जी से रिपोर्ट ले लो'

अरविन्द जी ने घर पहुंचकर पत्नी सुषमा को चौधरी जी के बारे में बताया और कहा कि इस सोसायटी के निवासी कार्रवाई भी चाहते हैं और परिस्थिति से भागते भी हैं। उधर मल्होत्रा जी ने ऑडिट से पूर्व तो बहुत जोश दिखाया अब चर्चा करने को भी तैयार नहीं है। सुषमा वहीं बैठ गई और कहने लगी मुझे भी यही लग रहा है कि इस प्रकरण को आपका और पूर्व सचिव का व्यक्तिगत विषय बनाया जा रहा

है। सोसायटी के हित से तो सभी पल्ला झाड़ रहे हैं। आप शांत रहिए, अब जब कोई इस विषय पर चर्चा करें तो आप भी बाकियों की तरह नज़रअंदाज करें और समय का इंतजार करें।

शाम के बक्त अरविन्द और सुषमा सैर के लिए नीचे उतरे तो दो निवासी और सामने से मुस्कराते हुए बोले अरविन्द जी आप कुछ कर नहीं रहे अगर नहीं कर रहे तो चलिए मल्होत्रा जी से रिपोर्ट ही दिलवा दीजिए। अब सुषमा से ज़ब नहीं हुआ वह प्रिंसीपल वाले लहजे से बोल उठी, 'क्यों आप लोग क्या उनसे परिचित नहीं हैं। जाइए, रिपोर्ट लीजिए और फिर मीटिंग कीजिए, हम तैयार हैं। सुषमा जी का लहजा देखकर शर्मा जी का बिगड़ैल बेटा नकुल हँसने लगा और कहने लगा आप तो पापा को जबरदस्ती घसीट रहें हैं भला हम क्यों सामने आने लगे? सुषमा जी भी कहां चुप रहने वाली थीं, आवाज ऊँची करके बोली तो आप इनके कंधे पर बंदूक रखना चाहते हैं। नकुल खिसियानी हँसी हँसकर बोला, 'आंटी अब आप तो समझदार हैं, हैं हैं हैं..... सुषमा उसकी इस हृद तक बेशर्मी देखकर चिढ़कर बोली, 'बेटा, आपके पापा को कंधा चाहिए तो चिंता किस बात की समय आने दीजिए एक क्यों चार-चार मिलेंगे, सबको मिलते हैं।' सुषमा जी ने यह बात सभी को सुनाकर कही। आस-पास के सभी लोग सकते में आ गए और अरविन्द जी सुषमा जी निर्णय ले चुके थे कि वह सोसायटी का कोई काम नहीं करेंगे। लोगों को भ्रष्टाचार सहने की आदत है ऐसे लोगों को अपना कंधा कभी नहीं देंगे।



गीता रस्तोगी 'गीतांजलि'

मोदीनगर-उत्तर प्रदेश

पो. 8279798054

अन्नपूर्णा

एक समय की बात है। एक गाँव में एक बूढ़ी औरत रहती थी। नाम था अन्नपूर्णा। उसका प्रेम नामक एक ही पुत्र था। उसकी एक दत्तक पुत्री मानकी भी थी जिसका उसने कुछ वर्ष पूर्व विवाह कर दिया था। मानकी के ससुराल का गाँव उसके गाँव से कुछ दूरी पर था। अतः वह उससे पाँच-छह महीनों के अंतराल पर अक्सर मिलने के लिए आया करती थी। उस बूढ़ी माँ के छोटे-छोटे नाती-नातिन भी थे। इस कारण भी मानकी उनकी देखभाल में व्यस्त रहती थी व अपने भाई व माताजी से मिलने के लिए कुछ कम समय ही निकाल पाती थी। माँ अन्नपूर्णा का पुत्र, प्रेम भी विवाह के योग्य हो गया था मगर वह 'माँ की देखभाल करूँगा', यह विचारकर विवाह नहीं करना चाहता था। आखिरकार एक दिन उसकी बूढ़ी माँ बीमार हो गई। तब उसने अपने प्रेम को बुलाया और पास में बैठा लिया। वह प्रेम से कहने लगी, "बेटा प्रेम, तू मेरी एक बात सुन। यदि तू विवाह को राजी हो जाए तो मैं एक गुणी कन्या देखकर तेरा विवाह कर दूँ। देख तू अब समझदार हो गया है। यदि कल को मैं न रहूँ, तब तू अकेला अपना सारा जीवन कैसे गुजरेगा?"

"नहीं, माँ। ऐसा कभी नहीं होगा। मैं किसी कुशल वैद्य से तुम्हारा इलाज कराऊँगा। तुम जल्दी ही स्वस्थ हो जाओगी।"

"ठीक है, बेटा। मैं एक बार को तेरी बात मान भी लूँ तब भी क्या तू यह नहीं चाहेगा कि मैं बुढ़ापे में चार दिन चैन से बैठकर रोटी खा लूँ? क्या मैं मरते दम तक चूल्हा-चौका ही करती रहूँगी?"

तब बूढ़ी माँ का बेटा, प्रेम विवाह के लिए राजी हो गया। कुछ दिनों बाद बूढ़ी माँ स्वस्थ हो गई। उन्हें सरलता से ही एक सुयोग्य कन्या भी मिल गई जिसके साथ उन्होंने प्रेम के

हाथ पीले कर दिए। शीला वह सामान्य कद-काठी एवं सामान्य रंग रूप वाली थी। साथ ही उसका स्वभाव व गुण ऐसे थे कि घर में जो भी थोड़ी देर के लिए आता, प्रशंसा किए बिना न रहता। इसी प्रकार समय व्यतीत होता गया। कितने ही वर्ष पंख लगा कर उड़ गए किसी को पता भी न चला। मगर एक दुःख उनके मन को हमेशा सालता रहता था। वह यही कि उनके कोई संतान न थी। इस प्रकार दो वर्ष बीत गए। वे सब लोग भगवान में बहुत विश्वास करते थे और यह दुआ करते थे कि संतान का सुख उनके जीवन में हो और उनके घर-आंगन में भी बालगोपालों की किलकारियां गूँजे।

मगर विधाता को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन प्रेम बीमार पड़ गया। अब शीला का रो-रो कर बुरा हाल था। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे? एक तरफ बूढ़ी माँ अन्नपूर्णा व दूसरी ओर रोगी पति। वह करती भी तो क्या? उसने अपने भाई के घर फोन किया और कहा कि वह मानकी दीदी के ससुराल जाकर उनको लिवा ले जाए। प्रेम व उसकी बहन मानकी में प्रगाढ़ स्थेह था। वह खबर मिलते ही बिना देरी किए घर चली आई। उसके आने तक दोनों सास-बहू ने गाँव के वैद्य से मिलकर दवा की व्यवस्था की। वैद्य ने जो बताया उसे सुन कर शीला के होश उड़ गए। वैद्य ने कहा, "प्रेम के गुर्दे खराब हैं। इसका दिल्ली के बड़े अस्पताल में इलाज कराना पड़ेगा। इसे ऑल इंडिया मेडिकल में ले जाओ। वह पूरी जाँच करेंगे।" खैर, रोगों से दो-चार होने के बाद किसी परिवार की क्या स्थिति होती है, कौन नहीं जानता। और गुर्दे के खराब होने जैसा गम्भीर रोग, शीला ने अपने भाई और ननद की



सहायता से हिम्मत रखते हुए इलाज कराने का फैसला लिया। जब वे ऑल इंडिया मेडिकल गए तो पता चला कि हफ्ते में एक बार डायलिसिस हुआ करेगी। अगर प्राइवेट अस्पताल में इलाज कराओ तो बहुत खर्च आता है। और डायलिसिस कोई स्थाई इलाज नहीं कि दो-चार बार कराने से रोगी स्वस्थ हो जाए। यह हमेशा ही कराना पड़ता। इसका केवल एक ही विकल्प है कि कोई अपना गुर्दा (किडनी) रोगी को दान (डोनेट) कर दे, तो वह और रोगी दोनों ही सकुशल जिंदा रह सकते हैं। मगर किडनी डोनर के सभी टेस्ट होंगे। यदि सभी मैच सही पाए गए तभी किडनी रोगी प्रेम को लगाई जा सकेगी। बाद में भी दवाएँ खानी होंगी और कुछ खाने-पीने का परहेज भी करना होगा। तब क्या था? डॉक्टर की बात सुनते ही शीला की खुशी का कोई पारावार न रहा। वह तुरन्त ही कहने लगी, "डॉक्टर साहब, आप मेरी किडनी लेकर इनको लगा दीजिए। आप कुछ भी कर के इन्हें ठीक कर दीजिए!"

"ठीक है।" डॉक्टर ने कहा।

और रोगी प्रेम व किडनी दाता शीला की सभी जाँच का कार्य शुरू हो गया। आप इसे संयोग का नाम देंगे, मैं तो प्रभु कृपा ही कहूँगी कि सभी टेस्ट मैच करने के उपरान्त निर्धारित दिन व समय पर प्रेम को शीला की किडनी लगा दी गई और दोनों सकुशल अपने घर लौट कर अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

कहानी यहीं पर खत्म नहीं हो जाती है मेरे दोस्तो। कहानी यहाँ से शुरू होती है। इस इलाज के चार वर्षों के बाद, जब यह दम्पति अपने संतानहीन होने का कोई दुख मन में लिए बिना ही हँसी-खुशी अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। क्योंकि ये दोनों ही संतोषी जीव थे और जीवन-मृत्यु संघर्ष की इतनी भयंकर त्रासदी से उबर कर आए थे। अतः माता का आशीर्वाद व भगवान की कृपा समझ कृतज्ञ भाव से जीवन-यापन कर रहे थे। तभी एक दिन एक शुभ सूचना ने इनके घर में खुशियों की नई किरण दिखला दी। जब इनकी

एक घरेलू नर्स ने माता अन्नपूर्णा को यह सूचना दी कि वह दादी बनने वाली हैं।

"क्या..?" एक सुखद आश्र्य से उनका मुँह खुला का खुला रह गया।

कहना न होगा कि समय आने पर शीला की गोद भर गई और माँ अन्नपूर्णा के बेटे प्रेम का आँगन खुशियों की किलकारियों से गूँज उठा और जिस दिन उन्हें पुत्र रक्त की प्राप्ति हुई, वह करवा चौथ का ही दिन था।

मैंने अपने जीवन में भगवान के चमत्कारों की अनगिनत कहानियाँ पढ़ी हैं और कर्म का संदेश देने वाली भगवान श्री कृष्ण की वाणी गीता भी पढ़ी है। मगर यह चमत्कार पहला है जिसे मैंने स्वयं अपनी आँखों से घटित होते हुए देखा। यह घटना कर्म और भावना के अद्भुत समन्वय की कहानी है जिसे भगवान ने अपने हस्ताक्षर करके आशीर्वाद प्रदान किया।

शिक्षा--(1) नेकी कर दरिया में डाल।

(2) बिन माँगे मोती मिले माँगे मिले न भीख। इसी बात को मानकर अच्छी लीजै सीख॥

यदि हमारे जीवन में कोई कमी है और किसी अन्य के पास वह है तो भी सही समय आने पर भगवान स्वयं देंगे, ऐसा विचार करना चाहिए। ज्यादा अधीर होने से क्या लाभ? भगवान जब कोई उपहार देना चाहते हैं तो स्वयं ही देते हैं। अन्यथा माँगने से भी नहीं दे पाते। जब वह देते हैं, तभी शायद सही समय होता है, हम इंसानों को यह मान लेना चाहिए। किसी के पास क्या है, जो हमारे पास नहीं, यह सोच-सोच कर हमें अधीर नहीं होना चाहिए। सेवा का निष्वार्थ तप व सन्तोष ही परम सुख का आधार है।



मनीषा जोशी मणि

ग्रेटर नोएडा-उत्तर प्रदेश

मो. 9873148408

सुबह के आठ बजे थे। द्वार पर ज़ोर ज़ोर की हाथ की थाप सुनकर बिंदी डर गई। इतनी सुबह कौन आ गया वह बड़बड़ाई, विदियां के पति मास्टर जी मध्यप्रदेश जिला टीकमगड़, तहसील लिधौरा के बड़े जाने माने व्यक्ति हैं, एक माह पहले अचानक उनको पेशाब करने में दिक्षित हुई। मास्टर जी की अच्छी जान पहचान थी क्योंकि वह उस इलाके के विधायक भी रहे थे, इसलिए दिल्ली एम्स में पहचान निकल गई और उनको दिल्ली भर्ती कराया गया एक हफ्ते पहले वहाँ उनका आपरेशन हुआ था। उनके साथ गांव के दो लोग गये थे।

मास्टर जी के दो दिन में आपरेशन के टांके कटने वाले थे, और वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहे थे। मगर फिर भी, विदियां सुबह सुबह दरवाजा पे थाप सुनकर डर गई। न जाने कौन आ गया। वैसे ही मन परेशान है। ऐसे में मेहमान, वह फिर बड़बड़ाई, दरवाजा खोला, तो देखा एक तीस बत्तीस साल का आदमी कुछ लकड़ियां कंधे पर रखकर खड़ा था। जिसने कमीज़ नहीं पहनी, केवल पैंट में था, उसने सोचा 'ऐसे कौन किसी के घर जाता है' फिर पूछा, 'कौन हो भाई?' ..

मुंह खोलते ही वह तपाक से बोला 'तुम कौन हो, मास्टरनी जी कहाँ हैं', बहुत उलांयते उलांयते आये है, सुना मास्टर जी खत्म हो गये। बहुत दुख हुआ सुनकर, सुना कल रात 12 बजे खत्म हुए, सुबह पांच बजे लाश गांव आई है, तो आ गये, क्या ले गये फूंकने को उन्हें? हम लकड़ियां लेकर आये हैं। कहाँ ले गये उनको जरा बता दें, हम भी वही चले जायेंगे।'

मास्टर जी खत्म हो गये

दरसअल इस गांव की रीत है कि जब कोई मरता है तो गांव के सभी लोग लकड़ी लेकर जाते हैं इसलिए वो भी कंधे पर लकड़ियां लादे हुए बेवकूफ सा खड़ा ऐसी बाते कर रहा था। एक पल को बिंदिया के आगे अंधेरा छा गया। यह क्या कह रहा है... कल तो मास्टरजी से बात हुई थी, तब तो चंगे भले थे। फिर थोड़ा स्थिर मन कर उसने बोला, 'क्या कह रहे हो? मास्टर जी से हमारी बात हुई थी, तब तो अच्छे थे।'

वह बदन पर खुजली करते हुए बोला, 'नहीं-नहीं हम सब गांव में बोलते हुए आए हैं, मास्टर जी खत्म हो गये हैं। कल रात बारह बजे दिल्ली से निकले हैं।'

वह इस कारण कमीज भी खोलकर आया था जिससे नहाना धोना भी करना पड़ा तो कमीज भीगेगी नही। ..बिंदी एक पल को बहुत घबरा गई फिर उसने पूछा 'ए बुडबक्क क्या बक रहे हो? मास्टर जी बिल्कुल सही हैं, कल रात तो बात हुई है, बिल्कुल ठीक थे वो। तुम पागल हो, सुबह-सुबह यहाँ आकर बकवास कर रहे हो, चलो फूटो, राम-राम कहाँ से आ गया यह पागल कुत्ता? दिमाग खराब कर दिया।' बिंदियां ने जी भर कर गाली दे डाली।

वह वहाँ से चल दिया, उसके जाते ही मास्टरनी ने मास्टर जी को फोन किया, मास्टर जी बिल्कुल सही थे अच्छा खासा बोल रहे थे ..मास्टरनी को सांस में सांस आई बेचारी बहुत घबरा गई थी। उसने मास्टर जी को बताया सुबह-सुबह एक आदमी ऐसी बकवास करते हुए आ गया



मास्टर जी जोर-जोर से हँसने लगे बोले अब हम जब गांव आएंगे, तो बोलेंगे हमारा भूत आ गया और दिलासा दिया कि घबराओ मत हम ठीक हैं, वह जैसे ही काम में लगी,

बाहर से फिर दरवाजे पर थाप पड़ी। अबकी बार दो लोग थे.. इससे पहले बिंदी कुछ कहती, वह बोले 'बहुत बुरा हुआ मास्टर जी नहीं रहे, बहुत अच्छे इंसान थे। अभी तक आई नहीं क्या लाश। सुना कल १२ बजे मरे, ना जाने कौन सी जानलेवा बीमारी लगी, बताओ भले चंगे थे मास्टर जी।'

बिंदी दोनों का चेहरा बारी-बारी से देखती रह गई। दोनों आपस में ही मास्टर की तारीफ करे जा रहे थे और आपस में ही दिलासा दे रहे थे। बिंदी जोर से बोली, 'कौन कुत्ता ये बात फैला रहा है? मास्टर जी बिल्कुल सकुशल है। बंद करो यह रोना धोना।'

वह बोले, 'एक बिना कमीज़ का आदमी था कंधे पर लड़कियां लेकर जा रहा था', तभी दूसरा बोला, 'हां-हां उसका नाम झुंगारू है, हमसे भी वही बोला, का मालूम उसको सपना हुआ हो' यह कहकर दोनों वहां से चलते बने। बिंदी उनको उल्लू की तरह देखती रह गई।

जब वह थोड़ी दूर चले गये तब विदियां बड़बड़ाई, 'बताओ अच्छे भले इंसान को मार दिया... बहुत कमीने लोग हैं गांव के।' उसके बाद दिन भर मास्टरनी के घर शोक के लिए आने वालों का तांता लगा रहा। दोपहर तक कांधें में दो-दो लकड़ियों के साथ पुरुषों का, तो शाम को गांव की ओरते आ गई ..हाय मास्टरनी बहुत बुरा हुआ, मास्टर जी नहीं रहे। सुना १२ बजे दिल्ली से निकले

अब तो मास्टरनी के सब्र का बांध टूट गया। भीतर से लाठी लेकर उन औरतों पर टूट पड़ी, 'कितने बार बताएं मास्टर जी जिंदा हैं, मास्टर जी खत्म नहीं हुए, मास्टर जी १२ बजे नहीं

मरे, बिना मरे ही उनके मरने की खबर सब जगह फैला दिये हो ...एक-एक दस-दस को बोलकर आ रहा है और हम जो सुबह से सबको बोल रहे की मास्टर जी नहीं मरे, मास्टर जी नहीं मरे, वो खबर तुम लोगों तक नहीं पहुंच रही। अब हमारे घर कोई आया न तो तुम्हारी टांग तोड़ देंगे।' सारी औरतें भागती नज़र आई। मास्टरनी ने डंडा धूमाकर ज़ोर से ज़मीन में पटका और चिल्ला कर बोली, 'और हां, सुन लो उसको तो हम छोड़ेंगे नहीं जिसने ये छूठी खबर फैलाई कि मास्टर जी खत्म हो गये ...'



विदर्भ कुमार
लखनऊ-उत्तर प्रदेश
मो. 9415508695

पुस्तक समीक्षा- वैदिक ऋषि च्यवन के जीवन की विशद् व्याख्या

सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ० सत्यदेव प्रसाद द्विवेदी 'पथिक' द्वारा रचित महाकाव्य कृति 'च्यवन चरित' के अध्ययन, मनन, और अनुशीलन के उपरांत निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'च्यवन चरित' कृति महाकाव्य के लक्षणों के आधार पर एक सफल प्रबंध महाकाव्य कृति है। यह भाव सौंदर्य, शिल्प सौष्ठव एवं रचनात्मक अभिप्रेत की दृष्टि से अप्रतिम एवं प्रभविष्णु कृति है। इसका कथानक बड़ा सरस, रोचक कौतूहलवर्धक एवं सन्देशप्रद है, जिसमें भारतीय वाग्दमय के वैदिक ऋषि च्यवन के जीवन की विशद् व्याख्या की गई है। डॉ० सत्यदेव प्रसाद द्विवेदी 'पथिक' ने मूल कथा को मनोवैज्ञानिक आधार पर छन्द के माध्यम से बहुत प्रभावशाली तरीके से सरस शैली में चित्रित किया है तथा कथा से पूर्व समर्पण के रूप में माँ सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की है। कृति के मुख्य पात्र च्यवन ऋषि है। इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों पुरुषार्थों को दृष्टिगत रखते हुए मानव जीवन में सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की स्थापना करना है और त्याग के महत्व को प्रतिपादित करना है। इसमें शांत, श्रृंगार व करुण रस की प्रधानता है। देशकाल और वातावरण कथानुरूप है। भाषा सरल, सुबोध, खड़ी बोली हिंदी है। बीच-बीच में तत्सम व तद्भव शब्दों का समावेश भी हुआ है। शैली सरस, चित्रात्मक और विश्वेषणात्मक है। अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग देखते ही बनता है, विशेष रूप से अनुप्रास, उपमा, रूपक, यमक, दृष्टांत, श्लेष, अतिशयोक्ति, पुनरुक्ति आदि का प्रयोग हुआ है। निष्कर्षतः जीवन में त्याग की उपादेयता को रेखांकित करती प्रबंध महाकाव्य कृति 'च्यवन चरित' भाव सौंदर्य, शिल्प सौष्ठव, शीर्षक, सन्देश, काव्य प्रयोजन, उद्देश्य एवं रचनात्मक

अभिप्रेत की दृष्टि से अत्यंत उत्कृष्ट एवं उपादेय है। यह पठनीय एवं संग्रहणीय काव्य कृति है जिसमें प्रथम बार च्यवन ऋषि के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को एकाकार रूप में प्रस्तुत किया गया है। सुधीजनों एवं साहित्य जगत में यह अपना उल्लेखनीय स्थान बनाएगी, ऐसा मेरा ध्वनि विश्वास है।

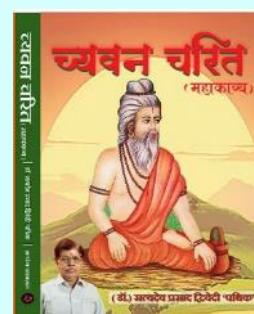
पुस्तक : 'च्यवन चरित' (महाकाव्य)

लेखक: डॉ० सत्यदेव प्रसाद द्विवेदी 'पथिक'

आईएसबीएन नम्बर 978-81-962354-8-2

प्रकाशक: शतरंग प्रकाशन, लखनऊ-226001

विदर्भ कुमार
विधान सभा मार्ग; लखनऊ
मो. 9415508695





सविता स्याल

गुरुग्राम – हरियाणा

मो. – 9818447999

जीवन पथ में आगे बढ़ते हुए कुछ देखी, कुछ सुनी, कुछ ज्ञेली घटनाएं हमारे मन मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। इन घटनाओं से जुड़े पात्रों की भावनाएं जब हमारे अन्तर्मन की गहराइयों को छू लेती हैं, और उन घटनाओं एवं पात्रों की भावनाओं को सशक्त शब्दों की सहायता से हम पाठकों तक पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं, तब एक कहानी बनती है। इसलिए कहते हैं कहानियाँ कहीं बाहर से नहीं आतीं अपितु हमारे चारों ओर बिखरी रहती हैं। कहानी साहित्य जगत की सबसे लोकप्रिय विधा है। समाज में फैली कुरीतियों के प्रति सजग एवं संवेदनशील लेखिका सुश्री मनजीत कौर 'भीत' का पहला कहानी संग्रह 'आवाज़' हाथ में आया तो बहुत प्रसन्नता हुई कि अब प्रिय सखी मनजीत ने भी कहानी सृजन के क्षेत्र में कदम रखा है। इसके लिए मैं उन्हें बधाई देती हूँ। संग्रह के आरंभ में ही उन्होंने अपना उद्देश्य स्पष्ट कर दिया है- "एक बेहतर समाज के निर्माण हेतु समाज में फैले अन्याय, भ्रष्टाचार और कुरीतियों के खिलाफ आओ आवाज़ बुलंद करें" ऐसा उनकी इन पंद्रह कहानियों के संग्रह में देखने को भी मिलता है।

यहाँ मैं संक्षेप में कहानियों का झरोखा आपके सामने प्रस्तुत करूँगी-

प्रथम कहानी 'आवाज़' का पात्र रघुनाथ मूक प्राणी गैंडे पर होने वाले अत्याचार के प्रति संवेदनशील है और वह उसके सींग की तस्करी रोकना और निर्दयी तस्करों को सजा दिलाना चाहता है। लेखिका ने इस कहानी में रघु की निढ़रता और संघर्ष को अपने शब्द शिल्प से खूब उभारा है और वह पाठकों के मन में निर्दयी तस्करों के प्रति आक्रोश भरने में सफल हुई है।

दूसरी कहानी 'तलाश' की बात करें तो उसके माध्यम से लेखिका ने यह संदेश दिया है कि चाहे कितना भी धन दौलत हो वह मनुष्य को खुशी और सुकून नहीं दे सकते जितना कि संस्कारवान बड़े। नायक आकाश बड़ी बड़ी कोठियों, गाड़ियों का मालिक होते हुए भी शांति की तलाश में है।

तीसरी कहानी 'बाइज़त बरी' में एक निर्दोष नौजवान राहुल पर उसकी सहकर्मी कृष्णा शर्मा के बलात्कार का इल्ज़ाम लग जाता है। सात वर्ष तक सजा भुगतने के पश्चात उसकी सहपाठी जो अब एक वकील बन चुकी है उसे न्याय दिलाती है। लेखिका समाज से यह प्रश्न करती है कि क्या उस निर्दोष नौजवान के बीते हुए सात वर्ष लौटाये जा सकते हैं। क्या उसके माथे पर लगा कलंक धुल सकता है और क्या वह एक सामान्य जीवन जी सकता है?

चौथी कहानी 'शार्टकट' है, जिसे हरियाणा की प्रतिष्ठित पत्रिका 'हरिगंधा' में स्थान दिया गया। इस कहानी का नायक राजेश जो रातोंरात अमीर होना चाहता है और रिश्वत मांगते पकड़ा जाता है। उसे बीस वर्ष जेल की हवा खानी पड़ती है। दूसरी ओर उसका दोस्त अमन ईमानदारी की सीमित कमाई से अपने बच्चों को संस्कार दे होनहार बनाता है। उसी अमन के मुख से लेखिका यह संदेश देती है कि सत्य ईमानदारी की नींव पर खड़े किए गए घर देर तक टिकते हैं। संवादों और प्रति संवादों से कहानी को सशक्त बनाया गया है।

'इश्क या इंतकाम' कहानी एसिड अटैक से संतप्त एवं त्रस्त लड़की की कहानी है। जिसकी सहायता करने के लिए इसी एसिड अटैक की शिकार उसके विद्यालय की



प्रधानाचार्या आती है और उसे जीवन में लोगों की मदद करने का सुझाव देती है। बहुत सुंदर संदेश इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने देने की कोशिश की है।

कहते हैं सुबह का भूला अगर शाम को वापस घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। 'वापसी 1' कहानी इसी की मिसाल है। बुरी संगत में पड़े चेतन को अपने पिता की रिटायरमेंट पार्टी के पश्चात एहसास होता है कि ईमानदारी और मेहनत के कारण उसके पिता को कितना मान सम्मान मिला और वह अपने किए पर पछताता है।

सातवीं कहानी 'शक्ति' किशोरावस्था में भटक गई एवं कम उम्र में बिन ब्याही माँ बनी ऐसी आदिवासी लड़की की है जो संथाल समुदाय के एक लड़के से प्यार करती है। लड़का अपने परिवार के दबाव में आकर उसे ठुकरा देता है पर वह हिम्मत नहीं हारती। आंगनबाड़ी की एक कार्यकर्ता मंगला दीदी उसकी सहायता करती है। उस लड़की की संघर्ष गाथा एक पत्रिका में छपती है और मेहनत एवं आत्मविश्वास की मिसाल बन जाती है। लेखिका की यह कहानी 'शब्द निष्ठा' कहानी प्रतियोगिता से पुरस्कृत हो चुकी है।

'बस अब और नहीं' कहानी एक ही पति की प्रताङ्गनाओं से त्रस्त दो पत्रियों की कहानी है। पहली परित्यक्ता पत्री वकील बन उसे सजा दिलवाती है और दूसरी पत्री को न्याय। यहाँ लेखिका ने एक औरत को दूसरी औरत की सहायिका के रूप में कर एक नया दृष्टिकोण इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'संजीवनी' एक वृद्ध माता-पिता की कहानी है। विदेश में बसे जिनके स्वार्थी बेटे अपनी माँ की मृत्यु का समाचार पाकर भी पिता को सांत्वना देने नहीं आते। वह अपने घर को वृद्धाश्रम बना अपने जैसे कुछ साथी ढूँढ कर उनके साथ अपने जीवन के शेष वर्ष बिताने का निर्णय ले लेते हैं। स्वार्थी-निर्मोहीं बच्चों को इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने सुंदर संदेश दिया है। 'जुनून' एक विकलांग लड़की की कहानी है जो अपनी एक टांग खोने के पश्चात भी अपनी मेहनत और संघर्ष के बल पर

इतिहास रचती है। अपनी कृत्रिम टांग के साथ अभ्यास कर अनेक मैडल जीतती है।

ग्यारहवीं कहानी 'आकाश' एक ऐसे बेटे की कहानी है जिसका रुद्धान पढ़ाई से अधिक फुटबॉल खेलने में है लेकिन उसके पिता को यह बात नागवार गुजरती है। वह उस पर पढ़ाई कर अच्छे नम्बर लाने का जोर डालते हैं। लेकिन अपने सहकर्मी शर्मा जी के बेटे की आत्महत्या की खबर सुन और अपने अमेरिका से आये मित्र के समझाने पर पिता की आँखें खुल जाती हैं और वह बेटे को खिलाड़ी बनाने में सहयोग देने को तैयार हो जाते हैं। इस कहानी में माता-पिता की बच्चों के भविष्य को लेकर जो चिंता लेखिका ने दिखाई है वह बहुत स्वाभाविक जान पड़ी है। बारहवीं कहानी 'कर्मभूमि' कैप्टन राकेश और फौज में सर्जन डॉ नमिता की प्रेम कहानी है। आतंकवादियों से मुठभेड़ में कैप्टन राकेश शहीद हो जाते हैं। डॉ नमिता अपने बेटे अमन को भी फौजी बनाती है। उसकी पासिंग आउट परेड में शामिल होने पर उसे पति राकेश की याद उदास तो करती है परन्तु बेटे को भारत मां की सेवा में भेजने पर गर्व भी होता है। लेखिका मनजीत की कहानियों में संवादों का प्रयोग बहुत प्रभावशाली ढंग से किया गया है। पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है, इस कहानी में कैप्टन राकेश और डॉ नमिता के संवादों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया गया है। 'दोषी कौन' कहानी का आरंभ भी संवादों से होता है जो पाठक को जिज्ञासु बनाता है। मेघना एक मंदबुद्धि लड़की है जिसने बचपन में अपनी माँ को खो दिया है। सम्पन्न पिता जैसे तैसे उसे किसी कोर्स की डिग्री दिलाकर अपनी एक सहकर्मी के बेटे से उसकी शादी कर देते हैं। लेकिन उसके सुसुराल बालों को जब उसके मंदबुद्धि होने का एहसास होता है तो वे मेघना को रखना नहीं चाहते और उसके पिता को खरी खोटी सुनाते हैं। लेकिन अंत में लेखिका पाठकों के चिंतन के लिए यह प्रश्न छोड़ देती है



कि इसमें दोष मेघना का है या उसकी परिस्थितियों का? अंत की दो कहानियों की बात करें तो कहानी 'बहुत देर बाद' पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर बुनी गई है। जहां एक परिवार की चार बहुओं में से दो बहुत अमीर घराने से हैं और बहुत दान दहेज लेकर आई हैं। परंतु छोटी बहू नूतन जो एक मध्यम वर्गीय परिवार से है, उसे दहेज न लाने पर सास ससुर से ताने सुनने पड़ते हैं। नूतन फिर भी सहज भाव से उनकी सेवा करती है। वृद्ध और विधुर हुए बीमार गिरधारी लाल से सभी बहुओं ने मुख मोड़ लिया तब नूतन ही काम आई। गिरधारी लाल का पश्चाताप देखकर अंत में वह यही कहती हैं "पापा आपने मुझे बहुत देर बाद.... पहचाना"। मनजीत की सभी कहानियां सुखांत नहीं हैं, जोकि जीवन की एक कड़वी सज्जाई भी है। कहीं वह अंत पाठकों की कल्पनाशक्ति पर छोड़ देती हैं तो कहीं वह कुछ प्रश्न खड़े कर देती हैं।

अंतिम कहानी 'वापसी 2' एक बेरोजगार नवयुवक की विजय की कहानी है जो मोटी तनखावाह के लालच में अपना देश छोड़ दुबई में नौकरी करने को तैयार हो जाता है, और जालसाज एंजेंट के चंगल में फंस दो लाख रुपए इडवांस भी दे देता है। पत्नी और बच्चों को अपने पास बुलाने का वादा कर वह दुबई एयरपोर्ट पहुंचता है तो उससे धोखे से रूसी भाषा में लिखे कुछ कागजों पर हस्ताक्षर करवा उसे रूस भेज दिया जाता है और रशियन आर्मी में भर्ती कर लिया जाता है। वहां वह ढाई वर्षों तक रूसी सेना की तरफ से युद्ध लड़ता है। युद्ध विराम के पश्चात ज़ख्मी विजय का वहां उपचार किया जाता है। दोनों देशों के बीच हुए समझौते एवं प्रयासों से विजय स्वदेश अपने परिवार के पास लौट आता है।

सभी कहानियों के विषय रोचक बन पड़े हैं और हमारे आसपास जो घटित हो रहा है या हम सुनते हैं वहीं से उठाए गए हैं। लेकिन मनजीत ने अपने शब्द कौशल से उन्हें रोचक बना पाठकों के सम्मुख रखा है। विपरीत परिस्थितियों से

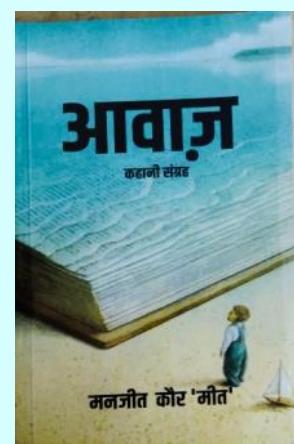
जूझते उनकी कहानी के पात्रों के प्रति पाठक की सहानुभूति जगाने में लेखिका कुछ हद तक सफल हुई है। यदि कहानियों की केवल प्रशंसा की जाए और जिन बिंदुओं की ओर लेखिका का ध्यान दिलाना चाहिए उन्हें नज़रांदाज़ कर दिया जाए तो यह समीक्षा के साथ अन्याय होगा। मुझे कहीं कहानियों में अनावश्यक विस्तार लगा और कसावट की कमी लगी। वर्तनी की अशुद्धियां भी प्रुफ रीडिंग के समय छूट गई हैं। कुछ कहानियों में लगा कहानी को अचानक समाप्त की ओर ले जाया गया है। ऐसा सभी कहानियों में नहीं किसी किसी कहानी में दिखता है। प्रथम कहानी संग्रह की दृष्टि से देखा जाए तो कहानीकार यह प्रयास प्रशंसनीय एवं सराहनीय है।

कहानी संग्रह - आवाज़

लेखिका - मनजीत कौर 'मीत'

ISBN - 978-81-976779-9-1

प्रकाशक - साहित्य 24 पब्लिकेशन, पालम विलेज, नई दिल्ली 110045





डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय

रांची - झारखण्ड

मो. 9431595318

शुभाशंसा 'शजर पे चांद उगाओ'- एक लाजबाब ग़ज़ल संग्रह

किसी सरस्वती पुत्री की सुदीर्घ सारस्वत साधना का आकलन करना आसान काम नहीं है, विशेषतः उस सरस्वती पुत्री की साधना का आकलन करना तो और भी कठिन कार्य है; जिसका व्यक्तित्व और कृतित्व बहु-आयामी हो, जिसके चिंतन का आकाश विस्तृत और व्यापक हो और जो एक साथ कई भाषाओं एवं विधाओं में निष्णांत हो, ऐसी वाणी-साधिका का बहिरंग जितना व्यापक होता है, अंतरग कहीं उससे अधिक गहरा। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू की परम विदुषी डॉ पूनम माटिया एक ऐसी ही वाणी-साधिका और सरस्वती की वरद पुत्री हैं। कविता करना कठिन है और कविता में स्वाभाविकता की अभिव्यक्ति तो और भी कठिन कार्य है। अग्नि पुराण के काव्य शास्त्रीय भाग में महर्षि वेदव्यास ने लिखा है: नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभाः। कवित्वं तत्र दुर्लभं, शक्तिः तत्र सुदुर्लभाः। अर्थात् इस संसार में मनुष्य योनि में जन्म लेना कठिन है, विद्या की प्राप्ति उससे कठिन है, कविता करना उससे कठिनतर और कविता में स्वाभाविक अभिव्यक्ति की उपस्थिति एवं शक्ति तो कठिनतम है। डॉ. पूनम माटिया जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार, सुकवयित्री, ग़ज़लगो एवं मनीषी विदुषी हैं। इन्होंने मैट्रिक से एम ए तक सभी परीक्षाएं उच्च श्रेणी में पास की हैं। आपकी अनेक कृतियां प्रकाशित हैं:- 1स्वप्न शृंगार-2011, 2 अरमान -2012, 3 अभी तो सागर शेष है-2015, 4अभी तो सागर शेष है (द्वितीय भाग)2022, 5 क्षितिज के छोर तक-2024, 6 कलर्स आफ सिम्फनी-जुलाई 2024(अंग्रेजी कविताओं का संकलन)। इनकी शताधिक रचनाएं विभिन्न राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं प्रशंसित हुई हैं। आकाशवाणी, दिल्ली और दूरदर्शन, दिल्ली से आये दिन आपकी वार्ताएं प्रसारित होती रहती हैं।

लोकप्रियता यदि किसी ग़ज़लकारा की सफलता एवं कुशलता की कसौटी है-डॉ पूनम माटिया इसकी ज्वलंत उदाहरण रही है। इन्होंने सफलता पूर्वक अपने कर्मों का निष्पादन कर प्रभुत यश और प्रतिष्ठा पाई है। साहित्य, संगीत और कविता में इनकी गहरी रुचि इस बात का प्रमाण है कि ये अतिशय संवेदनशील हैं और मानवता से प्रेम करती हैं। यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने कभी कहा था कि परम पिता परमेश्वर को जब अपने द्वारा निर्मित सृष्टि के लोगों से बातचीत करनी होती है, तो वह केवल दो को ही माध्यम बनाता है या तो वह संतो के मुखारविंद से बोलता है या कवियों के मुखारविंद से। आधुनिक युग के सबसे बड़े लोकप्रिय गीतकार डॉ गोपाल दास नीरज ने लिखा है:- आत्मा के सौंदर्य का शब्द रूप है काव्य। मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य॥। अस्तु मुझे लिखने की इजाजत दीजिए कि डॉ पूनम माटिया को मानव होने का भाग्य और कवयित्री होने का सौभाग्य प्राप्त है, क्योंकि उनकी कई कविता पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और भविष्य में भी प्रकाशित होंगी। कवयित्री डॉ पूनम माटिया ने ज़िंदगी को करीब से देखा है। तभी ज़िंदगी की तलियों को कम करने के लिए एक दूसरे के सहयोग की अपेक्षा करती हैः- हाथ में हाथ दो तो सही, साथ मैं हूँ चलो तो सही। तलियां खत्म हो जायेगी, कुछ कहो, कुछ सुनो तो सही। मौत को भी मात देने वाली डॉ पूनम माटिया अपनी शायरी से विमुख नहीं होती और लिखती हैः- मौत का है सिलसिला पर ज़िंदगी अपनी जगह, दर्द का अंवार है पर शायरी अपनी जगह। नदीम अहमद नदीम ने डॉ पूनम माटिया के व्यक्तित्व और



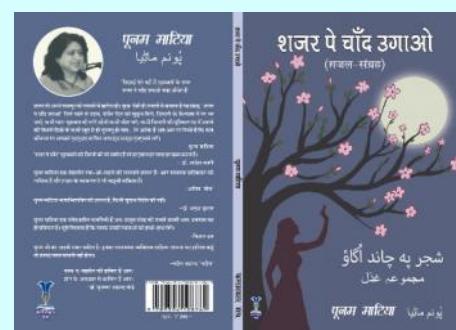
कृतित्व पर लिखा है: "अदब की दुनिया में श्रीमती पूनम माटिया का नाम अपरिचित नहीं है। कविता और रुहानियत से भरपूर ग़ज़लों के माध्यम से आपने जो मकाम हासिल किया है, काबिले तारीफ है। पूनम जी का अदबी सफर तबील है, इन्होंने सिर्फ़ लिखने के लिए नहीं लिखा या शौकिया लेखन नहीं किया वरन् इनका रचनात्मक व्यक्तित्व साहित्य साथना का हासिल कहूँ तो शायद गलत बयानी नहीं होगी। मुख्लिस शब्दियत की मालिक पूनम जी इंसानियत और कौमी यकजहती की पैरोकार हैं। इनकी शब्दियत के पहलू इनकी तख्लीकात में भी नुमायां होते हैं।"

डॉ आदेश त्यागी के शब्दों में:-‘शजर पे चांद’ मुहब्बतों की रौशनी की ओर उम्मीद है जो हर इंसान हर जगह हर वक्त करता है।" अनिल मीत ने लिखा है- "पूनम माटिया एक बेहतरीन लब-ओ-लहजे की ग़ज़लगो शायरा हैं। आप शायराना शब्दियत की मालिक हैं और ग़ज़ल के व्याकरण से भी बखूबी वाकिफ हैं।" अनुज कुमार के शब्दों में -पूनम माटिया भावाभिव्यक्ति की शायरा हैं, किसी ज़ुबान विशेष की नहीं।"

डॉ पूनम माटिया ने इस संग्रह की भूमिका में स्वीकार किया है कि -शायर तो अपने तसव्वूर को लफ़ज़ों में ढालेगा ही। कुछ ऐसी ही ग़ज़लों से सजाया है-यह संग्रह -शजर पे चांद उगाओ, जिसे पढ़ने से उदास- बेचैन दिल को सुकून मिले, ज़िंदगी के कैनवास में रंग भर जाएं, कभी प्यार मुहब्बत की तरंगें उठें, तो कभी जोश जगे, कभी ज़िंदगी की मुश्किल राह में उजाले की किरणें दिखें, तो कभी खुद से ही गुफ्तगू हो जाए। रंग अनेक हैं, अब आप पर निर्भर है कि कब, कौन सा रंग आपको गुदगुदाए या फिर आप खुद व खुद गुनगुनाने लगें।" ग़ज़ल संग्रह का शीर्षक शजर में चांद उगाओ एक ग़ज़ल के मिसरे से लिया गया है जो बहुत ही सार्थक एवं समीचीन है:- दिखाई देते नहीं हैं मुहब्बतों के समर, शजर पे चांद उगाओ बड़ा अंधेरा है। राष्ट्र कवि रामधारी सिंह

दिनकर ने लिखा है कि सरस्वती की जवानी कविता है और बुद्धापा दर्शन है। पूनम माटिया ने कविताएं जवानी में लिखीं, प्रकाशित कराई और प्रभूत प्रशंसा पाई। कविता ईश्वरीय वरदान है और डॉ पूनम माटिया को यह ईश्वरीय वरदान प्राप्त है। अगर यह सच है कि छायावाद के कवि शब्दों को तौल कर रखते हैं, प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोल कर रखते हैं, नई कविता के कवि शब्दों को गोल कर रखते हैं, सन् साठ के बाद के कवि शब्दों को खोल कर रखते हैं। तो मैं कहना चाहूँगा कि डॉ पूनम माटिया ने अपनी इन ग़ज़लों में शब्दों को खोल कर रखा है, यही इनकी काबिलियत है; जिसके लिए ये बधाई की पात्र हैं। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं के पाठक एक साथ आनंद उठा सकते हैं क्योंकि ग़ज़लों का उर्दू पाठ भी सहज और सामने पृष्ठ पर उपलब्ध है। भाषा एवं कथ्य दोनों दृष्टियों से उनकी ग़ज़लें वैभव पूर्ण रही हैं। एतदर्थ में इनके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ:-

मिले सदा शुभ हर्ष आपको, नहीं कभी आए अपर्कष।
सतत् सुधा साहित्य प्रवाहित, लिखे लेखनी यश उत्कर्ष॥





डॉ. देवकी नंदन शर्मा –
प्रधान संपादक

साहित्यिक हलचल एक बार फिर बुकर का आना.....



भारत के लिए एकबार फिर स्वर्णिम अवसर आया है....भारतीय साहित्यकार और अधिवक्ता बानू मुश्ताक ने अपने लघु कहानी- संग्रह 'हार्ट लैम्प'(हृदय दीप) के लिए अन्तर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतकर एक अभिनव इतिहास लिख दिया है... इससे पूर्व 2022 में गीतांजली श्री ने 'टाब आफ सैंड' (रेत की समाधि) उपन्यास के लिए बुकर पुरस्कार जीता था, जिसका हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद डेजी राकवेल ने किया था...

'हार्ट लैम्प' का कन्नड से अंग्रेजी में अनुवाद कर्नाटक के कोडाणु की लेखिका और साहित्यिक अनुवादक दीपा भारती ने किया है...

कर्नाटक की प्रतिष्ठित साहित्यकार बानू मुश्ताक ने अपनी सृजन यात्रा 1970 दशक से प्रारम्भ की थी। उन्होंने प्रसिद्ध कन्नड समाचार पत्र लंकेश पत्रिका के साथ एक दशक तक काम किया ...आजादी की प्रखर पथधर बानू मुश्ताक को धमकियों और सामाजिक बहिष्कार जैसी चुनौतियों का

सामना भी करना पड़ा... महिलाओं के दर्द, पीड़ा और असहाय जीवन के लिए उनकी भावनात्मक प्रतिक्रिया ने दृढ़ता प्रदान की... बानू मुश्ताक की कहानियों के अनेक पात्र समाज और पितृसत्तात्मक सत्ता के मानदंडों को चुनौती देते हैं...उनकी रचनाओं में हास्य और मार्मिकता भी झलकती है ...

सम्मानित कृति 'हार्ट लैम्प' में 1990 से 2023 के मध्य रचित 50 कहानियों में से मात्र 12 कहानियों को चुना गया है...संग्रह की सभी कहानियां बहुत-बहुत दिलचस्प हैं, क्योंकि इनमें दादी अवसाद से उबरने के लिए कोल्ड ड्रिंक पीने की लालसा रखती हैं, तो मौलवी को गोबी मंचूरियन का जुनून है, एक पढ़ी की ईर्ष्या उसके पति को अपनी विधवा मां के लिए दूल्हे की तलाश के लिए मजबूर करती है...

अस्तु, भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की वैश्विक स्वीकार्यता पर यह गोरवान्वित होने का पल है...लंदन की टेट मार्डन गैलरी में बुकर पुरस्कार ग्रहण करते हुए भारतीय साहित्यकार बानू मुश्ताक और अनुवादक दीपा भारती ने भारतीय साहित्य की महक विश्व भर में फैला दी है...
आकाशभर अभिनन्दन...

कोटि: वन्दन....



डॉ. देवकी नंदन शर्मा –

प्रधान संपादक

अविस्मरणीय महोत्सव....

कल्पना कीजिए ... किसी कथाकार की 22 कहानियां 22 भारतीय भाषाओं में लगातार चौदह घंटे तक एक ही मंच पर मंचित की जायें... और दर्शक बदलती भाषाओं और वेशभूषणों के साथ भारत के भिन्न-भिन्न भागों की सामाजिक सञ्चाइयों से रूबरू होते रहें... उनके हृदय सिहरते और आंखे नम होती रहें... तौ यह निश्चित ही अविस्मरणीय होगा...

मैं किसी कल्पना लोक की बात न करके 10 सितम्बर 2025 को एल टी जी सभागार दिल्ली में आयोजित 'प्रेम उत्सव' की चर्चा कर रहा हूँ.... जिसमें कथा सम्प्राट मुशी प्रेमचंद की 22 कहानियों को 22 भारतीय भाषाओं में विभिन्न प्रांतों के नाट्य कलाकारों ने मंचित करके एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक यात्रा को अंजाम दिया...



यूँ तो अब तक मुशी प्रेमचंद को हिन्दी और उर्दू का कालजयी कहानीकार माना जाता रहा है ... मगर इस उत्सव में 'पूस की रात' को संस्कृत, 'सौत' को तमिल, 'गृहनीति' को पंजाबी, 'ईदगाह' को उड़िया आदि - आदि में देखकर यही सिद्ध हुआ; स्थान, प्रांत या देश अलग अलग- अलग हो सकते हैं मगर भावों और रिश्तों की कसक एक सी ही होती है ...

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर स्मृति न्यास द्वारा आयोजित इस आयोजन को मैं उत्सव नहीं, बल्कि महोत्सव कहूँगा, क्योंकि इसने प्रमाणित कर दिया - भावनाएं भाषाओं की मोहताज नहीं होतीं... भाषाई भिन्नताओं के मध्य भावनाओं का सूत्र मानवता को एकता के बंधन में बांधता है..

यह महोत्सव यह भी रेखांकित करने में सफल रहा है कि मुशी प्रेमचंद मात्र हिन्दी और उर्दू के ही नहीं, पूरे भारत और समग्र मानवता के अमर कलमकार हैं .. भारत की सांस्कृतिक विविधता और एकता का अविस्मरणीय महोत्सव... विराट संकल्पना एवं जीवन्त प्रस्तुति ... एक ही मंच पर तमिल, तेलुगु, कब्रिड, उर्दू, बांग्ला, पंजाबी, डोगरी, मैथिली, हिन्दी और संस्कृत जैसे भिन्न-भिन्न भाषाई रंगकर्मियों की गौरवशाली उपस्थिति का कोटिशः अभिनन्दन बन्दन...

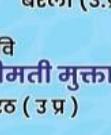
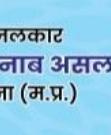
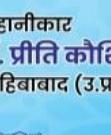


शुभम् सम्मान 2025

14 सितंबर 2025 को शुभम् साहित्य, कला एवं संस्कृति संस्थान, गुलावठी ने अपने 34वें स्थापना दिवस पर आयोजित शुभम् महोत्सव में अपने शिखर सम्मान (शुभम् रत्न और शुभम् श्री) के साथ गीत, गङ्गल, कहानी, समाज सेवा और शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट विभूतियों को भी सम्मानित किया। समानित विभूतियों के विवरण प्रस्तुत हैं:

शुभम् महोत्सव-2025

सम्मानित विभूतियाँ

 <p>शुभम् रत्न-2025 साहित्यकार श्री योगेन्द्र कुमार ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)</p>	 <p>शुभम् श्री-2025 साहित्यकार डॉ. लवलेश दत्त बटेली (उ.प्र.)</p>
 <p>स्त. शर्वि भूषण मित्तल स्मृति कविता गौरव सम्मान-2025</p>	 <p>कवि श्रीमती मुक्ता शर्मा मेटन (उ.प्र.)</p>
 <p>स्त. डॉ. सिंदाजुद्दीन कुरेशी स्मृति गङ्गल गौरव सम्मान-2025</p>	 <p>गङ्गलकार जनाब असलम राशिद जुना (म.प्र.)</p>
 <p>स्त. नाहर सिंह स्मृति कहानी गौरव सम्मान-2025</p>	 <p>कहानीकार डॉ. प्रीति कौशिक साहिबाबाद (उ.प्र.)</p>
 <p>स्त. रामलाल कंसल स्मृति शिक्षा गौरव सम्मान-2025</p>	 <p>शिक्षक डॉ. राजपाल सिंह लखावठी, बुलन्दशहर (उ.प्र.)</p>
 <p>स्त. पवन कुमार कंसल स्मृति समाज गौरव सम्मान-2025</p>	 <p>समाजसेवी श्री निर्कुंज कुमार तोमर बुलन्दशहर (उ.प्र.)</p>



विरासत

(राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पर लिखी कविता के कुछ अंश)

बापू ! मैं तेरा समयुगीन;
है बात बड़ी, पर कहने दें;
लघुता को भूल तनिक गरिमा के
महासिन्धु में बहने दे।
यह छोटी-सी भंगुर उमंग पर !
कितना अच्छा नाता है,
लगता है पवन वही मुझको
जो छू कर तुझको आता है।

सच है कि समय के स्मृति-पट पर
रवि-सा होगा तू भासमान,
हम चमक-चमक बुझ जायेंगे क्षीणायु,
क्षणिक उड़ु के समान ।
पर, कहीं राम-सा साथ-साथ
तेरे पीछे चल पड़ा देश,
बापू ! मैं तेरा समयुगीन
होकर हूँगा उपकृत विशेष ।

तू कालोदधि का महास्तम्भ,
आत्मा के नभ का तुंग केतु ।
बापू ! तू मर्त्य-अमर्त्य, स्वर्ग-
पृथ्वी, भू-नभ का महासेतु ।
तेरा विराट यह रूप कल्पना-
पट पर नहीं समाता है ।

जितना कुछ कहूँ, मगर, कहने को
शेष बहुत रह जाता है ।

लज्जित मेरे अंगार; तिलक
माला भी यदि ले आऊँ मैं ।
किस भाँति उड़ू इतना ऊपर ?
मस्तक कैसे छू पाँऊँ मैं ।
ग्रीवा तक हाथ न जा सकते,
उँगलियाँ न छू सकतीं ललाट ।
वामन की पूजा किस प्रकार
पहुँचे तुम तक मानव विराट ?

(महात्मा गांधी की नोआखाली-यात्रा के समय विरचित
जनवरी १९४७ ई०)



भावभीनी श्रद्धांजलि



1938-2025

‘शुभोदय’ साहित्यिक ई-पत्रिका परिवार अपने संरक्षक, पूर्व निदेशक-केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा और अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध साहित्यकार परम् आदरणीय स्मृतिशेष डॉ. कमल किशोर गोयनका, के 1 अप्रैल, 2025 को परलोकगमन पर अश्रूपूरित श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता है। उनका निधन ‘शुभोदय’ परिवार के हर सदस्य की व्यक्तिगत और सामूहिक क्षति है। डॉ. गोयनका न केवल ‘शुभोदय’ के संरक्षक थे अपितु हमें उनका स्नेह, उत्साहवर्धन और मार्गदर्शन भी निरंतर प्राप्त होता रहा था। ‘शुभोदय’ को अपने 2023 के वसंत अंक में उनका साक्षात्कार प्रकाशित करने का भी गौरव प्राप्त है। यह साक्षात्कार अब हमारी धरोहर है जो उनकी सहृदयता को हमेशा जीवंत बनाए रखेगा। ‘शुभोदय’ परिवार एक उत्कृष्ट साहित्यकार, महान व्यक्तित्व और अपने प्रेरणा पुंज के दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प दोहराते हुए स्व. डॉ. कमल किशोर गोयनका की स्मृतियों को शत शत नमन करता है।

'शुभोदय' ई-पत्रिका में रचना प्रस्तुत करने के लिए सामान्य नियम

भाषा एवं लिपि: 'शुभोदय' हिंदी भाषा की ई-पत्रिका है। अतः सभी रचनाएं हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि में उचित व्याकरण और वर्तनी के साथ लिखी जानी अपेक्षित हैं।

प्रकाशन अंक: शुभोदय के वर्ष में दो अंक 'वसंत अंक' और 'शरद अंक' प्रकाशित किए जाते हैं। अतः वसंत अंक के लिए 31 जनवरी तथा शरद अंक के लिए 31 अगस्त तक टंकित रचनाएं शुभोदय की ईमेल: shubhodayashubham@gmail.com पर प्राप्त हो जानी चाहिए।

विषय: रचना किसी भी विवादास्पद विषय पर या किसी समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली या राजनीतिक, धार्मिक, जातीय अथवा क्षेत्रीय विद्वेष पैदा करने वाली नहीं होनी चाहिए।

रचनाओं के प्रकार: शुभोदय के लिए लेख, कहानी, लघु कथा, संस्मरण, कविता, गीत, गजल, पुस्तक-समीक्षा और साहित्य जगत की महत्त्वपूर्ण हलचल आदि से सम्बन्धित मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं भेजी जा सकती हैं।

रचनाओं का आकार: 'शुभोदय' ई-पत्रिका के लिए कविता, गीत, गजल, लघु-कथा के लिए अधिकतम 300 शब्द तथा लेख, कहानी, संस्मरण के लिए 1000 शब्द सीमा निर्धारित है।

मौलिकता: शुभोदय में केवल मौलिक रचनाएं ही स्वीकार की जाती हैं। यदि किसी अन्य रचनाकार की कृति से कोई उद्धरण लिया गया है तो उसका उल्लेख कोष्ठक में या फुट नोट में किया जाना चाहिए।

नैतिक मानक: लेखन में नैतिक मानकों का पालन अनिवार्य है। अभद्र भाषा या असामाजिक सामग्री अस्वीकार्य है।

स्वरूपण: स्पष्ट शीर्षकों, उपशीर्षकों और अनुच्छेदों के साथ लेख को सही ढंग से प्रारूपित किया जाना चाहिए। रचना यूनिकोड में टंकित होनी चाहिए। रचनाओं की वर्ड और पीडीएफ दोनों ही फाइल भेजी जानी चाहिए।

चित्र: यदि लेख में चित्र हैं, तो लेखक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे प्रासंगिक हैं, उच्च गुणवत्ता वाले हैं, और उन पर उपयुक्त शीर्षक हैं।

कॉपीराइट: लेखकों को अपने लेखों के कॉपीराइट 'शुभोदय' ई-पत्रिका में स्थानांतरित करने के लिए सहमत होना चाहिए, जो ई-पत्रिका को प्रिंट और डिजिटल सहित किसी भी प्रारूप में लेख प्रकाशित करने की अनुमति देता है।

प्रस्तुत करने की समय सीमा: रचनाकार 'शुभोदय' ई-पत्रिका द्वारा निर्धारित समय सीमा में अपनी रचनाएं प्रस्तुत करें। निर्धारित अवधि के बाद प्राप्त रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादन: 'शुभोदय' ई-पत्रिका संपादक मंडल लेखक के मूल अर्थ और मंशा को बनाए रखते हुए स्पष्टता, लंबाई और शैली के लिए लेखों को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

स्वीकृति: 'शुभोदय' ई-पत्रिका संपादक मंडल लेखकों को उनके लेखों की स्वीकृति या अस्वीकृति के बारे में सूचित करेगा। उचित संशोधन के बाद अस्वीकृत लेख पुनः जमा किए जा सकते हैं।

भुगतान: लेखकों को उनके द्वारा प्रस्तुत रचनाओं के लिए कोई मौद्रिक मानदेय नहीं दिया जा सकेगा।

आवश्यक जानकारी: रचना के साथ रचनाकार का नवीनतम फोटो (जेपीजी या जेपीईजी में), नाम, पता एवं मोबाइल नंबर होना चाहिए।

अस्वीकरण: किसी रचना में व्यक्त विचार और उनकी मौलिकता का पूरा दायित्व रचनाकार का होगा। पत्रिका में प्रकाशित होने पर भी उसकी जवाबदेही रचनाकार की होगी, संपादक मंडल की नहीं। प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों को शुभोदय के विचार नहीं माना जाएगा।



